ISSN 2349-6614

मई 2023

मूल्य 50 रु

# प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

## उदयपुर से कांग्रेस का चुनावी शंखनाद

कलक्टर टीसी मीणा को सार्वजनिक सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार

## राजस्थान भाजपा में फेरबदल

# प्री-इंजीनियर्ड बिल्डिंग निर्माता, लोटस हाई-टेक इंडस्ट्रीज़

Lotus
PRE-ENGINEERED BUILDING

## 16 वर्षों से लगातार आपकी सेवा में

लोटस हाई-टेक इंडस्ट्रीज़ सफलतापूर्वक 16 वर्ष पूर्ण कर 17वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। किसी भी संस्थान की सफलता उससे जुड़े लोगों के सहयोग और सद्भावना के बगैर संभव नहीं होती है। पिछले 16 वर्षों की यात्रा के दौरान लोटस हाई-टेक इंडस्ट्रीज़ अपने सभी ग्राहकों के विश्वास, टीम की कड़ी मेहनत और सभी के सहयोग की बदौलत नित नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए आया है।

### मजबूती और उच्च गुणवत्ता वाली हाई टेक प्री-इन्जीनियर्ड बिल्डिंग

लोटस हाई-टेक में मुनाफे से ज्यादा गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाता है। हमारी एक्सपर्ट टीम द्वारा ब्रांडेड मटेरिअल और लेटेस्ट टेक्नोलॉजी के उपयोग से बेहतरीन गुणवत्ता वाली हाई टेक पीईबी का निर्माण किया जाता है। लोटस हाई-टेक आईएसओ 9001-2015 सर्टिफाइड है।

### नींव से निर्माण तक टर्नकी सॉल्यूशंस

लोटस हाई-टेक अपने ग्राहकों को टर्नकी सोल्यूशंस देती है जिसमें नींव से लेकर प्रोडक्शन चालू होने तक समस्त कार्य लोटस हाई-टेक द्वारा किए जाते हैं जिससे उद्यमी बिना किसी परेशानी के इंडस्ट्री स्थापित कर सके।



राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत के हाथों सम्मानित

### "सम्मान व उपलब्धियां"

उत्तरी भारत एमएसएमई 'एंत्रेप्रेन्योरशिप एप्रिशिएशन अवॉर्ड 2011'
शख्सियतें – दी प्राईड आफ मेवाड़ - 2015'
द टाईम्स आफ इंडिया द्वारा 'टाईम्स एंत्रेप्रेनेअर अवार्ड - 2016'
'डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राष्टीय पुरस्कार - 2020'
'प्राइड ऑफ राजस्थान अवार्ड' 2022
इंडियन आईकॉन अवार्ड फॉर प्री इंजीनियर्ड बिल्डिंग मैन्युफैक्चरर्स ऑफ द इयर - 2022'

लोटस हाई-टेक ग्रुप को इंजीनियरिंग क्षेत्र में पचास वर्षों का अनुभव हासिल हैं। मजबूत, सुंदर और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रीफेब बिल्डिंग्स कम लागत पर निर्मित करने के उद्देश्य से संस्थापक, युवा उद्यमी प्रवीण सुथार ने 16 वर्ष पूर्व लोटस हाई-टेक इंडस्ट्रीज़ की स्थापना की थी।
अब तक लोटस हाई-टेक देश-विदेश में शत प्रतिशत ग्राहक संतुष्टी के साथ प्री इंजीनियर्ड बिल्डिंग, प्रीफेब हाऊस, और टर्नकी साल्यूशंस के अनेकों प्रोजेक्ट पूरे कर चुकी है और कई प्रोजेक्टस निर्माणाधीन हैं। लोटस हाईटेक के अमूल्य ग्राहकों की लंबी सूची है उनमें से कुछ प्रमुख हैं।

Schlumberger · RAJENDRA TOYOTA · TATA MOTORS · SAINT-GOBAIN · one · Ashirwad · Jangid · KS · MEWAR MICRONS · MURARKA · SAURIKA MINERALS

### लोटस हाई टेक इंडस्ट्रीज की नई पेशकश
### 'लोटस स्टार' प्रीमियम प्री इंजीनियर्ड बिल्डिंग सिस्टम

लोटस हाई-टेक इंडस्ट्रीज़ ने उच्च गुणवत्तायुक्त प्री इंजीनियर्ड बिल्डिंग से बाजार में अपनी पहचान बनाई है। सोलवीं स्थापना दिवस पर अब कंपनी ने प्रीमियम प्री इंजीनियर्ड बिल्डिंग सीस्टम 'लोटस स्टार' लांच की है। ग्राहक उच्च गुणवत्ता और मजबूती के साथ आकर्षक और स्मार्ट बिल्डिंग चाहते हैं, लोटस स्टार ऐसे ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए लांच किया गया है जिसमें मजबूती और व्यावहारिकता के साथ पीईबी के इंटीरियर व एक्सटीरियर सौंदर्य और हाई टेक स्मार्ट फीचर्स भी शामिल किये गए हैं।

हाल ही में राज्य सभा सांसद श्री राम चंद्र जी जांगड़ा ने लोटस हाई-टेक इंडस्ट्रीज़ में विजिट की और प्रीमियम प्री इंजीनियर्ड बिल्डिंग सिस्टम 'लोटस स्टार'के लोगो का विमोचन किया।

## LOTUS HI-TECH INDUSTRIES

(ISO 9001:2015 Certified)
Address: F-34 A, Road No. 5, M.I.A. Madri, Udaipur (Raj) 313003
E-mail: lotusremson@gmail.com, Website: www.lotushitech.com

मई 2023 वर्षः 21, अंकः 01

# प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

## अंदर के पृष्ठों पर...


**उपलब्धि**

उपग्रह प्रक्षेपण में एक और कामयाब सफर
पेज 10

**तीर्थाटन**

मन की शांति के चार धाम
पेज 22

**आरोग्य**
पंचकर्म से कायाकल्प
पेज 16

**चिंतन**

सावधान, आगे खतरनाक मोड़ है
पेज 32

**पर्यटन**

ऊटीः जहां प्रकृति खूब खिलखिलाती है
पेज 34


प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

# Technology Services

ARCGATE

The convergence of Big Data, Cloud, Mobile and Artificial Intelligence (AI) is transforming enterprises, industries, and the world. And it is just the start.

The products that we have helped build over the years are probably in your pocket.

Dictionary.com is the top reference app in the world
Moneycontrol.com is the top financial app in India
Firstpost iPad app is a Webby Award winner News app

We leverage technology to create solutions that make a true impact.
We build a range of applications leveraging the full benefits of modern architectures, continuous delivery practices and cloud-enabled platforms.

We are an experienced development partner that you can rely on to deliver cost-effective full-cycle custom software development services.

G1-11, I.T.Park, M.I.A. (Extn.)
Udaipur – 313003 Rajasthan, India
Contact : +91 77420 92381, +91 77420 92382Rajasthan

# दक्षिण द्वार से भविष्य की तलाश

**कर्नाटक** विधानसभा के चुनाव ऐसे समय में हो रहे हैं, जब देश की सियासत एक चौराहे पर खड़ी दिख रही है। आम चुनाव (2024) से पहले यह कौनसी करवट लेगी, किस दिशा में मुड़ेगी और इसका स्वरूप क्या होगा, इसे लेकर कयास लगाए जा रहे हैं। कर्नाटक दक्षिण भारत का इकलौता राज्य है, जहां भाजपा अपने दम पर सत्ता में है। वहीं कांग्रेस के लिए यह उन राज्यों में शुमार है, जहां संगठन मज़बूत है और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का गृह राज्य भी है।

कर्नाटक में चुनाव की रणभेरी जोर-शोर से बज रही है। यहां एक ही चरण में 10 मई को मतदान होंगे और 13 मई को नतीजे आ जाएंगे। यह वही राज्य है, जहां भाजपा ने कांग्रेस तथा जेडी (एस)को सत्ता से बेदखल कर अपनी सरकार बनाई थी। तब यहां सत्ता पर कब्जे के लिए तीन सप्ताह तक राजनीतिक नाटक चला था। राजभवन से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक तर्क और दावे भी खूब चले थे। कई मायनों में यहां इस बार का चुनाव राजनीतिक दलों के लिए खास होने जा रहा है। भाजपा के लिए खास इसलिए है क्योंकि दक्षिण के एकमात्र इसी राज्य में वह अपना कमल खिला पाई है। कांग्रेस के लिए महत्वपूर्ण इसलिए क्योंकि पार्टी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे यहीं से हैं। उनके नेतृत्व में ही पार्टी ने चार महीने पहले (पौने चार साल बाद) किसी राज्य (हिमाचल) में सरकार बनाई है। कांग्रेस जीती तो खरगे के कद के साथ कांग्रेस की खोई उम्मीदें को भी पंख लगेंगे।

देखना यह भी दिलचस्प होगा कि राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता रद्द होने का यहां के चुनावों पर कितना असर पड़ता है। प्रदेश के तीनों प्रमुख दल भाजपा, कांग्रेस व जनता दल अपनी सत्ता कायम करने में एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं।

धुंआधार प्रचार के लिए विमान, हेलिकॉप्टर और गाड़ियों का व्यापक उपयोग हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कर्नाटक में कई रैलियां हो चुकी हैं। कांग्रेस भी यहां बड़ी-बड़ी चुनावी यात्राएं निकाल रही हैं। कांग्रेस के नेता खोई हुई सत्ता प्राप्ति के लिए तो भाजपा सत्ता में वापसी के लिए विजय संकल्प यात्राएं निकाल रही हैं।

यूं तो कर्नाटक विधानसभा चुनाव अपने नियत समय पर हो रहा है, मगर जिस राष्ट्रीय राजनीतिक पृष्ठभूमि में यह होने जा रहा है, उसने इसके महत्व को अखिल भारतीय बना दिया है, क्योंकि यह अगले आम चुनाव के चुनावी वर्ष की पहली बड़ी सियासी परीक्षा है। कर्नाटक चुनाव के बाद वर्ष के अंत में राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना में भी विधानसभा चुनाव होने हैं। अतएव यह चुनाव भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस, दोनों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। कर्नाटक दक्षिण का एकमात्र बड़ा सूबा है, जहां न सिर्फ भाजपा की अपनी सरकार है, बल्कि दक्षिण भारत के उसके ज्यादातर लोकसभा सदस्य इसी प्रदेश से चुनकर आते रहे हैं, दूसरी तरफ यह उन मल्लिकार्जुन खड़गे का गृह प्रदेश भी है, जिन्हें कांग्रेस ने अपना नया अध्यक्ष बनाया है। इसलिए ये दोनों पार्टियां पूरे दमखम से मैदान में हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछले चार महीने में कर्नाटक के कई दौरे कर चुके हैं। राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' के बाद यह किसी भी दक्षिण भारतीय प्रदेश का पहला विधानसभा चुनाव है, तो इसमें इसके असर की भी परीक्षा होगी। राहुल भी यहां दौरा कर चुके हैं। जाहिर है, ये दोनों राष्ट्रीय पार्टियां चाहेंगी कि जनादेश उनके पक्ष में आए, ताकि इसके संदेश को लेकर वे लोकसभा चुनाव का माहौल अपने पक्ष में तैयार कर सकें। दक्षिणी राज्य अपेक्षाकृत समृद्ध रहे हैं और कर्नाटक तो उनमें एक अग्रणी राज्य है। मगर पिछले दिनों जिस तरह से वहां धार्मिक ध्रुवीकरण की कोशिशें तेज हुईं, उनसे इसकी प्रगतिशील छवि को नुकसान पहुंचा है। एकाधिक बड़े उद्यमियों तक को सियासी संगठनों व राज्य सरकार को आगाह करना पड़ा था कि प्रदेश की औद्योगिक प्रगति के लिए तनाव की स्थिति न बनने दी जाए। महाराष्ट्र के साथ सीमा विवाद तो इस हद तक चला गया था कि दोनों जगह भाजपा की सरकार होने के बावजूद दोनों विधानसभाओं ने एक-दूसरे के खिलाफ प्रस्ताव तक पारित कर डाले थे। बहरहाल, कांग्रेस जहां भ्रष्टाचार और महंगाई को अपना मुख्य चुनावी मुद्दा बना रही है, तो भारतीय जनता पार्टी विकास और आरक्षण के अलावा डबल इंजन के लाभ के साथ मैदान में है। भाजपा और कांग्रेस की आर-पार की इस लड़ाई में जनता दल (सेकुलर) क्या रणनीति अपनाती है, यह भी देखने वाली बात है। पिछली बार खंडित जनादेश ने इस प्रदेश को एक लंबे समय तक राजनीतिक अस्थिरता का शिकार बनाए रखा था। ऐसे में, इस बार का चुनाव सिर्फ यहां के नेताओं और राजनीतिक दलों की ही परीक्षा नहीं है, बल्कि इसमें कर्नाटक के मतदाताओं का भी इम्तिहान होगा।

# भाजपा का बड़ा दांव जोशी को कमान

## राजेन्द्र राठौड़ राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष, पूनिया का भी पुनर्वास

**राजस्थान विधानसभा चुनाव में सिर्फ 7 माह बचे हैं। भाजपा ने एक बड़ा फैसला लेते हुए चित्तौड़गढ़ से सांसद सी.पी जोशी को प्रदेश भाजपा की कमान सौंप दी है। सतीश पूनिया को हटाकर भाजपा आला-कमान ने पिछले कुछ समय से पार्टी में पनप रही गुटबंदी को समाप्त करने और जातीय सन्तुलन बिठाने की कोशिश की है। साथ ही चेहरा बनने की कोशिश में संलग्न नेताओं को यह साफ बता दिया है कि वे किसी मुगालते में न रहें। होगा वही जो ऊपर से तय होगा। किसी के चाहने या न चाहने से पार्टी फैसला नहीं करती।**

*दुर्गाशंकर मेनारिया*

***हम केंद्र सरकार की योजनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए लाइन के अंत में बैठे कार्यकर्ता तक पहुंचेंगे। देश में पहली बार केंद्र सरकार ऐसा काम कर रही है, जिसपर देशवासी गर्व महसूस करते हैं।***

यह बात गत दिनों उदयपुर आए प्रदेश भाजपा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सी.पी. जोशी ने बातचीत में कही। उन्होंने कहा, अब मुझे विश्वास है कि 2023 के विधानसभा चुनाव में राजस्थान के कार्यकर्ता अकर्मण्य, भ्रष्ट और निरंकुश कांग्रेस सरकार को उखाड़ फेंकेंगे। मैं किसी गुट का नहीं हूँ, किसी गुट को जानता भी नहीं। आने वाले 6 महीनों तक हम कंधे से कंधा मिलाकर यह सुनिश्चित करेंगे कि कांग्रेस सरकार को राजस्थान से हमेशा के लिए बाहर कर दिया जाए। जिसके शासन में किसानों को आंसू बहाना पड़ता है। यहां जोशी का सुखाड़िया रंगमंच पर भाजपा शहर अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली व देहात अध्यक्ष चन्द्रगुप्त सिंह चौहान के नेतृत्व में अभिनंदन किया गया।

### एबीवीपी रहा प्रवेश द्वार

एबीवीपी से राजनीतिक करियर की शुरूआत करने वाले सीपी जोशी संघ के नजदीकी माने जाते हैं। पूनिया भी आरएसएस बैकग्राउंड से ही हैं, अब उनकी जगह उन्हीं जैसे सियासी बैकग्राउंड के नेता को राजस्थान में संगठन की जिम्मेदारी दी गई है। पूनिया (58) के मुकाबले जोशी (47) युवा भी हैं। पूनिया का विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष के रूप में पुनर्वास किया गया है। राजस्थान भाजपा में सीएम फेस की लड़ाई के बीच संगठन में इस बड़े बदलाव की चर्चाएं शुरू होने लगी हैं। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र सिंह राठौड़ बनाए गए हैं,जो पहले उपनेता थे। गुलाब चंद कटारिया के राज्यपाल बनाए जाने के बाद से यह नेता प्रतिपक्ष पद खाली था। जोशी चित्तौड़गढ़ से दो बार लोकसभा पहुंचे हैं। वह पहले 2014 में फिर 2019 में इस सीट से चुनाव जीते।

> मैं किसी गुट का नहीं, भाजपा का आम कार्यकर्ता हूं। यही बनकर काम करता रहूंगा। मेरे नेता पीएम नरेन्द्र मोदी हैं, वे ही मेरे प्रेरणा स्त्रोत भी हैं। सबको साथ लेकर आगामी विधानसभा और फिर लोकसभा चुनाव जीतना ही लक्ष्य रहेगा।
>
> **–सीपी जोशी**

> पार्टी के निर्णय का स्वागत करता हूं। भाजपा समय–समय पर नेतृत्व तैयार करती है, अवसर देकर आगे बढ़ाती है। मैंने सदन से सड़क तक अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाने की कोशिश की है। **– सतीश पूनिया**
>
> **पूर्व अध्यक्ष**

### मोदी का बुलावा

**अध्यक्ष** बनते ही पीएम नरेन्द्र मोदी ने जोशी को दिल्ली बुलाया। इससे उन्होंने यह संदेश देने की कोशिश की कि चुनाव की समीपता को देखते वे गुटबाजी को खत्म करने और अनुशासन कायम रखने में जो भी कदम उठाएंगे, उसे आलाकमान की हरी झण्डी ही मानें।

# बदलाव के पांच कारण

## सतीश पूनिया

- पार्टी को राजस्थान में जातीय संतुलन बैठाना था।
- पूनिया समर्थक लगातार उन्हें सीएम प्रोजेक्ट कर रहे थे, जो आलाकमान को ठीक नहीं लगा।
- संगठन को मजबूत करने के दावे तो खूब किए लेकिन कई प्रदर्शनों में उम्मीद के मुताबिक भीड़ नहीं जुट सकी।
- भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वसुंधरा राजे, संगठन महामंत्री चन्द्रशेखर, केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत सहित कई नेताओं के साथ नहीं बैठा पा रहे थे तालमेल।
- किरोड़ीलाल मीणा का मामला दिल्ली तक पहुंचा। इसमें भी कई नेताओं ने दिया था नेगेटिव फीडबैक।

## सी.पी. जोशी

- पार्टी को चार साल से अच्छे ब्राह्मण चेहरे की तलाश थी, यह सी.पी. जोशी के रूप में पूरी हुई।
- प्रदेश अध्यक्ष की दौड़ में सांसद राजेन्द्र गहलोत, सी.पी. जोशी के नाम सबसे आगे थे, युवा होने से जोशी के पक्ष में पार्टी का निर्णय हुआ।
- केन्द्र सरकार में राजस्थान से राजपूत, जाट, एससी वर्ग का प्रतिनिधित्व है, लेकिन ब्राह्मण समाज का कोई प्रतिनिधित्व नहीं था। जातिगत संतुलन साधने की योजना में राजेन्द्र गहलोत पर सी.पी. जोशी भारी पड़े।
- सी.पी. जोशी पर किसी गुट का ठप्पा नहीं है, वे सभी से संवाद रखते हैं।
- गुलाबचंद कटारिया को राज्यपाल बनाए जाने से मेवाड़ में नेता की तलाश हो रही थी, जोशी को आगे बढ़ा कटारिया की कमी पूरी करने की कोशिश हुई है।
- भाजपा आलाकमान ने भी तीन राज्यों दिल्ली, ओडिशा और बिहार में भी नए अध्यक्ष बनाए हैं। दिल्ली में वीरेन्द्र सचदेवा को प्रदेश की कमान दी गई है। बिहार में सम्राट चौधरी को अध्यक्ष बनाया गया है। वह संजय जायसवाल की जगह लेंगे। ओडिशा में पूर्व केंद्रीय मंत्री मनमोहन सामल को अध्यक्ष बनाया गया है। सीपी जोशी के कार्यभार संभालते ही सभी नेता अब एक जाजम पर नजर आने लगे हैं। पार्टी के लिए यह संतोषजनक और सकारात्मक संकेत है।

*Dharmesh Navlakha*
*Director*
*94141 66977*

*Sahil Navlakha*
*Director*
*96106 58614*

Solitaire Garden & Banquets

A Perfect Wedding Venue

★ Marriage Garden ★ Banquet Hall ★ Decoration & Lighting
★ Catering Service ★ Rooms

*Shobhagpura Bypass Road, Shyam Nagar, Pahada, Udaipur, Rajasthan 313001*
*Email.: solitairegnb@gmail.com*

#मॉडल_स्टेट_राजस्थान

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

# अब राजस्थान में स्वास्थ्य का अधिकार

(Right To Health)

"चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में 25 लाख रुपए तक का नि:शुल्क उपचार, नि:शुल्क दवा एवं जांच योजना, निरोगी राजस्थान अभियान, कोविड के बेहतरीन प्रबंधन सहित गांव-ढाणी तक चिकित्सा सुविधाओं को मजबूत कर राजस्थान स्वास्थ्य के क्षेत्र में मॉडल स्टेट बनकर उभरा है। अब हमने इन योजनाओं का लाभ प्रदेश की जनता को कानूनी गारंटी प्रदान करते हुए स्वास्थ्य का अधिकार के रूप में प्रदान किया है। यह एक प्रगतिशील कानून है जो संविधान के अनुच्छेद 47 और अनुच्छेद 21 के अनुरूप स्वास्थ्य के अधिकार की गारंटी देता है। मेरी अपेक्षा है कि देश के हर नागरिक को स्वास्थ्य का अधिकार मिले।"

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

## बेहतर स्वास्थ्य के लिए वर्तमान में संचालित योजनाएं

### मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना

**25 लाख**

रुपए का नि:शुल्क स्वास्थ्य बीमा
साथ में 10 लाख रुपए का दुर्घटना बीमा

### मुख्यमंत्री निःशुल्क निरोगी राजस्थान योजना

**समस्त इलाज नि:शुल्क**

सभी राजकीय चिकित्सा संस्थानों में इनडोर, आउटडोर,
समस्त प्रकार की जांचें, दवाई सहित

राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना (RGHS) के तहत राज्य के कार्मिकों एवं पेंशनर्स को कैशलेस चिकित्सा सुविधा।

## अब प्रदेशवासियों को मिली निःशुल्क स्वास्थ्य योजनाओं की कानूनी गारंटी स्वास्थ्य का अधिकार (RTH)

## स्वास्थ्य का अधिकार बिल के महत्वपूर्ण प्रावधान

- राजकीय एवं डेजिग्नेटेड निजी चिकित्सा संस्थानों में ओपीडी, आईपीडी, सलाह, दवाइयां, जांच, परिवहन, प्रक्रिया, आपातकालीन केयर निःशुल्क।
- डेजिग्नेटेड अस्पताल में आपातकालीन उपचार के बाद यदि मरीज अस्पताल को भुगतान नहीं करता है तो सरकार उसका पुनर्भरण करेगी।
- दवा प्राप्त करने या जांच करवाने के स्थान को चुनने का अधिकार।
- पुलिस रिपोर्ट प्राप्त नहीं होने पर भी इलाज।
- इलाज के बारे में पूरी जानकारी लेने का अधिकार।
- इलाज के बारे में किसी दूसरे डॉक्टर या अस्पताल से राय लेने का अधिकार।
- एक्ट में शिकायत निवारण तंत्र का भी प्रावधान।
- डेजिग्नेटेड अस्पतालों को समय पर भुगतान के लिए ऑटो अप्रूवल का प्रावधान।
- प्राधिकरण के निर्णय के विरूद्ध सिविल न्यायालय में जाने का अधिकार।

RTH में समस्त सरकारी चिकित्सा संस्थानों के साथ ही डेजिग्नेटेड निजी चिकित्सा संस्थान शामिल हैं।
डेजिग्नेटेड अस्पतालों का दायरा चरणबद्ध तरीके से बढ़ाया जाएगा।
RTH में शामिल डेजिग्नेटेड निजी अस्पतालों को अतिरिक्त सुविधाएं दिया जाना प्रस्तावित।

स्वास्थ्य के अधिकार के प्रभावी क्रियान्वयन में चिकित्साकर्मियों एवं चिकित्सकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए RTH में इनके सम्मान से जुड़े प्रावधान रखे गए हैं, साथ ही अस्पतालों, चिकित्सा कार्मिकों तथा नागरिकों के अधिकार, कर्तव्यों एवं दायित्वों का भी उल्लेख किया गया है। हम सबका दायित्व है कि चिकित्साकर्मियों का सम्मान करें।

राजस्थान चिकित्सा परिचर्या सेवाकर्मी और चिकित्सा परिचर्या सेवा संस्था (हिंसा व संपत्ति के नुकसान का निवारण) अधिनियम, 2008 और SOPs 29 मई 2022 के द्वारा चिकित्सकों को सुरक्षा।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

08 मई 2023
09 मई 2023
राजस्थान संवाद

# उपग्रह प्रक्षेपण में एक और कामयाब सफर

**आज अंतरिक्ष विज्ञान में भारत दुनिया की पांच बड़ी ताकतों में से एक है। उपब्धियों के पैमाने में देखें तो हमारा देश अमेरिका और रूस के बाद अंतरिक्ष विज्ञान में तीसरी बड़ी शक्ति है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने वनवेब के साथ एक समझौते की क्रियान्विती के क्रम में 36 उपग्रहों को पृथ्वी की निचली कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया। जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है।**

*निष्ठा शर्मा*

**भारतीय** अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 26 मार्च को बाहुबली कहे जाने वाले अपने सबसे भारी एलवीएम-3 रॉकेट के जरिए ब्रिटेन स्थित वनवेब समूह कंपनी के 36 उपग्रहों को उनकी निर्धारित कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित करके अपनी उपलब्धियों में एक और नई कड़ी जोड़ दी। भारत ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि अंतरिक्ष में उपग्रह के प्रक्षेपण के मामले में किसी भी विकसित देश से पीछे नहीं है। चेन्नई से करीब 135 किलोमीटर दूर सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र में दूसरे नंबर लांच पैड से एलवीएम-3 ने निर्धारित समय पर उड़ान भरी और तय समय में उपग्रहों को कक्षा में स्थापित कर यह साबित कर दिया कि इस मोर्चे पर वह दुनिया के विकसित देशों के मुकाबले बेहतर क्षमता हासिल करने जा रहा है ।ताजा कामयाबी की अहमियत इस रूप में है कि वनवेब समूह कंपनी और इसरो की वाणिज्यिक कक्षा में बहत्तर उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए एक करार हुआ है। जिसके तहत यह दूसरा प्रक्षेपण था। पहले प्रक्षेपण में भी छत्तीस उपग्रहों को प्रक्षेपित किया गया था। इसरो और वनवेब के बीच तालमेल का अपना महत्व है। इन कामयाब प्रक्षेपणों के महत्व को इस रूप में समझा जा सकता है कि वक्त के साथ जैसे-जैसे सरकार और प्रशासन के कामकाज में विस्तार आ रहा है, दूरदराज के इलाकों में पहुंच आसान हो रही है, विकास और उपलब्धियों का लाभ साधारण लोगों तक पहुंचाने की कोशिशें हो रही है, उसके आधार तत्व के रूप में समूचे तंत्र की प्रक्रिया में डिजिटल स्वरूप की भूमिका बढ़ रही है। वनवेब कंपनी के प्रक्षेपणों के जरिए भारत के उन क्षेत्रों में भी सुरक्षित संपर्क की सुविधा मुहैया कराई जा सकेगी, जहां फिलहाल पहुंच बनाना मुश्किल है।

साल 2014 में ही भारत ने जीएसएलवी मार्क-2 का सफल प्रक्षेपण कर लिया था और यह उपलब्धि इसलिए बड़ी थी, क्योंकि इसमें क्रायोजेनिक इंजन लगा था, जिस इंजन को देने से हमें, हमारे सबसे पुराने दोस्त रूस ने भी इनकार कर दिया था। जब तक भारत के पास यह तकनीक नहीं थी, तब तक हम अपने सैटेलाइट दूसरे देशों से लांच कराते थे। इस तकनीक के विकास के बाद आज भारत प्रक्षेपण तकनीक की एक बड़ी ताकत बन चुका है। इसी 10 फरवरी 2023 को भारत स्मॉल सेटेलाइट लांच व्हीकल (एसएसएलवीडी-2) का सफल प्रक्षेपण करके, प्रक्षेपण बाजार की अमरीका और रूस के साथ न सिर्फ तीसरी बड़ी ताकत के रूप में उभरा है, बल्कि दुनिया के अरबों डॉलर के लघु उपग्रह प्रक्षेपण बाजार में एक बड़े दावेदार के रूप में भी सामने आया है।

## क्या है एलवीएम-3

**एलवीएम-3** वास्तव में इसरो के रॉकेट वाहक वाहन जीएसएलवीएम के 3 का ही नया नाम है, जो कक्षा में सबसे वजनी उपग्रहों में स्थापित करने में पूरी तरह सक्षम है। अब तक इसका प्रदर्शन हर कसौटी पर खरा उतरा है। यही वजह है कि वनवेब या वैश्विक स्तर पर अंतरिक्ष में प्रयोग करने के मामले में इसरो को ही प्राथमिकता दी जाती है। वनवेब कंपनी के प्रक्षेपणों के जरिये भारत के न केवल औद्योगिक केन्द्रों बल्कि छोटे कस्बों, गांवों, नगर निगमों और स्कूल सहित उन क्षेत्रों में भी सुरक्षित संपर्क की सुविधा उपलब्ध कराई जा सकेगी।

With Best Compliments

Ajay Agarwal
98290 40088

# Hindustan

## Ceramic Distributors

UltraTech CEMENT THE ENGINEERS CHOICE
SOMANY Tiles & Sanitaryware
Kajaria Perfect Walls & Floors
Simpolo CERAMICS Stay ahead
JOHNSON Not just tiles, Lifestyles
EVEREST LIFEGUARD
Bell CERAMICS LIMITED

Outside Delhigate, Udaipur Ph. : 2414258, Mob. : 98290 90929
E-mail : hcd.udaipur@gmail.com

# धर्मक्रांति के सूत्रधार भगवान बुद्ध

**गौतम बुद्ध सन्यास ग्रहण करने से पूर्व कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ थे। शांति की खोज में 27 वर्ष की आयु में घर-परिवार, राजपाट छोड़कर निकल गए। भ्रमण करते हुए काशी के समीप सारनाथ पहुंचे, जहां उन्होंने तप-ध्यान किया। उसके बाद बोधगया में बोधि वृक्ष के तले ध्यान करते हुए ही उन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई।**

**बुद्ध पूर्णिमा विशेष**

*ललित गर्ग*

**महापुरुषों** की कीर्ति किसी एक युग तक सीमित नहीं रहती । उनका लोकहितकारी चिन्तन एवं कर्म कालजयी, सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वदैशिक होता है, और युग युगों तक समाज का मार्गदर्शन करता है। गौतम बुद्ध हमारे ऐसे ही एक प्रकाशस्तंभ हैं,बुद्ध पूर्णिमा को उनकी जयंती मनाई जाती है और उनका निर्वाण भी बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही हुआ था। यानी यही वह दिन था जब बुद्ध ने जन्म लिया, शरीर का त्याग किया था और मोक्ष प्राप्त किया। बुद्ध पूर्णिमा न केवल बौद्ध धर्म के अनुयायियों बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। बुद्ध को महत्वपूर्ण भारतीय आध्यात्मिक महामनीषी, सिद्ध सन्यासी, समाज-सुधारक एवं धर्मगुरु माना जाता है। उन्होंने आम जन के हृदय को छुआ और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव किया। उन्हें धर्मक्रांति के साथ-साथ विचारक्रांति का सूत्रधार भी कह सकते हैं। उनकी वाणी क्रांत व्यक्तित्व की द्योतक ही नहीं वरन धार्मिक, सामाजिक विकृतियों एवं अंधविश्वास पर तीव्र कटाक्ष कर परिवर्तन की प्रेरणा भी है, जिसने असंख्य मनुष्यों की जीवन दिशा को बदला। भगवान बुद्ध को भगवान विष्णु का 9वां अवतार भी माना जाता है. इस दृष्टि से हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिए भी उनका महत्व है। बुद्ध सन्यासी बनने से पहले कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ थे। शांति की खोज में वे 27 वर्ष की उम्र में घर परिवार, राजपाट आदि छोड़कर निकल गए। भ्रमण करते हुए सिद्धार्थ सारनाथ पहुंचे, जहां उन्होंने बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे कठोर तप किया। कठोर तपस्या के बाद सिद्धार्थ को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई और वह महान संन्यासी गौतम बुद्ध के नाम से विख्यात हुए और अपने ज्ञान से समूचे विश्व को ज्योतिर्मय किया। बुद्ध ने धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक चेतना को जगाया। जनता को धर्म के नाम पर हो रहे शोषण से बचाया। नारी के प्रति सम्मान भाव पैदा किया। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को जिस चैतन्य एवं प्रकाश के साथ जीया है, वह भारतीय ऋषि परम्परा के इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय है। स्वयं ने सत्य की ज्योति प्राप्त कर प्रेरक जीवन जीया और फिर जनता में बुराइयों के खिलाफ आवाज बुलन्द की। लोक जीवन को ऊंचा उठाने के उन्होंने जो हिमालयी प्रयत्न किए, वे अद्भुत और आश्चर्यजनक हैं। संन्यासी बनकर गौतम बुद्ध ने अपने आप को आत्मा और परमात्मा के निरर्थक विवादों में फसाने की अपेक्षा समाज कल्याण की ओर अधिक ध्यान दिया। उनके उपदेश मानव को दु:ख एवं पीड़ा से मुक्ति के माध्यम बने, साथ ही साथ सामाजिक एवं सांसारिक समस्याओं के समाधान के प्रेरक बने जो जीवन को सुन्दर बनाने एवं माननीय मूल्यों को लोकचित्त में संचरित करने में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। यही कारण है कि उनकी बात लोगों की समझ में सहज रूप से ही आने लगी। महात्मा बुद्ध ने मध्यम मार्ग अपनाते हुए अहिंसा युक्त दस शीलों का प्रचार किया तो लोगों ने उनकी बातों से स्वयं को सहज ही जुड़ा हुआ पाया। उनका मानना था कि मनुष्य यदि अपनी तृष्णाओं पर विजय प्राप्त कर ले तो वह निर्वाण प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार उन्होंने पुरोहितवाद पर करारा प्रहार किया और व्यक्ति के महत्व को प्रतिष्ठित किया। गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रवर्तन किया और अत्यन्त कुशलता से बौद्ध भिक्षुओं को संगठित कर उनमें लोकतांत्रिक ढंग से एकता का विकास किया। सम्राट अशोक ने दो वर्ष बाद इससे प्रभावित होकर बौद्ध मत को स्वीकार किया और युद्धों पर रोक लगा दी। इस प्रकार बौद्ध मत देश की सीमाए लांघ कर विश्व के कोने-कोने तक अपनी ज्योति फैलाने लगा। आज भी इस धर्म की मानवतावादी, बुद्धिवादी और जनवादी परिकल्पनाओं को नकारा नहीं जा सकता और इनके माध्यम से भेदभाव से भरी व्यवस्था पर जोरदार प्रहार किया जा सकता है। यही धर्म आज भी दु:खी, पीड़ित एवं अशान्त मानवता को शान्ति प्रदान कर रहा है। ऊंच-नीच भेदभाव, जातिवाद पर प्रहार करते हुए यह लोगों के मन में धार्मिक एकता का विकास कर रहा है। विश्व शान्ति एवं परस्पर भाईचारे का वातावरण निर्मित करके कला, साहित्य और संस्कृति के विकास के मार्ग को प्रशस्त करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। वास्तव में देखा जाए तो राज-शासन और धर्म-शासन दोनों का ही मुख्य उद्देश्य जनता को सन्मार्ग पर ले जाना है। परन्तु राज शासन के अधिनायक स्वयं मोहमाया ग्रस्त प्राणी होते हैं। अत: वे समाज सुधार के कार्य में पूर्णतया सफल नहीं हो पाते। भला जो जिसे बीज को अपने हृदयतल में से नहीं मिटा सकता, वह दूसरे के हृदय से उसे कैसे मिटा सकता है? राज-शासन की आधारशिला प्रेम, स्नेह एवं सद्भाव की भूमि पर नहीं रखी जाती है, वह रखी जाती है, प्राय: भय आतंक और दमन की नींव पर । यहीं कारण है कि राज-शासन प्रजा में न्याय नीति और शांति की रक्षा करता हुआ भी अधिक स्थायी व्यवस्था कायम नहीं कर सकता। जबकि धर्म शासन परस्पर प्रेम और सद्भाव पर कायम होता है, फलत: वह सत्य-पथ प्रदर्शन के द्वारा मूलत: समाज का हृदय परिवर्तन करता है और सब ओर से पापाचार को हटाकर स्थायी न्याय, नीति तथा शांति की स्थापना करता है।

हरीश साहू, डायरेक्टर
9309359728

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

जगदीश साहू, डायरेक्टर
9461539550

# जय जगदीश
## किराणा स्टोर

लोंगी मिर्च, तेजा मिर्च, फटकी मिर्च,
फाड़ा मिर्च, लाल मिर्च, हल्दी, धनिया,
बेसन, पिसी शक्कर व सभी प्रकार के
गरम मसाले, तेल-घी के
थोक व रिटेल विक्रेता

12, शिव मार्ग, तेलीवाड़ा, उदयपुर ( राज. )

C.P. Mandot, Director
Gajendra Mandot, Director

Ph.: 0294-2420629 (S)
2420470, 2417026 (R)
9413663922, 9413812280 (M)

# Madanlal Nandlal
(Nathdwara Wala)

All Type of Fancy Cloth Merchant

Shop: Maldas Street, Udaipur- 313001 (Raj.)
Resi.: 46/5, Ashok Nagar, Udaipur (Raj.)

# शिक्षा का लक्ष्य चरित्र का निर्माण

*गीता तिवारी*

**शिक्षा** का उद्देश्य वैयक्तिक जीवन में शुचिता, पवित्रता, सच्चरित्रता, समता, उदारता, सहकारिता उत्पन्न करना है । अपनी छोटी-

छोटी आदतें यदि परिष्कृत हैं तो उसका प्रभाव परिवार पड़ोस से प्रारम्भ होकर दूर तक फैलता है। समय की पाबन्दी, नियमितता, श्रमशीलता, स्वच्छता, वस्तुओं की व्यवस्था जैसी छोटी-छोटी आदतें व्यक्तित्व को निखारती,उभारती और चार चाँद लगाती हैं। व्यक्ति की दृष्टि आस्था और आंकाक्षाओं का स्तर निकृष्ट हो जाने से उसका चिन्तन विकृत हो जाता है। जिसका प्रभाव परिवार व समाज पर भी परिलक्षित होता है।

आलसी और उत्साही, कायर और वीर, दीन और समृद्ध, दुर्गुणी और सद्गुणी, तिरस्कृत और प्रतिष्ठित, पापी और पुण्यात्मा, अशिक्षित और विद्वान, तुच्छ और महान का आकाश - पाताल का जो अन्तर मनुष्य में देखा जाता है इसका प्रमुख कारण उसकी मानसिक स्थिति ही है । स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा दिमाग में भरी जाने वाली सूचनाओं की मात्रा नहीं है जो वहां सड़ती रहे और जीवन भर न पचे। हमें जीवन बनाने वाला, मानव बनाने वाला, चरित्र बनाने वाला विचारों का रेचन चाहिये । हमें वह शिक्षा चाहिए जिससे कि चरित्र बनता है, मन की शान्ति बढ़ती है, प्रतिभा का विस्तार होता है और आदमी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है । सभ्यता और संस्कृति का सम्बन्ध अटूट है लेकिन आज हम अपनी सभ्यता व संस्कृति से दूर हो गये हैं क्योंकि जीवन मूल्यों का पतन होता जा रहा है ।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम ने लोगों की स्वच्छन्द वृत्ति पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि विदेश में आप सिगरेट का टुकड़ा सड़क पर नहीं फेंक सकते। वहां किसी मार्ग विशेष पर कार चलाने का समय तय है, उसके बाद जुर्माना तकरीबन सौ रूपये भुगतान करते हैं। यदि निर्धारित समय से ज्यादा गाड़ी पार्किंग स्थल पर पार्क की है तो भुगतना पड़ता ही है लेकिन भारत में आप कुछ नहीं करते हैं, क्यों ?

**शिक्षा और चरित्र निर्माण को बाँट कर नहीं देखा जा सकता। यदि शिक्षा की निष्पत्ति चरित्र निर्माण या व्यक्तित्व निर्माण नहीं है तो वह सही नहीं है । उसमें कोई न कोई त्रुटि है । विद्यार्थी में बौद्धिक विकास के साथ उस त्रुटि को पूरा करना शिक्षा से जुडे लोगों का काम है। अनुशासन, सहिष्णुता, ईमानदारी दायित्वबोध, व्यापक दृष्टिकोण और व्यापक चिन्तन का विकास अवश्य होना चाहिए ।**

**-आचार्य महाप्रज्ञ**

वाशिंगटन में आप पचपन मील प्रति घंटा से उपर गाड़ी चलाने की हिमाकत नहीं कर सकते और पलट कर ट्रेफिक पुलिस से यह भी नहीं कह सकते कि जानता है मैं कौन हूँ या मैं फंला का दोस्त हूँ, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के समुद्री तटों पर खाली नारियल हवा में नहीं उछाल सकते, टोक्यो में सड़कों पर पान की पीक नहीं थूक सकते। सिंगापुर की रोड पर चार पहिया वाहन चलाने का समय तय है।

आप दूसरे देशों की व्यवस्था का आदर और पालन कर सकते हैं लेकिन अपने ही देश की व्यवस्था का नहीं। क्यों ? भारत की धरती पर कदम रखते ही आप सिगरेट का टुकड़ा जहां तहां फेंकते हैं। कागज का पुर्जा उछालते हैं। यदि आप पराये देश में प्रशंसनीय नागरिक हो सकते हैं तो आप अपने देश में ऐसा क्यों नहीं बन सकते ? अमीर लोग अपने डॉगी सड़कों पर घुमाने निकालते हैं और जहाँ- तहाँ गन्दगी कर आ जाते हैं।

परिवार मानव की प्रथम पाठशाला है । बालक परिवार से ही संस्कार अर्जित करता है मेजिनी के अनुसार बालक को प्रथम पाठ माँ और पिता से ही मिलता है । अत: परिजनों का पारिवारिक परिवेश बालक को सुसंस्कृत बनाने में महती भूमिका का निर्वहन करता है । परिवार में ही बालक में दया माया ममता स्नेह, उदारता, क्षमा, प्यार और सेवा के भाव अंकुरित होते हैं । अत: परिजनों का नैतिक चरित्र अनुकरणीय होना आवश्यक है। परिजन ही बालक के लिए नींव का पत्थर हैं, जिस पर बच्चों का भावी भवन खड़ा होकर स्थिर बनता है । माता-पिता के बाद बालक शिक्षालयों में गुरूजनों के सान्निध्य में सद्गुण अर्जित करता है । विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न विषयों में भाषा, गणित, सामाजिक ज्ञान विज्ञान और कला शिक्षा के माध्यम से बालकों में नैतिक गुणों का आविर्भाव होता है ।

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों में अभिरूचि और सद्वृत्तियों का विकास विशेष महत्व रखते हैं । पाठान्तर एवं पाठ्योपरान्त शिक्षण में सहज ही उद्देश्यनिष्ठ विषय वस्तु पर आधारित मानवीय मूल्यों का समावेश सम्भव है। मुंशी प्रेमचन्द जी की 'ईदगाह' कहानी में हामिद का चिमटा खरीदने की विचारणा, गुलेरी जी की 'उसने कहा था' कहानी में बोधा और लहनासिंह का

संवाद 'हार की जीत' कहानी में खडग सिंह और बाबा भारती की बातचीत, कविता पाठों में गुप्त जी की 'भारत माता' कविता से सुख बढ जाता है दु:ख घट जाता है। प्रेमचन्द जी की 'बूढ़ी काकी' 'पंच परमेश्वर' कहानियां बालकों में उदारता दया करूणा सेवा भावना परोपकार तथा त्याग और बलिदान की भावनाओं को प्रोत्साहित करती हैं। रामायण महाभारत तथा लोककथाओं और बोध कथाओं के पात्र बालक की मानवीय संवेदनाओं को उद्वलित करते हैं। अत: शिक्षक का दायित्व है कि ऐसे प्रसंगों का शिक्षण मूल्यों के अभिवर्द्धन की दिशा में सफलतापूर्वक उपयोग किया जाए ताकि ज्ञात अज्ञात में कथा प्रसंगों के पात्रों का चरित्र पर पूरा प्रभाव पड़ सके। शिक्षण संस्थाओं में सहगामी प्रवृतियों के माध्यम से भी बाल मन को पुष्ट व जागृत कर उसे सही दिशा प्रदान की जा सकती है। शैक्षिक भ्रमण बाल मेले स्काउटिंग, साहित्यिक, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन भी चरित्र निर्माण की दृष्टि से हितकर होते हैं। प्रार्थना सभा, साक्षात्कार आदि कार्यक्रमों को विशेष प्राथमिकता दी जानी चाहिए। शिक्षक राष्ट्रमन्दिर के कुशल शिल्पी हैं। विद्यार्थी अनगढ़ मिट्टी के समान हैं। विद्यालय उनको मजबूत ईंटों में ढालने वाली कार्यशाला है। शिक्षा वह विधा है, जिनमें इनको ढाला और राष्ट्रमन्दिर को गढ़ा जाता है। नैतिकता एवं मानवीय मूल्य इसके वे भाग हैं, जिनमें इन कच्ची ईंटों को मजबूती व सौन्दर्य प्राप्त होता है, अन्यथा उनके अभाव में गढाई की सुन्दरता के बाद भी कच्चापन अवश्यम्भावी है। लूट-खसोट, चोरी-डकैती, आतंक, उग्रवाद का बोलबाला है। मानवीय संवेदनाओं के अभाव में आज इंसान प्रकृति के प्रति भी क्रूर होता जा रहा है। फलस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं से आए दिन रूबरू होना पड़ता है। मानव भय, आतंक, पीड़ा और दरिद्रता के कगार पर पहुंच गया है। स्वस्थ मनुष्य में स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। अत: योगप्राणायाम को भी अनिवार्यत: शिक्षण में समाहित किया जाए। हमारे इतिहास पुरूष, महामानवों की जीवन शैली से बालकों को अवगत करवाना श्रेयस्कर रहता है। शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा अनुशासन, शारीरिक श्रम, सहकारिता तथा भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित किया जाए। संस्कार शिविरों तथा व्यक्तित्व विकास के आयोजन, प्रेरक पुरूषों के वक्तव्य, समूह भावना को विकसित करने वाले कार्यक्रम अधिकाधिक हों ताकि आज का बालक कल का संस्कारवान नागरिक बने और समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना हो सके।

## खण्डन

सर्वसाधारण को ज्ञात हो कि प्रत्यूष पत्रिका के मार्च 2023 के अंक में राजधानी इंजीनियरिंग सोल्यूशन्स का विज्ञापन प्रत्यूष प्रकाशक एवं कार्यालय की त्रुटि के कारण सहवन से प्रकाशित हो गया, जो नहीं होना था। अत: प्रत्यूष के मार्च 2023 के अंक में मैसर्स राजधानी इंजीनियरिंग सोल्यूशन्स के विज्ञापन को निरस्त किया जाता है। प्रत्येक पाठक उसे निरस्त समझें। - **प्रकाशक**

**प्रत्यूष पत्रिका**
**प्रकाशक एवं कार्यालय**
**उदयपुर ( राज. )**


***Kamlesh Hathi***
***Mob.: 9829084220***
***9462623355***

91.6 हॉलमार्क ज्वेलरी

Kohinoor
Jewellers
(EXCLUSIVE SHOP)

**Hallmark Licence No.: HM/C 8490038523/397**

*A Trusted Place of 91.6 Gold & Silver Jewelleries & Gem Stones.*

*Tel.: 0294-241715, 2522823 (S)*

**Email: kohinoorjewellersudr@gmail.com**

**108, Bhamashah Marg, Near Oswal Bhawan Udaipur - 313 001 (Raj.)**

# पंचकर्म से कायाकल्प

डॉ. दीपक आचार्य

**आयुर्वेद** चिकित्सा का विश्व में अपना अलग ही विलक्षण स्थान है। आयुर्वद एक प्राचीन सहज व सरल परंपरागत चिकित्सा प्रणाली है। इससे न केवल सामान्य, मौसमी और असाध्य रोगों का ही इलाज संभव है बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता में अभिवृद्धि, सेहत व स्वास्थ्य रक्षा के तमाम आयामों में यह लाभकारी है।

आयुर्वेदीय चिकित्सा विधान में पंचकर्म पद्धति प्राचीन काल से प्रचलित है जिसमें प्रकृति के सान्निध्य का लाभ लेते हुए रोगों से मुक्ति के साथ ही सम्पूर्ण शरीर का कायाकल्प हो जाता है तथा शारीरिक सौष्ठव में प्रभावी निखार आता है।

विश्वभर में आयुर्वेद एवं उसकी शाखाओं के प्रति लोगों की जिज्ञासा व सोच में सकारात्मक परिवर्तन आ रहे हैं। इसकी पंचकर्म पद्धति ने दुनिया भर के लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। पिछले दशक में देश में असंख्य पंचकर्म चिकित्सा केन्द्र खुले हैं। पंचकर्म चिकित्सा अद्भुत एवं बेजोड़ एवं सुकूनदायी है। यह दोषों को दूर कर शरीर का कायाकल्प कर देती है। यह दोषों को दबाती नहीं बल्कि शारीरिक शुद्धिकरण के माध्यम से स्वास्थ्य को कायम रखने में उपयोगी है।

इसमें प्यूरीफिकेशन (शुद्धिकरण) के पश्चात रिजुविनेशन के परिणाम अच्छे होते हैं। इसी कारण की इस पद्धति ने विश्व के चिकित्सा वैज्ञानिकों का ध्यान भी अपनी ओर आकर्षित किया है। एक ओर मनुष्य आधुनिकता के मजे ले रहा है तो दूसरी ओर इसकी कीमत भी चुका रहा है।

भोजन संबंधी प्रिज़रवेटिव्स, टॉक्सिन, कलरिंग, हाइब्रिड फूड़, फ्रोजन फूड़, फूड़ हैबिट्स में बदलाव, स्ट्रेस (तनाव) प्रदूषण आदि के कारण वेस्ट प्रोडक्ट हमारे शरीर में रोजाना इक्ट्ठा होते हैं, जिसके कारण अर्ली एजिंग (शीघ्र बुढ़ापा), डिसेबिलिटी (शारीरिक दौर्बल्य), लोस ऑफ इम्युनिटी (बीमारियों से लड़ने की क्षमता का अभाव) जैसी शारीरिक विषमताएं उत्पन्न हो रही हैं। इसके परिणामस्वरुप क्रोनिक फेटुगो, सिन्ड्रोम, मल्टीपल एक्लेरोसिस, इन्सोमेनिया, डिप्रेशन व अन्य कई क्रोनिक बीमारियां देखने में आ रही हैं। इन पर अधिकतर मेडिसिन्स बेअसर हो रही हैं और अपने साइड इफेक्ट दे रही हैं।

इन सारे हालातों में पंचकर्म लाभकारी एवं पूरी तरह निरापद है, क्योंकि यह शरीर के रोगजनित एवं रोगकारक अंगों को बिना दूषित किये, बिना नुकसान पहुँचाए बीमारी को ठीक करता है।

## प्रमुख पांच क्रियाएं

**भारतीय** चिकित्सा विज्ञान में पंचकर्म चिकित्सा पद्धति मूल रूप से पाँच प्रमुख क्रियाओं पर आधारित है, जिनके माध्यम से शरीर का सम्पूर्ण शुद्धिकरण होता है। इनमें वमन–(एनेसिस), नस्य(नेजल–मेडिकेशन), विरेचन(परगेशन), वस्ति (मेडिकेटेट एनिमा), रक्त मोक्षण(ब्लडलेटिंग) क्रियाओं का प्रयोग कर शरीर के दोषों को दूर किया जाता है।

## हमेशा निरोगी रखने की कला

आयुर्वेद का प्रमुख सिद्धान्त है -स्वस्थ व्यक्ति हमेशा स्वस्थ बना रहे। इसके लिए वह अपनी दिनचर्या, रात्रि चर्या एवं ऋतु चर्या को संतुलित रखे और आयुर्वेद के सिद्धान्तों का पूरी तरह परिपालन करता रहे तो यह कोई मुश्किल नहीं है। ऐसे में समय-समय पर स्वस्थ व्यक्ति द्वारा भी उपयुक्त तरीके से पंचकर्म विधि अपनाई जाए तो रोगोत्पत्ति की संभावना बिलकुल क्षीण हो जाती है।

इसके साथ ही पंचकर्म की विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से रोगों का निदान किया जा सकता है। जैसे अस्थमा, एलर्जी, श्वास रोग, खाँसी, कफ आदि दोष से संबंधी

बीमारियों में पूर्ण लाभ होता है। प्रत्येक ऋतु के अनुसार भी पंचकर्म की विधियां हैं जिनका ऋतु विशेष में प्रयोग करने पर आशातीत लाभ प्राप्त होता है।

मौजूदा बसन्त ऋतु में वमन क्रिया करने से रोगी को लाभ मिलता है। इसी प्रकार शरद ऋतु में होने वाली पित्त दोष से जुड़ी, रक्त विकार, त्वचा विकार, एसिडिटी, गैस संबंधी बीमारियों में विरेचन क्रिया कराने पर लाभ होता है। वर्षा ऋतु में होने वाली वात दोष संबंधी बीमारियों में सन्धिवात, आमवात, कोई भी शारीरिक शूल जैसी बीमारियों में बस्ति क्रिया करने से आराम मिलता है तथा इन दिनों में जोड़ों के दर्द के लिए बस्तिकर्म अत्यधिक लाभप्रद है।

बस्तिकर्म लेने से शरद ऋतु के आगमन पर जोड़ों के दर्द में शूल की तीव्रता में कमी आती है। इस समस्त पंचकर्म की प्रक्रिया के माध्यम से एक स्वस्थ व्यक्ति ऋतु के अनुसार अपने शरीर में इकट्ठे हो रहे कुपित दोषों को निकालकर स्वस्थ रहा जा सकता है। रोगोत्पादन के मूल कारणों को खत्म करने की यह सबसे सस्ती व सुलभ क्रिया है।

पंचकर्म की इन क्रियाओं को करने से व्याधि की पुन: उत्पत्ति नहीं होती। अस्थमा, एलर्जी, जोड़ों का दर्द, मोटापा, साइनस, साइटिका, तनाव, माइग्रेन, अनिद्रा आदि व्याधियों में लाभ होने के साथ-साथ जठराग्नि प्रदीप्त होती है, व्याधि के शमन के साथ ही उत्तम स्वास्थ्य बना रहता है। इससे इन्द्रियां, मन, बुद्धि अपने स्व कार्य बेहतर तरीके से करती हैं, जिससे वर्ण एवं बल का प्रसादन होता है, शरीर पुष्ट रहता है, वृद्धावस्था देर से आती है, सौन्दर्य में निखार आता है और व्यक्ति रोगरहित होकर दीर्घायु प्राप्त करता है।


Director
Vipin sharma

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Director
Mohit Panwar

shreenath®
Travellers Pvt. Ltd.

Head Office :- 9 Kan Nagar , Main Road , Near sub city center , Udaipur (Raj.)

Ph. :-77270-56655 , 77270-59955

Daily parcel service Available

Daily services :- Pune, Mumbai, Vapi, Valsad, Chikli, Navsari, Surat, Ankleshwar, Bharuch, Baroda, Ahmedabad Gandhinagar, Himmatnagar, Junagadh, Jetpur, virpur, Gondal, Rajkot, Ajmer, Jaipur, Jodhpur, Bikaner, Kota

Udaipur :- 3, yatri hotel Udaipole
Ph.:- 77270-59955 , 77270-49955

Nathdwara :- Near Hotel Shree vilas, N.H 8
Ph.:- 77270-28855 , 02953-231333

# जिन पर राष्ट्र को अभिमान

# महानायक वीर प्रताप

*डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'*

**मेवाड़ के जिन सूरमाओं ने देश को अपने अवदान से चकित-विस्मित किया, उनमें वीरवर महाराणा प्रताप का नाम शीर्ष पर है। न केवल वीरता और मूल्यनिष्ठ संघर्ष बल्कि भारतीय युद्ध नीति व विदेश नीति के आधार को प्रस्तुत या प्रभावित करने वाले महानायक के रूप में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की देन को देखा जा सकता है।**

**प्रताप** की छवि सबके दिलो दिमाग में हल्दीघाटी और दीवेर के सूरमा के रूप में बसी है लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि वे अपने दौर में हरित और पर्यावरण क्रांति के भी अग्रदूत थे। वे देश के विभिन्न हिस्सों के उन शासकों के भी आश्रयदाता के रूप में रहे जो एक विदेशी वंश के सामने हरगिज़ हथियार नहीं डालना चाहते थे। प्रताप उन सभी ताकतों को अपने साथ लेकर शंहशाही ताकत से भिड़ जाना चाहते थे। उसे उखाड़ फेंकना चाहते थे सिर्फ इसलिए कि भारत को अपनी ही भूमि का नेतृत्व मिल सके। उस समय ग्वालियर, गुजरात, बागड़, बूंदी आदि रियासतों ने ऐसी उम्मीद कतई नहीं छोड़ी थी कि भारत एक बार फिर केन्द्रीय ताकत बने, महाराणा सांगा के बाद सबको मेवाड़ से बहुत आशाएँ थीं और इसलिए मेवाड़ को नेतृत्व देने में न केवल राजपूत, वरन् हकीम खां सूर जैसे अफगानी लड़ाके ने भी प्रताप के पक्ष में खड़े होने का साहस किया। जो स्थानीय शासक प्रताप के पक्ष में नहीं आया, स्वयं प्रताप ने उसे समझाने और पराजित कर अपनी ओर से खड़ा करने का सबक भी दिया। प्रताप की कुछ लड़ाइयां इसी तरह की हैं। तत्कालीन कुछ रियासतों ने प्रताप को बेटी देकर उनके राष्ट्रीय नेतृत्व को संबल देने का प्रयास भी किया। उस काल में प्रताप के प्रति ऐसा विश्वास अन्यत्र दिखाई नहीं देता। चावंड 1582 ई. से लेकर महाराणा प्रताप ही नहीं, अमरसिंह के काल तक मेवाड़ की राजधानी रहा। इसको राजधानी के रूप में विकसित करने का सबसे बड़ा कारण यही था कि जावर जैसे खदान बहुल और राजस्व देने वाले क्षेत्र पर मेवाड़ का एकाधिकार बने रहना। फिर लोह उत्पादक नठारापाल जैसी खानें भी इधर थीं। जावर के व्यापारियों का गुजरात आदि

से बहुत- व्यापार था। वे जावरिया कहे जाते थे। चावंड में सुरक्षा की दृष्टि से महल बना किन्तु असुरक्षा की स्थिति में पहाड़ियों पर भी किले बनवाए गए। टीकम बावजी, उदयपुर की पहाड़ियां प्रताप की बहुत स्मृतियां अपने में समेटे हुए है। चावंड में ही प्रताप ने 19 जनवरी, 1597 ई. को अंतिम सांस ली और यहां बहने वाली बांडोली नदी के तट पर ही उनका अंतिम संस्कार हुआ। हालांकि चावंड को छप्पन क्षेत्र का केन्द्र रहने का सौभाग्य मिला किन्तु यह बड़ा सच है कि यहीं से मेवाड़ शैली के चित्रों का प्रचलन भी हुआ। प्रताप के जीवन की यह सबसे बड़ी देन है कि मध्यकाल में शांति के दौर में उन्होंने कला को प्रश्रय दिया और महाराणा कुंभा ने अपने जिस संगीतराज ग्रंथ में राग-रागिनियों का वर्णन किया, उन पर आधारित पदावलियों का प्रताप ने सचित्र लेखन, आरेखन आरंभ करवाया। गोपीकृष्ण कानोड़िया के संग्रह में रागमाला के जो चित्र मिले हैं, वे निसारदी के बनाए हुए हैं। निसारदी मुस्लिम चित्रकार था। तलवार के धनी हकीम खां सूर के बाद, निसारदी प्रताप का आश्रय पाने वाला तुलिकाकर्मी था। यह बहुत कम को ही ज्ञात होगा कि रागमाला नामक रचना तानसेन की थी और वह अकबर के दरबार में लिखी गई। तानसेन ग्वालियर का था और चूंकि ग्वालियर के शासक तंवर रामशाह प्रताप के बहुत निकट रहे, लिहाजा प्रताप पर कहीं कोई प्रभाव तानसेन का रहा हो। इस बारे में शोध संभावनाएं हैं। यहीं रहते हुए प्रताप ने 'विश्ववल्लभ' जैसी कालजयी कृति के अनुसंधानों, प्रयोगों को अंतिम रूप देते हुए पर्यावरण रक्षा के लिए उद्यानों, वाटिकाओं के विकास का मार्ग प्रशस्त करते हुए जंगल के दहाने पर शांति के सुमन खिलाने का प्रयास किया। मेवाड़ में इसी काल से सर्वाधिक वाटिकाओं और जलस्रोतों का विकास कार्य आरंभ होता है और कम से कम खर्च में अधिकाधिक जल संसाधन खड़े करने का विचार जागा भूगोल, विज्ञान, परिस्थितिकीय अध्ययन और नवीनीकृत कृषि की दिशा में यह एक नए युग का सूत्रपात कहा जा सकता है। मेवाड़ से ही इसका आगाज हुआ और जिसने कुछ वक्त बाद मुगल राजकुमार, दारा शिकोह को नुस्खा दर फन्नी फलाहत जैसी कृति लिखने को प्रेरित किया। जयपुर में वाटिका विनोद का काव्यानुवाद हुआ। राज्याश्रय में ज्योतिष को प्रश्रय प्रताप के व्यक्तित्व की खास देन है। प्रताप के नाम पर मेवाड़ में तलवारों का नामकरण भी हुआ।

दिनेश गुप्ता
डायरेक्टर
94142 39513

मनीष गुप्ता
डायरेक्टर
98870 08943

मोहित गुप्ता
डायरेक्टर
98871 84032

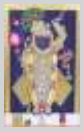

# श्री जी कलेक्शन

**जेन्ट्स, लेडिज एवं बच्चों के रेडिमेड कपड़ों के विक्रेता**

धानमण्डी चौक, घण्टाघर के सामने,
उदयपुर – 313 001 (राज.)

*Himmat Jain*
*Director*
*9829042297*

*Ravish Jain*
*Director*
*9829273337*

# Navkar

*A House of Designer Sarees, Lehanga - Chunni*

**134, Dhan Mandi, Teej Ka Chowk,**
**Udaipur - 313 001 (Raj.)**
**Ph.: +91-294-2422975, 2524319**
**GSTIN: 08ABMPJ8551G1ZC**

*with best compliments*

**Ramesh C. Sharma**
B.E. (HONS:) ELECT. MIE, FIV, FIIISLA
Chartered Electrical Safety Engineer

# TECHNOMIC ENGINEERS

**SURVEYOR & LOSS ASSESSORS**

*Approved Valuer*
*Chartered Engineer (India)*
*Insurance Surveyor &*
*Loss Adjuster*

85-K, Bhupalpura Udaipur - 313 001 (Raj) Ph. : (0294) 2413285, 2427165 (R) 2414101 (O)
Mobile : 9414156285, 9829556285, E-mail: technomic@gmail.com

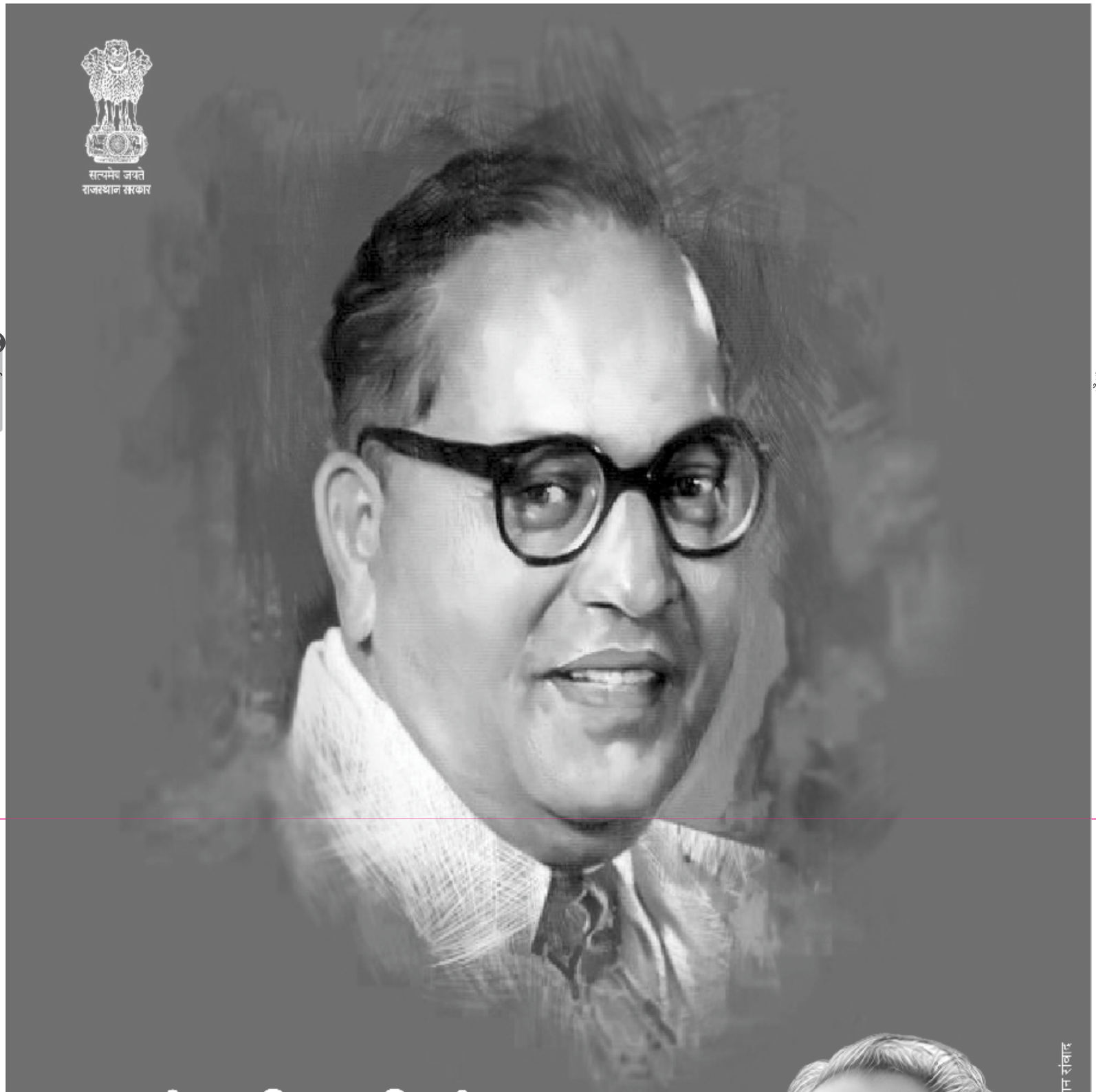

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

# भारतीय संविधान निर्माता और भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी की जयंती पर उन्हें कोटिशः नमन।

राजस्थान रांवाद

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान

# मन की शांति के चार धाम

**उत्तराखंड के चारों धाम केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमुनोत्री व गंगोत्री की जीवन में एक बार यात्रा हिन्दू समुदाय में बड़ा महत्व रखती है। यह चारों धाम मन की शांति के प्रमुख तीर्थ तो हैं ही पर्यटन के लिहाज से भी इनका महत्व कम नहीं है। पिछले माह के अन्तिम सप्ताह में इन धामों के कपाट खुलने के साथ ही देशभर से यहां प्रतिदिन दर्शनार्थियों का ज्वार उमड़ रहा है। यात्रा का समापन पहाड़ों पर भारी बर्फबारी के दौरान अक्टूबर में हो जाएगा। पिछली घटनाओं-दुर्घटनाओं को देखते हुए इस साल यात्रा में विशेष सावधानियां बरती जा रही है।**

*अमित शर्मा*

**उत्तराखंड** चार धाम यात्रा का महात्म्य तो सदियों से है और इसी का अनुभव पाने के लिए श्रद्धालु भी सदियों से इन धामों की यात्रा करते रहे हैं, पर पहले की यात्राएं दुर्गम पर्वतीय रास्तों के होते हुए भी इतनी असुरक्षित और जीवनघाती नहीं थीं। तब तीर्थ यात्रा का मकसद विशुद्ध धार्मिक और आध्यात्मिक था। लोग धैर्यपूर्वक यात्रा करते थे। कई दिन-माह इस यात्रा में लग जाते थे। पैदल ही पर्वतों को नापने के पुरस्कार स्वरूप तीर्थयात्रियों को अनेक प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों और छटाओं की अविस्मरणीय पूंजी भी नसीब होती थी। लेकिन धीरे-धीरे संख्या बढ़ने और मोटर वाहनों से तय की जाने वाली यह यात्रा दुर्गम पहाड़ी मार्गों के कारण जोखिम-भरी होती गई। इस संदर्भ में 10 वर्ष पूर्व 2013 हुई केदारनाथ आपदा को भी नहीं भूला जा सकता। हालांकि पिछले दो-तीन वर्षों से मार्गों का काफी सुधारीकरण हुआ है, साथ ही यात्री सुविधाओं में वृद्धि की गई है। अप्रेल के अन्तिम सप्ताह से उत्तराखंड चारधाम यात्रा आरंभ हो चुकी है। पिछले वर्ष जिस तरह से श्रद्धालु यात्री उमड़े थे और प्रारंभिक दौर में ही व्यवस्थाएं चरमरा गई थीं, उसके दृष्टिगत राज्य सरकार इस बार विशेष सावधानी बरत रही है। स्वास्थ्य विभाग ने भी यात्रियों की देखभाल के लिए त्रिस्तरीय व्यवस्था की है। पिछले साल केदारनाथ यात्रा के दौरान स्वास्थ्य कारणों से 280 तीर्थयात्रियों की मौत का आंकड़ा सामने आया था। पैदल यात्रियों के लिए केदारनाथ मार्ग को पूर्वापेक्षा सुगम बनाया गया है। इस मार्ग पर चलने वाले घोड़े-खच्चरों के लिए भी मार्ग ठीक किया गया है। जगह-जगह जरूरत पड़ने पर मार्ग दुरस्तीकरण दस्ते भी तैनात किए गए हैं। पिछले वर्ष खच्चर मार्ग पर यात्रियों की भीड़ व अव्यवस्था के चलते करीब 250 खच्चरों की मौत हुई थी। इस बार यात्रा में शामिल खच्चरों का स्वास्थ्य परीक्षण और बीमा किया जा रहा है। अस्वस्थ व कमजोर खच्चरों के मालिकों को अनुमति नहीं दी जा रही है।। जोशीमठ को लेकर विशेष रणनीति तैयार की गई है। यहां यात्रा के दौरान राहत आपदा नियंत्रण केन्द्र स्थायी रूप से कायम रहेगा। ऐसी मशीनें व उपकरण भी उपलब्ध रहेंगे ताकि सड़क अवरूद्ध होने पर यात्री दबाव न बढ़े और वाहनों को निकाला जा सके। वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की टीमें भी मौके पर रहेंगी ताकि मार्ग में दरार पड़ने या बढ़ने पर तुरन्त काम किया जा सके। त्रिस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं के तहत यात्रा मार्गों पर 108 एम्बुलेंस सेवा के साथ ही 'एडवांस लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस' व 'कार्डिक एम्बुलेंस सेवा' भी उपलब्ध रहेगी। आपात स्थिति में हवाई एम्बुलेंस सेवा के साथ ही जीवन रक्षक दवाएं पहुंचाने के लिए ड्रोन सेवा भी तत्पर रहेगी। जरूरत पड़ने पर मेडिकल, पैरामेडिकल व नर्सिंग स्टाफ की अतिरिक्त तैनाती भी यात्रा मार्गों पर सुनिश्चित करने के ऋषिकेश स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए गए हैं। बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब जाने के लिए जोशी मठ में एकल सड़क यात्रा की व्यवस्था भी की गई है ताकि जोशीमठ में बद्रीनाथ जाने वाले राजमार्ग पर गाड़ियों का दबाव अधिक न पड़ सके।

## केदारनाथ

**केदारनाथ मंदिर:** केदारनाथ मंदिर यहां का मुख्य दर्शनीय स्थल है। भक्तजनों के लिए इस मंदिर के कपाट 25 अप्रेल को खोल दिए गए हैं। इस मंदिर में शिवलिंग स्थापित है। केदारेश्वर व नन्दी के अतिरिक्त इस मंदिर में पार्वती, गणेश, कुन्ती व पाण्डवों की मूर्तियों के दर्शन किये जा सकते हैं जो कलात्मकता की दृष्टि से बेजोड़ हैं। ऐसा कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के बाद पाण्डव इस स्थान पर आये थे और उन्होंने यह मंदिर बनवाया था। बस, रेल अथवा निजी वाहनों से ऋषिकेश से सोनप्रयाग तक जाना पड़ता है। वहां से 19 किमी की चढ़ाई नहीं कर सकते, उनके लिए घोड़े-खच्चर की व्यवस्था है।

**गांधी सरोवर:** यह तालाब बहुत बड़ा है जो केदारनाथ से महज चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्राचीनकाल में इसे चोरावती तालाब के नाम से जाना जाता था परन्तु 1948 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अस्थियों के इस तालाब में विसर्जन के फलस्वरूप इस तालाब का नाम 'गांधी सरोवर' कर दिया गया। यह मंदाकिनी नदी का एक हिस्सा भी है।

### अन्य दर्शनीय स्थल

**पंचगंगा:** केदारनाथ मंदिर के बिलकुल पास ही पर्वतों से उतरकर चार जलधारायें, मधुगंगा, सरस्वती, स्वर्णद्वारी और क्षीरगंगा मंदाकिनी नदी से आकर मिलती है, जहां नयनाभिराम दृश्य पर्यटकों की आंखों को राहत पहुंचाता है, वहीं यह कवियों का प्रेरणालोक भी साबित होता है परन्तु इन जलधाराओं के मिलने से जो भयंकर शोर उत्पन्न होता है, वह दिल दहला देने वाला साबित होता है। इन पांच जलधाराओं के मिलने के कारण ही इस स्थान को पंचगंगा का नाम दिया गया है। यहां पर आकर्षक मंदिर भी है।

**वासुकी ताल:** यह एक झीलनुमा ताल है जो केदारनाथ से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर मनमोहक नज़ारों के बीच में होने के कारण स्वप्नलोक सा प्रतीत होता है।

**एक स्थान यह भी:** यहां से 26 किलोमीटर दूर एक रास्ता गुप्तकाशी चला जाता है जहां से हिमालय की चौखम्बा चोटी का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। यहां चन्द्र शेखर महादेव तथा अर्द्ध नारीश्वर के मंदिर में पूजा अर्चना की जा सकती है। गुप्तकाशी से एक सड़क

मदमहेश्वर तक जाती है तो दूसरी ऊंखीमठ, चोपता की तरफ।

## मनोरथ स्थल बदरीनाथ

बदरीनाथ एक मनोरम व मनोरथ स्थल है। हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र में समुद्रतल से लगभग 1322 मीटर की ऊंचाई पर लक्ष्मण गंगा और अलकनंदा के संगम स्थल के समीप इस पुण्यभूमि स्थित मंदिर के कपाट 27 अप्रेल को खोले गए। इस स्थान पर कभी बेर या बदरी की बेशुमार झाड़ियां थीं, इसलिए इसे बदरीवन भी कहा जाता था। व्यासमुनि का जन्म बदरीवन में हुआ। यहीं उनका आश्रम भी था। इसलिए वेदव्यास को बादरायण भी कहा जाता है। इसी आधार पर मुख्य मंदिर का नाम बदरीनाथ पड़ा। बदरीनाथ मंदिर के निकट ही गर्म पानी का तप्त कुंड है। एक ओर बर्फ की शीतलता तथा दूसरी ओर स्वच्छ जल की गर्म जलधारा की स्थिति देखकर कोई भी यात्री मंत्र मुग्ध हो सकता है। यहां से 5 कि.मी दूर उत्तर की ओर भारत की सीमा में अंतिम पर्वतीय ग्राम माणा है, जिसके कुछ ऊपर चलने पर वसुधारा जल प्रपात मिलता है। माणा गांव के सामने ही स्थित है-व्यासगुफा। ऐसी मान्यता है कि महर्षि वेदव्यास ने यहीं पर वेद की ऋचाओं और मंत्रों का संकलन कर उन्हें चार भागों में संग्रहित किया था। इस प्रकार चार वेद बने। यहां निकट ही भीम शिला भी है। कहते हैं जब पांडव इधर से जा रहे थे तो नदी पार करने के लिए भीम ने बीच में यह शिला रख दी थी। प्रचलित धारणा के अनुसार आदि शंकराचार्य ने भगवान बदरीनाथ की वर्तमान मूर्ति भी नारदकुंड से निकालकर स्थापित की थी।

**मुख्य मंदिर और पर्वत शिखर:** बदरीनाथ में नर और नारायण नाम के दो पर्वतशिखर दर्शनीय हैं। इनके बीच पठारी स्थल पर यहां का मुख्य मंदिर स्थित है। मंदिर की पृष्ठभूमि में ऊंची नीलकंठ की चोटी बर्फ से ढकी हुई दृष्टिगोचर होती है। बदरीनाथ विष्णु का धाम है। मंदिर अलकनंदा के दाहिने तट पर स्थित है। मंदिर की ऊंचाई लगभग 15 मीटर है जिसके ऊपर तीन स्वर्णकलश चमकते रहते हैं। मंदिर के मुख्य दो भाग हैं। द्वार के पास पहले भाग में गरूड़, हनुमान और श्रीलक्ष्मी की मूर्तियां स्थापित हैं तथा दूसरे भाग में श्री बदरीनारायण अर्थात विष्णु भगवान की काले पत्थर से निर्मित चतुर्भुजी प्रतिमा है, जिसके अगल-बगल से नर-नारायण, कुबेर, उद्धव और नारद की मूर्तियां हैं। यहीं मुख्य वेदी है, जिसकी पूजा से महापुण्य प्राप्त होता है और पुनर्जन्म के बंधनों से छुटकारा मिलता है। हिमालय पर्वत में अधिक ऊंचाई पर स्थित होने के कारण यह मंदिर शीतकाल में बर्फ से ढक जाता है और मंदिर के पंडे, पुजारी तथा सेवकगण सभी चार-पांच महीने के लिए जोशीमठ में निवास करते हैं। बदरीनाथ में पांच तीर्थ हैं- ऋषिगंगा, कूर्मधारा, प्रहलाद, तप्तकुंड और नारदकुंड।

**यमुनोत्तरी तीर्थ,** उत्तरकाशी जिले की राजगढी (बड़कोट) तहसील में ऋषिकेश से 251 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में तथा उत्तरकाशी से 131 किलोमीटर पश्चिम-उत्तर में 3185 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह तीर्थ यमुनोत्तरी हिमनद से 5 मील नीचे दो वेगवती जलधाराओं के मध्य एक कठोर शैल पर है। यहाँ पर प्रकृति का अद्भुत आश्चर्य तप्त जल धाराओं का चट्टान से भभकते हुए 'ओम् सदृश' ध्वनि के साथ नि:स्तरण है। तलहटी में दो शिलाओं के बीच जहां गरम जल का स्त्रोत है, वहीं पर एक संकरे स्थान में यमुनाजी का मंदिर है। वस्तुत: शीतोष्ण जल का मिलन स्थल ही यमुनोत्तरी है। (यमुनोत्तरी का मार्ग) हनुमान चट्टी (2400 मीटर) यमुनोत्तरी तीर्थ जाने का अंतिम मोटर अड्डा है। इसके बाद नारद चट्टी, फूल चट्टी से होकर यमुनोत्तरी तक पैदल मार्ग है। इन चट्टीयों में महत्वपूर्ण जानकी चट्टी है, क्योंकि अधिकतर यात्री रात्रि विश्राम का अच्छा प्रबंध होने से रात्रि विश्राम यहीं करते हैं। यमुनोत्तरी से कुछ पहले भैंरोघाटी भी स्थित है। जहां भैंरो का मंदिर है। अनेक पुराणों में यमुना तट पर हुए यज्ञों का तथा कूर्मपुराण (39/9-13) में यमुनोत्तरी महात्म्य का वर्णन है। केदारखण्ड (9/1-10) में यमुना के अवतरण का विशेष उल्लेख है। इसे सूर्यपुत्री, यम सहोदरा और गंगा-यमुना को वैमातृक बहनें कहा गया है। ब्रहमांड पुराण में यमुनोत्तरी को 'यमुना प्रभव' तीर्थ कहा गया है। ऋगवेद(7/8/19) में यमुना का उल्लेख है। महाभारत के अनुसार जब पाण्डव उत्तराखंड यात्रा में आए तो वे पहले यमुनोत्तरी, तब गंगोत्री फिर केदारनाथ-बद्रीनाथजी की ओर बढ़े थे। यमुनोत्तरी धार्मिक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यमुनोत्तरी पहुंचने पर यहां के मुख्य आकर्षण यहां के तप्तकुण्ड है। इनमें सबसे तप्त जलकुण्ड का स्त्रोत मंदिर से लगभग 20 फीट की दूरी पर है। इसका नाम सूर्यकुण्ड एवं तापक्रम लगभग 195 डिग्री फारनहाइट है, जोकि गढ़वाल के सभी तप्तकुण्ड में सबसे अधिक गरम है। इससे एक विशेष ध्वनि निकलती है, जिसे 'ओम् ध्वनि' कहा जाता है। इस स्त्रोत में थोड़ा गहरा स्थान है। जिसमें आलू व चावल पोटली में डालने पर पक जाते हैं। सूर्यकुण्ड के निकट दिव्यशिला है। जहां उष्ण जल नालों की सी ढलान लेकर निचले गौरीकुण्ड में जाता है। सूर्यकुण्ड का तप्तजल इसमें प्रसार पाकर कुछ ठण्डा हो जाय और यात्री स्नान कर सकें। गौरीकुण्ड के नीचे भी तप्तकुण्ड है। यमुनोत्तरी से 4 मील ऊपर एक दुर्गम पहाड़ी पर सप्तर्षि कुण्ड है। इस कुण्ड के किनारे सप्तऋषियों ने तप किया था। दुर्गम होने के कारण साधारण व्यक्ति यहां नहीं पहुंच सकता। यमुनोत्री दर्शन के लिए 8 किमी की चढ़ाई के लिए खच्चरों की व्यवस्था है।

**गंगोत्री मंदिर:** गंगोत्री के गंगाजी मंदिर के कपाट भी 22 अप्रेल को खुल चुके है। यह मंदिर समुद्र तल से 3042 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। भागीरथी की दाहिनी ओर का परिवेश अत्यंत आकर्षक एवं मनोहारी है। यह स्थान उत्तरकाशी से 100 किमी की दूरी पर स्थित है। गंगा मैया के मंदिर का निर्माण गोरखा कमांडर अमर सिंह थापा द्वारा 18वीं शताब्दी के शुरूआत में किया गया था, वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण जयपुर राजघराने द्वारा किया गया था। प्रत्येक वर्ष अप्रेल-मई से अक्टूबर के बीच पतित पावनी गंगा मैंया के दर्शन करने के लिए लाखों श्रद्धालु तीर्थयात्री यहां आते हैं। यमुनोत्री की ही तरह गंगोत्री का पतित पावन मंदिर भी अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर खुलता है और दीपावली के दिन मंदिर के कपाट बंद होते है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान श्री रामचंद्र के पूर्वज रघुकुल के चक्रवर्ती राजा भगीरथ ने यहां एक पवित्र शिलाखंड पर बैठकर भगवान शंकर की प्रचंड तपस्या की थी। इस पवित्र शिलाखंड के निकट ही 18वी शताब्दी में इस मंदिर का निर्माण किया गया। ऐसी मान्यता है कि देवी भागीरथी ने इसी स्थान पर धरती का स्पर्श किया। ऐसी भी मान्यता है कि पांडवों ने भी महाभारत के युद्ध में मारे गये अपने परिजनों की आत्मिक शांति के निमित्त इसी स्थान पर आकर एक महान देव यज्ञ का अनुष्ठान किया था। यह पवित्र एंव उत्कृष्ठ मंदिर सफेद ग्रेनाइट के चमकदार 20 फीट ऊंचे पत्थरों से निर्मित है। दर्शक मंदिर की भव्यता एवं शुचिता देखकर सम्मोहित हुए बिना नहीं रहते। शिवलिंग के रूप में नैसर्गिक चट्टान भागीरथी नदी में जलमग्न है। यह दृश्य अत्यधिक मनोहारी एवं आकर्षक है। इसके देखने से दैवी शक्ति की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार, भगवान शिव इस स्थान पर अपनी जटाओं को फैला कर बैठ गए और उन्होंने गंगा माता को अपनी घंघुराली जटाओ में लपेट दिया। शीतकाल के आरंभ में जब गंगा का स्तर काफी अधिक नीचे चला जाता है वह उस अवसर पर ही उक्त पवित्र शिवलिंग के दर्शन होते हैं।

**गोमुख:** गंगोत्री से 19 किलोमीटर दूर 3.892 मीटर की ऊंचाई पर स्थित गौमुख गंगोत्री ग्लेशियर का मुहाना तथा भागीरथी नदी का उद्गम स्थल है। कहते हैं कि यहां के बर्फीले पानी में स्नान करने से सभी पाप धुल जाते हैं। गंगोत्री से यहां तक की दूरी पैदल या फिर टट्टूओं पर सवार होकर पूरी की जाती है। चढ़ाई उतनी कठिन नहीं है तथा कई लोग उसी दिन वापस भी आ जाते हैं। गंगोत्री में कुली एवं टट्टू उपलब्ध होते हैं। 25 किलोमीटर लंबा, 4 किलोमीटर चौड़ा तथा लगभग 40 मीटर ऊंचा गौमुख अपने आप में एक परिपूर्ण माप है। इस गौमुख ग्लेशियर में भगीरथी एक छोटी गुफानुमा ढांचे से आती है। इस बड़ी बर्फानी नदी में पानी 5,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एक बेसिन में आता है जिसका मूल पश्चिमी ढलान पर से संतोपंथ समूह की चोटियों से है।

## गुरूद्वारा हेमकुंड साहिब

**उत्तराखंड** के चमोली जिले में ही स्थित सिखों के पवित्र धाम हेमकुंड साहिब के कपाट 20 मई को खुलेंगे। यह पवित्र स्थान 7 पहाड़ों के बीच में है। माना जाता है कि यह गुरूद्वारा दुनिया में सबसे ऊंचे स्थान पर है। यहां सिखों के दसवें गुरू, गुरू गोविन्द सिंह जी ने दस साल तक ध्यान किया था। बर्फ से ढके इस गुरूद्वारे पर लहराते निशान साहिब को देखकर श्रद्धालु अपनी सारी थकान और चिंताओं को भूल कर मत्था टेकते हुए जीवन को धन्य करते हैं।

# ठुमरी की रानी गिरिजा देवी

विवेक अग्रवाल

***संगीत साधना का विषय है। इसे केवल शौक के लिए सीख लेने और अभ्यास भर से कोई शीर्ष पर नहीं पहुंचता। कुछ अलग करने का जुनून जरूरी होता है। शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी ने संगीत शिखर पर अपनी जगह बनाई तो इसलिए कि उन्होंने अपना पूरा ही जीवन संगीत की साधना-आराधना में समर्पित कर दिया। अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्मान से विभूषित गिरिजा जी के 8 मई को जन्म दिवस पर प्रस्तुत हैं उनकी लम्बी संगीत यात्रा के गौरवशाली पड़ावों की जानकारी।***

जिस जमाने में गाना-बजाना शरीफ घरों की महिलाओं के लिए उचित नहीं माना जाता था, उस जमाने में गिरिजा देवी ने विद्रोह करके न केवल संगीत की साधना जारी रखी और गायन के सार्वजनिक प्रदर्शनों में हिस्सा लिया बल्कि उन्होंने अपनी एक अलग राह बनाई। वह राह थी ठुमरी की। ठुमरी उपशास्त्रीय कोटि में गिनी जाने वाली विधा है। गिरिजा देवी ने उसे गरिमा प्रदान की।

गिरिजा देवी सेनिया और बनारस घरानों की एक प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय गायिका थी। वे शास्त्रीय और उप शास्त्रीय संगीत का गायन करती थीं। ठुमरी गायन को परिष्कृत करने तथा इसे लोकप्रिय बनाने में इनका बहुत बड़ा योगदान है। उनका जन्म 8 मई 1929 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता हारमोनियम बजाया करते थे। गिरिजा देवी की संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता से ही मिली। बाद में उन्होंने गायक और सारंगी वादक सरजू प्रसाद मिश्र से पांच साल की उम्र में ख्याल और ठप्पा गायन की शिक्षा शुरू की। नौ वर्ष की आयु में फिल्म याद रहे में अभिनय भी किया और अपने गुरु श्रीचंद मिश्र के सानिध्य में संगीत की विभिन्न शैलियों की पढ़ाई जारी रखी। गिरिजा देवी ने गायन की सार्वजनिक शुरुआत ऑल इंडिया रेडियो, इलाहाबाद पर 1949 से की। 1946 में उनकी शादी हो गई, तब उनकी मां और दादी ने उनके गायन का काफी विरोध किया, क्योंकि तब माना जाता था कि उच्च वर्ग की महिलाओं को सार्वजनिक रूप से गायन का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। तब उन्होंने समारोहों में न गाने की सहमति दे दी। लेकिन 1951 में बिहार में उन्होंने अपना पहला सार्वजनिक संगीत कार्यक्रम दिया। वे श्रीचंद मिश्र के साथ 1960 के पूर्वार्द्ध तक अध्ययनरत रहीं। 1980 के दशक में कोलकाता में आईटीसी संगीत रिसर्च एकेडमी और 1990 के दशक में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संगीत संकाय में एक सदस्य के रूप में काम किया और संगीत विरासत को संरक्षित करने के लिए छात्रों को पढ़ाया। शास्त्रीय शैलियों-कजरी, चैती और होरी को भी सम्मान दिलाया। इन सबके साथ वे ख्याल, भारतीय लोक संगीत और टप्पा भी गाती रहीं। संगीत और संगीतकारों के 'न्यू ग्रोव' शब्दकोश में कहा गया है कि गिरिजा देवी अपनी गायन शैली में अर्द्धशास्त्रीय गायन, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ अपना शास्त्रीय प्रशिक्षण भी जोड़ती रहीं। गिरिजा देवी को 'ठुमरी की रानी' विशेषण अलंकार संगीत स्कूल की संस्थापक ममता भार्गव ने प्रदान किया था।

गिरिजा देवी को उनके शास्त्रीय संगीत में अतुलनीय योगदान के लिए विभिन्न पुरस्कारों, सम्मानों और अलंकरणों से विभूषित किया गया था। इसके अलावा उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 1977, संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप 2010, महासंगीत सम्मान पुरस्कार 2012, संगीत सम्मान पुरस्कार (डोवर लेन संगीत सम्मेलन), गीमा पुरस्कार 2012 (लाइफ टाइम अचीवमेंट) जैसे अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया गया था। अट्ठासी वर्ष की उम्र में 4 अक्टूबर 2017 को कोलकाता में उनका निधन हुआ।

**ऋषि परंपरा**

# लोक मंगलकारी देवर्षि नारद

**शास्त्रों के अनुसार देवर्षि नारद ब्रह्माजी के छठे मानस पुत्र हैं। श्रीमद्भगवद् गीता में स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने इनकी महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है-देवर्षिणां च नारदः अर्थात देवर्षियों में मैं नारद हूं।**

डॉ. रवीन्द्र नागर

**देवर्षि** नारद अपने पूर्व जन्म में गंधर्व थे। एक बार ब्रह्माजी की सभा में सभी देवता और गंधर्व भगवान नाम का संकीर्तन करने के लिए एकत्र हुए। वहां नारदजी को सभा में स्त्रियों के साथ विनोद करते देख ब्रह्माजी ने इन्हें दरिद्र होने का शाप दे दिया। उस शाप के प्रभाव से नारदजी का जन्म एक दरिद्र परिवार में हुआ। जन्म के समय ही इनके पिता की मृत्यु हो गई। इनकी माता दासी का काम करके इनका भरण-पोषण करने लगीं। एक दिन इनके गांव में कुछ महात्मा आए और चातुर्मास्य बिताने के लिए वहीं ठहर गए। नारदजी बचपन से ही सुशील थे। वे खेलकूद छोड़कर उन साधुओं के पास ही बैठे रहते और उनकी छोटी-से-छोटी सेवा भी बड़े मन से करते थे। जाते समय महात्माओं ने प्रसन्न उन्हें भगवान नाम का जप एवं भगवान के स्वरूप के ध्यान का उपदेश दिया। एक दिन सांप के काटने से इनकी मां की भी मृत्यु हो गई। उस समय इनकी आयु मात्र पांच वर्ष थी। माता के वियोग में वे भक्तिभाव से प्रेरित होकर भजन करने लगे। एक दिन जब नारदजी वन में बैठकर भगवान के स्वरूप का ध्यान कर रहे थे। अचानक उनके हृदय में भगवान प्रकट हुए और थोड़ी देर अपने दिव्य स्वरूप की झलक दिखकर अंतर्ध्यान हो गए। भगवान के पुनः दर्शन के लिए नारदजी व्याकुल रहने लगे। उसी समय आकाशवाणी हुई - हे पुत्र अगले जन्म में तुम मेरे पार्षद रूप में पुनः दर्शन प्राप्त करोगे। समय आने पर नारदजी का पंचभौतिक शरीर छूट गया। कल्प के अंत में वे ब्रह्माजी के मानस पुत्र नारद के रूप में अवतीर्ण हुए। भगवान के भक्तों में उन्हें सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। इनके द्वारा प्रणीत 'भक्ति सूत्र' में भक्ति की बहुत सुंदर व्याख्या है। हमेशा भक्तों के भले के लिए ब्रह्मांड में विचरने वाले नारदजी को समस्त लोकों में निर्बाध गति का वरदान प्राप्त है।

## गहलोत का भाजपा पर प्रहार

# चुनाव में ही याद आता है हिंदू और हिन्दुत्व

**उदयपुर** के गांधी मैदान में पिछले दिनों कांग्रेस के संभाग स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन में बड़ी संख्या में उपस्थिति और उत्साह को देखते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मानों नवम्बर में होने वाले विधान चुनाव का शंखनाद ही कर दिया। उन्होंने कहा कि आजादी के आन्दोलन में अंगुली पर चीरा भी पड़ने से दूर रहे लोग अब लोकतंत्र को बचाने का दम भर रहे हैं। आम चुनाव में जनता मोदी सरकार को उखाड़ फेंकेगी। मुख्यमंत्री ने कांग्रेस पर ओबीसी वर्ग के अपमान के आरोपों को लेकर जवाब दिया। उन्होंने कहा भाजपाई बोल रहे हैं कि राहुल गांधी ने ओबीसी का अपमान कर दिया। मैं ओबीसी से हूं और तीसरी बार मुख्यमंत्री बना हूं। जब-जब चुनाव आता है, तब-तब भाजपा को हिंदू और हिंदुत्व याद आता है। देश मोदी के झूठे वादों पर नहीं, पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की दूरदृष्टि के कारण आत्मनिर्भर खड़ा है। केन्द्र सरकार लोकतंत्र की धज्जियां उड़ा रही है। राहुल गांधी ने यही तो पूछा था कि जो 20 हजार करोड़ अदाणी के बैंक खाते में आए हैं, वह किसके हैं ? इस पर उनकी संसद सदस्यता खत्म करना लोकतंत्र की हत्या का जीवंत उदाहरण है। भाजपा हमारे घरों में छापे डाल रही है। एमपी में कांग्रेस की सरकार गिरा दी। राजस्थान में तो मैं था, इसलिए गिरने नहीं दी। ये भाजपाई एमपी-एमएलए को खरीदने वाले लोग हैं। लोग सरपंच पद नहीं छोड़ते, लेकिन सोनिया गांधी ने पीएम का पद छोड़कर मनमोहन सिंह को पीएम बना दिया था। अपना घर आनंद भवन तक देश को दे दिया। अब राहुल गांधी से बंगला खाली करा रहे हैं। देश में झूठ फैला रहे हैं कि राहुल विदेश में देश के खिलाफ बोल रहे हैं। राहुल गांधी जो यहां बोलते रहे, वही तो उन्होंने विदेश में भी बोला। कार्यकर्ता सम्मेलन को गुजरात प्रभारी रघु शर्मा, जल संसाधन मंत्री महेन्द्रजीत सिंह मालवीय, ऊर्जा मंत्री भंवर सिंह भाटी, जनजाति विकास मंत्री अर्जुन सिंह बामनिया, वरिष्ठ नेता डॉ. गिरिजा व्यास, सीडब्ल्यूसी सदस्य रघुवीर सिंह मीणा, विधायक प्रीति शक्तावत, दयाराम परमार, नगराज मीणा, लालसिंह झाला ने भी सम्बोधित किया।

**उदयपुर के प्रभारी मंत्री रामलाल जाट ने इस वृहद कार्यकर्ता सम्मेलन के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।**

### चोर को चोर ही कहेंगे: रंधावा

कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस की लड़ाई अब आपको लड़नी है। जो राजा अहंकारी है और व्यापारी हो, उसकी जनता भिखारी हो जाती है। प्रधानमंत्री अहंकार में आकर व्यापारियों को पाल रहे हैं और जनता को समाप्त कर रहे है, जो कांग्रेस होने नहीं देगी। चोर को चोर नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे। हमें दुश्मन से लड़ने वाला पीएम चाहिए, अहंकारी नहीं। चाहे हमें जेल जाना पड़े पर देश की अस्मिता के लिए आखिरी सांस तक लड़ेंगे।

### जलजला आना चाहिए: डोटासरा

**कांग्रेस** प्रदेशाध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने कहा कि देश उद्वेलित है। तानाशाह सरकार पर। लोकतंत्र को समाप्त करने का षडयंत्र रचा जा रहा है। भाजपा सरकार कायराना हरकत कर रही है। कांग्रेस सरकार ने विकास के ऐसे काम किए हैं जो आज तक किसी सरकार ने नहीं किए। 2023 के विधानसभा चुनाव में और 2024 के लोकसभा चुनाव में ऐसा जलजला आना चाहिए कि प्रदेश में कांग्रेस सरकार फिर बने और केन्द्र में भाजपा की तानाशाह सरकार उखड़ जाए।

*रिपोर्ट: उमेश शर्मा*

## महिला विश्व मुक्केबाजी चैम्पियनशिप-2023

# भारत की बेटियों का स्वर्णिम चौका

प्रिशा शर्मा

**भारतीय मुक्केबाजों ने नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्पोर्ट्स कॉम्पलैक्स में मार्च के अंतिम सप्ताह में संपन्न आईबीए विश्व महिला चैंपियनशिप में जिस तरह की धाक जमाई है, उससे देश में इस खेल को लेकर माहौल बदलने का संकेत मिलता है। भारतीय महिला मुक्केबाजी की पोस्टर गर्ल मानी जाने वाली निकहत जरीन की अगुवाई में भारत का चार स्वर्ण पदक जीतना काफी मायने रखता है। ऐसा नहीं कि भारत ने पहले कभी चार स्वर्ण पदक नहीं जीते, वह ऐसी सफलता साल 2006 में मेरीकॉम की अगुवाई में हासिल कर चुका है। मगर तब ओलंपिक में महिला मुक्केबाजी नहीं हुआ करती थी। साल 2012 के लंदन ओलंपिक में इसे शामिल किए जाने के बाद से प्रतिस्पर्द्धा बहुत बढ़ गई है और इस स्थिति में चीन जैसी ताकत को पीछे छोड़ चार स्वर्ण पदक जीतना भारतीय महिला मुक्केबाजों के दबदबे को दर्शाता है।**

**इस** चैंपियनशिप में 65 देशों की 324 मुक्केबाज अपना दमखम और कौशल दिखाने आई थीं। इन विश्वस्तरीय मुक्केबाजों में कई ओलंपिक और विश्व चैंपियनशिप की पदक विजेता थीं। फाइनल में चीन की भी चार मुक्केबाज पहुंची और तीन स्वर्ण, एक रजत और तीन कांस्य से तालिका में नंबर दो पर रहीं। तीसरे स्थान पर रही रूस की टीम को एक स्वर्ण, एक रजत और कांस्य पदक मिला। भारतीय महिला मुक्केबाजी के हाई परफॉर्मेंस डायरेक्टर बरनर्ड डन की छत्रछाया में निखरी टीम की 12 मुक्केबाजों ने दमखम, कौशल और मानसिक दृढ़ता की मिसाल पेश की। 2002 में एमसी मैरीकॉम ने पहली स्वर्णिम सफलता से जो राह दिखाई थी, उनके नक्शे कदम पर चलते हुए महिला मुक्केबाजों ने साबित कर दिया कि अब भारत मजबूत राष्ट्र के तौर पर खड़ा है। इस खेल में अब उसकी चुनौती को आसान नहीं लिया जा सकता। राष्ट्रमंडल खेलों की मौजूदा चैंपियन नीतू घंघास ने 48 किलो वर्ग में दो बार एशियाई चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता मंगोलियाई मुक्केबाज लुतसई अतलांतसेतसेग को अपनी गति और आक्रामकता से पस्त कर देश के लिए पहला स्वर्ण जीता। हरियाणा की इस मुक्केबाज ने इंस्तांबुल में हुई पिछली चैंपियनशिप के क्वार्टर फाइनल में हुई हार की निराशा को भी दूर किया। साथ ही वे विश्व चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाली छठी भारतीय मुक्केबाज बनीं। लाइट फ्लाइवेट (50 किलो) में निकहत जरीन ने लगातार दूसरी बार स्वर्ण पदक जीता। पिछली चैंपियनशिप में 52 किलो वर्ग की विजेता निकहत इस बार लाइट फ्लाइवेट में उतरी जिससे पेरिस ओलंपिक (2024) के लिए वे अपना दावा पेश कर सकें। उन्होंने अपने सुनहरे सफर में कुछ प्रतिष्ठित मुक्केबाजों को शिकस्त दी। फाइनल में उन्होंने वियतनाम की ती ताम नुएन को हराया। इससे पहले उन्होंने ओलंपिक कांस्य पदक विजेता कोलंबिया की वेलेंसिया को भी फतह किया। मिडिलवेट (75 किलो) में असम की मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन का खिताबी मुकाबला संघर्षपूर्ण रहा। जब भारतीय मुक्केबाज को विजयी घोषित किया गया तो प्रतिद्वंद्वी आस्ट्रेलियाई मुक्केबाज केटलिन पारकर निर्णायकों के फैसले से नाखुश नजर आई। वास्तव में जब मुकाबला नजदीकी रहता है तो हर मुक्केबाज अपनी जीत के प्रति आश्वस्त होता है। पर निर्णायकों के फैसले को चुनौती नहीं दी जा सकती। वैसे ऑस्ट्रेलियाई मुक्केबाज पारकर खूब लड़ी थीं। इसलिए निराश होना स्वाभाविक था। रिव्यू में भी साथ नहीं मिला। निर्णायक तीसरे राउंड में बेहतर प्रदर्शन से स्वीटी बूरा 81 किलो लाइट हैवीवेट श्रेणी में स्वर्ण पदक जीतने में सफल रहीं। उसने चीनी मुक्केबाज वांग ली ना को हराया। 11 साल के लंबे अंतराल के बाद बूरा ने स्वर्ण पदक का सपना साकार किया। 2012 में उन्होंने विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीता था। विश्व चैंपियनशिप विवादों से भी अछूती नहीं रही। 17 देशों ने बहिष्कार इसलिए कर दिया कि रूस और बेलारूस को इसमें भाग लेने की इजाजत दी गई। वेल्टरवेट (66 किलो) में स्वर्ण पदक मुकाबले से पहले अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजी महासंघ ने अल्जीरिया के इमेन खेलिफ को अपात्र ठहरा दिया। चिकित्सा कारणों से ऐसा किया गया। पिछली चैंपियनशिप की इमेन रजत पदक विजेता थीं।

### आठ भारतीयों के नाम विश्व खिताब

विश्व चैंपियनशिप के इतिहास में अभी तक कुल आठ भारतीय महिलाएं स्वर्ण पदक जीतने में सफल रही है

एमसी मैरीकॉम– 06 (2002, 2005, 2006, 2008, 2010, 2018)
सरिता देवी – 01 (2006)
जेनी लालरेमलियानी – 01 (2006)
लेखा केसी – 01 (2006)
निकहत जरीन – 01 (2022)
नीतू घंघास – 01 (2023)
स्वीटी बूरा– 01 (2023)





### बेटी का सपना संघर्षों में साकार किया

**लवलीना** बोरगोहेन का जन्म 2 अक्टूबर 1997 को असम के गोलाघाट जिले में हुआ। उनके माता–पिता का नाम टिकेन बोरगोहान और मामोनी बोरगोहान है। उनके पिता एक लघु स्तरीय व्यापारी हैं। बेटी की आकांक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें आर्थिक रूप से संघर्ष करना पड़ा। उस समय उनकी मासिक आय मात्र 1300 रुपए थी। उनकी बड़ी जुड़वां बहनें लीचा और लीमा ने भी राष्ट्रीय स्तर पर किक बॉक्सिंग में भाग लिया, किंतु उसे आगे जारी नहीं रख सकीं। बोरगोहेन ने भी अपना करियर एक किक बॉक्सर के तौर पर शुरू किया था, लेकिन बाद में मौका मिलने पर मुक्केबाजी में परिवर्तित कर लिया। भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा आयोजित ट्रायल में लवलीना ने भाग लिया। प्रसिद्ध कोच पदम बोरो ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उनका चयन किया। बाद में उन्हें मुख्य महिला कोच शिवसिंह से प्रशिक्षण मिला। 2022 के ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली लवलीना पहली असमिया खिलाड़ी हैं। इस उपलब्धि पर मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने उन्हें असम पुलिस (डीएसपी) में शामिल किया।

### पिता ने कार बेची, नौकरी छोड़ी

**हरियाणा** के भिवानी की रहने वाली नीतू घंघास के विश्व चैंपियन बनने के पीछे उनके पिता का बड़ा योगदान है। नीतू के पिता जय भगवान हरियाणा विधानसभा सभा में कर्मचारी थे। नीतू ने 12 साल की उम्र से मुक्केबाजी की ट्रेनिंग शुरू कर दी थी। नीतू की लगन देखकर पिता ने उन्हें भिवानी बॉक्सिंग क्लब में ट्रेनिंग के लिए भेजा। बेटी की ट्रेनिंग में कोई कमी नहीं आए, इसके लिए जय भगवान ने लोन लिया और अपनी कार तक बेच दी। यही नहीं उन्होंने बेटी का बॉक्सिंग में करियर बनाने के लिए अपनी नौकरी भी छोड़ दी थी।

### किसान की बेटी के लिए नहीं था आसान

**कबड्डी** खिलाड़ी से मुक्केबाजी की विश्व चैंपियन तक का सफर किसान की बेटी स्वीटी बूरा के लिए आसान नहीं था। उन्होंने अपने पिता की सलाह पर मुक्केबाजी की ओर रूख किया। वर्ष 2009 में 15 साल की उम्र में बूरा ने मुक्केबाजी प्रशिक्षण केंद्र जाना शुरू किया। हिसार के धिराय गांव के किसान महेन्द्रसिंह की बेटी स्वीटी को शुरू में काफी बाधाओं और रिश्तेदारों के विरोध को पार करना पड़ा। स्वीटी वर्ष 2014 की विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक विजेता थीं।

### विरासत में मिला खेल

**निकहत** का जन्म तेलंगाना के निजामाबाद में एक मध्यम वर्गीय परिवार में मोहम्मद जमील अहमद और परवीन सुल्ताना के घर हुआ। शुरुआती शिक्षा निजामाबाद के निर्मला हृदय गर्ल्स हाई स्कूल से हुई। इसके बाद हैदराबाद के एवी कॉलेज से स्नातक डिग्री ली। जरीन को खेल की प्रेरणा माता–पिता से ही मिली। दरअसल इनके पिता फुटबॉलर और क्रिकेटर रहे हैं जबकि मां कबड्डी की खिलाड़ी रही हैं। निकहत के चाचा शमशामुद्दीन बॉक्सिंग कोच हैं। ऐसे में निकहत ने उनसे बॉक्सिंग सीखना शुरू किया। हालांकि शुरुआत में इस खेल में लड़कियों के नहीं होने के कारण वे लड़कों के साथ ही प्रेक्टिस करती थीं, इनकी तीन बहनें हैं, जिसमें दो बड़ी बहनें फिजियोथेरेपिस्ट हैं जबकि छोटी बहन बैडमिंटन प्लेयर है।

## जज्बे से हारी उम्र, दंपती ने राष्ट्रीय बैडमिंटन में जीता पदक

**कहते** हैं अगर मन में कुछ करने का जज्बा हो तो उम्र भी बाधा नहीं बन सकती है। इसका उदाहरण है उदयपुर के वेटरन्स बैडमिंटन प्लेसर्य 76 साल के बीएस चावत और उनकी 75 साल की पत्नी माया चावत। पति-पत्नी की इस जोड़ी ने पिछले दिनों गोवा में ऑल इंडिया मास्टर्स बैडमिंटन के मिक्स डबल्स में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक हासिल किया। इसी के साथ ही वे इस साल साउथ कोरिया में होने वाली वर्ल्ड मास्टर्स बैडमिंटन के लिए भी क्वालीफाई हो गए। दोनों वेटरन्स प्लेयर्स यह उपलब्धि हासिल करने वाले प्रदेश व उदयपुर के पहले खिलाड़ी हैं। इस उम्र में भी सभी प्लेयर्स को यहीं संदेश देते हैं कि फिट रहने के लिए खेल जरूरी है। भारतीय खेल प्राधिकरण में देश की पहली महिला कोच रही माया चावत सेवानिवृत्ति के बाद पिछले छह सालों से वेटरन्स खेल रही है। उदयपुर में पिछले साल हुई ऑल इंडिया रैंकिंग टूर्नामेंट में खेलकर कांस्य पदक जीता। इस साल गोवा में महिला डबल्स में हरियाणा की उषा शर्मा के साथ सिल्वर पदक अपने नाम किया। बीएस चावत भी टेनिस कोच रह चुके हैं। उन्होंने अपनी पत्नी को देखकर ही बैडमिंटन खेलना शुरू किया था। उन्होंने नेशनल में पहली बार में ही पदक हासिल किया।

प्रत्यूष

### आरसीए व वेदांता के बीच जयपुर में एमओयू

# अनिल अग्रवाल के नाम पर अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम

**जयपुर** के समीप चौंप में बनने वाले दुनिया के तीसरे सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम के प्रथम चरण के लिए वेदांता की हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड ने 300 करोड़ देने का राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के साथ एमओयू किया है। इस स्टेडियम का नाम वेदांता के संस्थापक अनिल अग्रवाल के नाम पर होगा। एमओयू के दौरान दूसरे चरण के निर्माण के लिए भी वेदांता अधिकारियों ने 200 करोड़ रूपए और देने के लिए आरसीए को आश्वस्त किया है। इस स्टेडियम का सम्पूर्ण प्रबंधन आरसीए के पास ही होगा। जयपुर स्थित प्रत्यूष संवाददाता के अनुसार 30 मार्च को सवाई मानसिंह स्टेडियम स्थित आरसीए एकेडमी में आयोजित समारोह में राजस्थान क्रिकेट संघ के सचिव भवानी शंकर सामोता एवं हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए। समारोह में राजस्थान क्रिकेट संघ के मुख्य संरक्षक एवं राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सी.पी जोशी, राजस्थान क्रिकेट संघ के अध्यक्ष वैभव गहलोत, बीसीसीआई के अध्यक्ष रोजर बिन्नी, बीसीसीआई के सचिव जय शाह, हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की चेयरपर्सन एवं नॉन एक्जीक्यूटीव डायरेक्टर वेदांता लिमिटेड की प्रिया अग्रवाल भी मौजूद थी। वैभव गहलोत ने बताया कि स्टेडियम में 40 हजार दर्शकों के क्षमता का प्रथम चरण का कार्य इसी वर्ष अक्टूबर में पूरा हो जाएगा। दूसरे चरण के कार्य में दर्शक क्षमता को बढ़ाकर 75 हजार किया जाएगा। वेदांता की चेयरपर्सन प्रिया अग्रवाल ने कहा कि हमें विश्वस्तरीय सुविधा कायम करने का जो अवसर दिया गया है, उससे खेल और खिलाड़ी दोनों का फायदा होगा।

## 65 दिव्यांगों को मिली स्कूटी, श्री अन्न पोषण अभियान भी शुरू

**उदयपुर।** राजस्थान दिवस 30 मार्च को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की पहल पर सुखाड़िया रंगमंच पर जिला स्तरीय लाभार्थी उत्सव जिला प्रशासन तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के साझे में सम्पन्न हुआ। इस दौरान जिलेभर से विभिन्न योजनाओं से लाभ प्राप्त कर चुके व्यक्ति पहुंचे एवं मुख्यमंत्री की कल्याणकारी योजनाओं से अपने जीवन में बदलाव की कहानी बयां की। पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा, वल्लभनगर विधायक प्रीति शक्तावत, जगदीश राज श्रीमाली ने भी विचार रखे। संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, कलक्टर तराचंद मीणा, गांधी दर्शन समिति जिला संयोजक पंकज कुमार शर्मा, गोपालकृष्ण शर्मा, लालसिंह झाला, पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया, बीसूका सदस्य लक्ष्मीनारायण पंड्या, अतिरिक्त आयुक्त अंजलि राजोरिया, जिला परिषद सीईओ मंयक मनीष, एडीएम ओपी बुनकर, डीएसओ नरेश बुनकर, सीएमएचओ डॉ. शंकर बामनिया मौजूद थे। इस अवसर पर 65 दिव्यांगजन को स्कूटी प्रदान की गई। लाभार्थी उत्सव के तहत उदयपुर जिले में नवाचार करते हुए जिला प्रशासन व जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के तत्वावधान में 'श्री अन्न पोषण अभियान' की शुरूआत भी हुई। इसमें उदयपुर के 5 पिछड़े ब्लॉक का चयन किया गया। जिसमें पांच-पांच पंचायतों के अंतर्गत आने वाले सभी आंगनबाड़ी केंद्र की गर्भवती एवं धात्री महिलाएं तथा 6 वर्ष से कम आयु वाले सभी बच्चों को पोषाहार के अलावा मिलेट के बने लड्डू, एनर्जी बार, नमकीन इत्यादि व्यंजन रोज़ खिलाया जाएगा।

## हीरो शोरूम मनामा का उद्घाटन

**उदयपुर।** टू-व्हीलर कंपनी हीरो मोटोकॉर्प के डीलर मनामा हीरो बाइक के ओल्ड स्टेशन रोड पर हाईटेक शोरूम 2.0 का उद्घाटन गत दिनों हुआ। उप महापौर पारस सिंघवी, राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत, कंपनी के जोनल हेड संजय सिंह, रॉयल मोटर्स के मालिक शब्बीर के मुस्तफा, मनामा मोटर्स के मालिस हुसैन मुस्तफा ने फीता काटकर उद्घाटन किया। हुसैन मुस्तफा ने बताया कि मनामा मोटर्स राजस्थान, गुजरात व छत्तीसगढ़ में कस्टमर सेटिस्फिकेशन के मामले में तीसरे स्थान पर है।

## 'मेवाड़ पुनर्खोज' का पुनर्विमोचन

**उदयपुर।** असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने 20 अप्रेल को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के बप्पा रावल सभागार में 'मेवाड़ पुनर्खोज' पुस्तक का पुनर्विमोचन किया। यह पुस्तक राजस्थान पत्रिका के जोधपुर संस्करण के संपादकीय प्रभारी डॉ. संदीप पुरोहित ने लिखी है। विशिष्ट अतिथि पूर्व राजपरिवार सदस्य एवं एमएमसीएफ ट्रस्टी डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कटारिया ने कहा कि मेवाड़ की कीर्ति भारत ही नहीं अपितु दुनिया में है। इस धरा के पुत्रों ने वो नाम कमाया है कि मेवाड़ का नाम आते ही देश-दुनिया नतमस्तक होकर हमें मान-सम्मान देती है। कटारिया ने कहा कि मेवाड़ के गौरवपूर्ण इतिहास, कला-संस्कृति के बारे में आने वाली पीढ़ी को बताने की जिम्मेदारी हम सबकी है। इस दौरान शहर के गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

## कलक्टर मीणा को सीएम एक्सिलेन्स अवार्ड

**उदयपुर।** जिला कलक्टर तारा चंद मीणा के नवाचार मिशन कोटड़ा को समूचे राजस्थान में सराहा गया। उन्हें मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और मुख्य सचिव उषा शर्मा ने जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री सार्वजनिक सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार (सीएम एक्सिलेन्स अवार्ड) से सम्मानित किया। कलक्टर मीणा को प्रशस्ति पत्र एवं शॉल भेटकर सम्मानित किया गया। कलक्टर ने कहा कि जनजाति अंचल में दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों को राज्य सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए चलाया गया मिशन कोटड़ा जिला प्रशासन की पूरी टीम के सहयोग से ही सफल हो सका है।

## मेवाड़ पॉलिटेक्स व मेडनेक्स्ट को स्टेट एक्सपोर्ट अवार्ड

**उदयपुर।** जोधपुर में आयोजित राजस्थान इंटरनेशनल एक्सपोर्ट अवार्ड समरोह में मेवाड़ पॉलिटेक्स ग्रुप की सह कम्पनी व सन पालिटेक्स प्रा.लि. को केमिकल एवं अलाइड प्रोडक्ट्स में सराहनीय कार्य के लिए एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री से यह अवार्ड ग्रुप डायरेक्टर शिल्पा बापना ने ग्रहण किया। समारोह में उदयपुर की ही मेड नेक्स्ट बायोटेक को फार्मास्यूटिकल प्रोडक्ट के उत्पादन व हाईएस्ट ग्रोथ के लिए स्टेट एक्सपोर्ट अवार्ड प्रदान किया गया। जिसे मुख्यमंत्री के हाथों मैनेजिंग डायरेक्टर नीलम व्यास ने प्राप्त किया। इस अवसर पर मेडनेक्स्ट के चेयरमैन अनिल व्यास व पंकज व्यास भी मौजूद थे।

## उदयपुर सीमेंट ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होगा

**उदयपुर।** उदयपुर सीमेंट वर्क्स लिमिटेड ने ग्रीन एनर्जी की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए अपनी दरोली माइंस पर सोलर प्लांट लगाया है। एक मेगावाट के इस प्लांट का उद्घाटन प्रदेश के ऊर्जा मंत्री भंवर सिंह भाटी ने किया। कम्पनी के सीईओ और डायरेक्टर श्रीवत्स सिंघानिया ने कहा कि पानी में तैरता यह प्लांट अपने आप में अनूठा व देश की सीमेंट इंडस्ट्री में पहला है। इस सोलर प्लांट से प्रतिवर्ष 1500 मीट्रिक टन कार्बन कम उत्सर्जित होगा, जोकि एक साल में 1.5 लाख पौधे लगाने के बराबर है। ये फ्लोटिंग सोलर प्लांट लगाने से सालभर में 8000 क्यू मीटर पानी का वाष्पीकरण कम होगा। सोलर प्लांट कार्बन फुट प्रिंट को कम करने के लिए उदयपुर सीमेंट की प्रतिबद्धता में योगदान देगा। उन्होंने कहा कि उदयपुर सीमेंट ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होगा। सिंघानिया ने कम्पनी की नई ब्रॉडगेज रेलवे साइडिंग पर भी मालगाड़ी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह ट्रैक 21 वर्ष बाद पुनः शुरू हुआ है। इस अवसर पर मंत्री महेंद्रजीत सिंह, मालवीया, जगदीशराज श्रीमाली, प्रीति गजेंद्र सिंह शक्तावत के साथ कम्पनी के पूर्णकालिक निदेशक नवीन कुमार शर्मा, शशिकांत कुमार, ओपी गढवी व सिद्धार्थ वशिष्ठ भी उपस्थित थे।

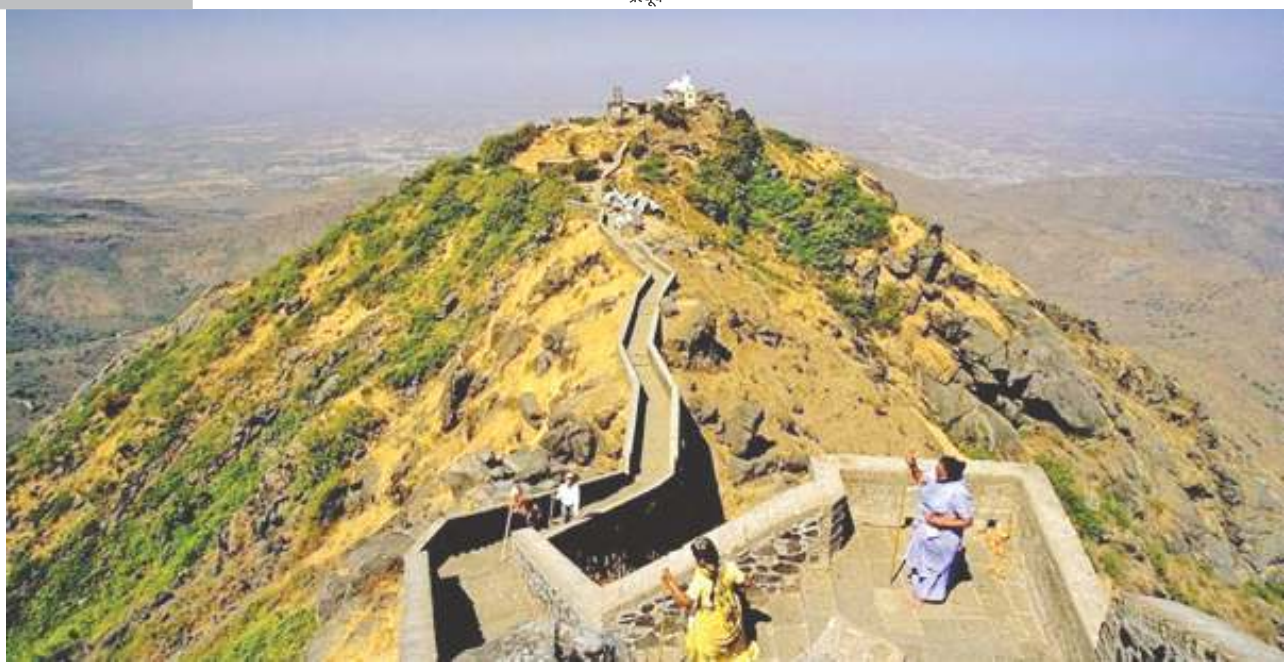

# गिरनारी तेरा भरोसा भारी

*समीर चौधरी*

**गुजरात** में गिरनार सबसे ऊंची चोटी है, माना जाता है कि यहां भगवान दत्तात्रेय का निवास है, जो ब्रह्मा, विष्णु व शिव के अवतार हैं, इसलिए उन्हें त्रिमूर्ति भी कहा जाता है। अतएव गिरनार बहुत महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। गिरनार पहाड़ी की पांच प्रमुख चोटियों पर 866 हिंदू व जैन मंदिर हैं। 4000 सीढ़ियां चढ़ने के बाद दर्शनार्थी एक पठार पर पहुंचते हैं, जहां जैन मंदिर हैं। 12वीं से 16वीं शताब्दी में बने इन मंदिरों में एक जगह ऐसी भी है, जहां 700 वर्ष की तपस्या के बाद 22वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ का परमधाम गमन हुआ था। 112 किमी के क्षेत्र में फैले गिरनार की पांच मुख्य चोटियां हैं- अम्बा जी, गोरखनाथ, गुरु दत्तात्रेय, औघड़ अनसुइया और कालका। इनमें से गोरखनाथ समुद्रतल से 3666 फीट की ऊंचाई पर होने के नाते सबसे ऊंची है। दत्तात्रेय चोटी पर एक छोटा सा मंदिर है गुरु दत्तात्रेय के पदचिह्न का। सबसे ज्यादा कठिनाई कालका चोटी पर चढ़ने में होती है, जो दत्तात्रेय से ज्यादा फासले पर नहीं है। दत्तात्रेय दो शब्दों से मिलकर बना है, एक 'दत्ता' जिसका अर्थ है देने वाला दूसरा 'अत्रेय' जिसका संदर्भ है ऋषि अत्रि से जोकि उनके भौतिक पिता थे। उनकी माता का नाम अनसु इया था। पहाड़ी के ऊपर दत्तात्रेय का मंदिर है जिसमें पदचिह्नों का जोड़ा है,

जिसके बारे में कहा जाता है कि वह भगवान दत्तात्रेय के कदमों के निशान हैं। गुजरात के जूनागढ़ जिले में गिरनार पहाड़ का क्षेत्र लगभग 112 किमी है और इसकी परिक्रमा 40 किमी की है। दत्तात्रेय मंदिर तक पहुंचने के लिए श्रद्धालुओं को 10000 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं तथा सूरज की कठोर किरणों और तेज चलती हवाओं का सामना भी करना पड़ता है। लगभग 4000 सीढ़ियां चढ़ने के बाद जैन तीर्थंकर नेमिनाथ का मंदिर है।

सफेद संगमरमर से तराशा हुआ यह मंदिर बहुत ही शानदार है। गिरनार हिंदुओं व जैनों दोनों के लिए अति पवित्र है। इससे आगे 3000 सीढ़ियां चढ़कर अम्बाजी माता मंदिर पहुंचा जाता है। थोड़ा और आगे जाने पर कमंडल कुंड पहुंचा जा सकता है। इसके बारे में कहा जाता है कि दत्तात्रेय ने त्रेता युग में यहां तप किया था। वहां के पुजारी के अनुसार अपनी आध्यात्मिक क्रियाओं को आरंभ करने से पहले दत्तात्रेय ने जो पवित्र अग्नि जलाई, वही आज तक प्रदीप्त है। प्रत्येक सोमवार को तीर्थयात्रियों के लिए इस पवित्र अग्नि कुंड के द्वार खोले जाते हैं, ताकि वे दर्शन कर सकें। भक्तों का मानना है कि इस पवित्र अग्नि के रूप में दत्तात्रेय प्रकट होते हैं। एक संत ने बताया कि यह भगवान का आदेश था कि वह कोई भी रूप धारण कर लें और भोजन का आनंद लेने के लिए किसी भी समय इस स्थान पर आ जाएं, इसलिए गिरनार में संत व भिक्षु हर आने वाले को 24 घंटे मुफ्त ताजा भोजन कराते हैं। आखिर में गुरु शिखर या दत्ता शिखर, जो कि एक बहुत ही पतली चट्टान पर स्थित है, पहुंचा जा सकता है। चट्टान की परिक्रमा करते हुए श्रद्धालु छोटे से दत्तात्रेय मंदिर में प्रवेश करते हैं। स्टील की चादरों से बने इस मंदिर में एक समय में 12 से 15 भक्त ही आ सकते हैं।

माना जाता है कि इस पवित्र पहाड़ पर कोई अपनी भौतिक शक्ति से ऊपर नहीं चढ़ता है, बल्कि दत्तात्रेय में आस्था के कारण ही ऊपर चढ़ पाता है।

# पसीने से राहत दिलाए योगासन

**गर्मी में पसीने की समस्या आम बात है। पसीने से तरबतर होते ही काम में भी मन नहीं लगता और त्वचा से संबंधित कई बीमारियों की आशंका भी बढ़ जाती है। ऐसे में पसीने से दूर क्यों न रहें। पसीने से कैसे बची रह सकती हैं, बता रहे हैं योगाचार्य कौशल कुमार-**

**गर्मियों** का मौसम है। इस तीखी धूप के मौसम में पसीने की समस्या से सबको गुजरना पड़ता है। वैसे तो इस मौसम में पसीना निकलना आम बात है, किन्तु यह समस्या आवश्यकता से अधिक है तो इस पर विशेष ध्यान की जरूरत है। अधिक पसीने से छुटकारा पाने के लिए कुछ यौगिक क्रियाएं काफी उपयोगी साबित होती हैं।

## आसन

आसनों के नियमित अभ्यास से स्वेद ग्रंथियां संतुलित होती हैं। इनके लिए महत्वपूर्ण आसन हैं सूर्य नमस्कार, जानु शिरासन, राजकपोतासन, सुप्त वज्रासन, सर्वांगासन, भूनमनासन, त्रिकोणासन तथा शशांकासन आदि सुविधा, क्षमता तथा आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उक्त आसनों का अभ्यास किया जा सकता है।

## शशांकासन की अभ्यास विधि

घुटने के बल जमीन पर बैठ जाएं। दोनों पैरों की एड़ियों के मध्य नितम्ब को रख दें। घुटने आपस में जोड़ लें। अब एक गहरी तथा धीमी श्वास-प्रश्वास लें। दोनों हाथों को सिर के ऊपर सीधा उठाएं। इसके बाद श्वास बाहर निकालते हुए हाथ तथा धड़ को एक साथ आगे की ओर झुकाएं। अंतिम स्थिति में माथा तथा दोनों हाथ जमीन पर

आ जाते हैं। नितम्ब पैरों की एड़ियों पर दृढ़तापूर्वक स्थित रखें। इस स्थिति में आरामदायक अवधि तक रूकें। फिर पूर्व स्थिति में आएं। इसकी दो से तीन आवृत्तियों का अभ्यास करें।

## सीमाएं

स्लिप डिस्क तथा स्पॉन्डिलाइटिस के रोगी इसका अभ्यास न कर पीछे झुकने वाले अन्य आसनों का अभ्यास करें।

## प्राणायाम

कुछ ऐसे प्राणायाम हैं, जिनक अभ्यास गर्मियों में काफी फायदेमंद साबित होता है। महत्वपूर्ण प्राणायाम हैं शीतली, शीतकारी तथा चन्द्रभेदी प्राणायाम।

## शीतली की अभ्यास विधि

पद्मासन, सिद्धासन, सुखासन, वज्रासन या कुर्सी पर रीढ़, गला व सिर को सीधा कर बैठ जाएं। आंखों को ढीला बंद कर चेहरे को खूब ढीला छोड़ दें। अब एक गहरी श्वास-प्रश्वास लें। इसके बाद मुंह को हल्का सा खोल कर जीभ को यथासंभव बाहर निकालें। बाहर निकली हुई जीभ को अगल-बगल से पेड़ की पत्तियों की तरह नली के रूप में मोड़ें। इसके बाद मुंह से एक गहरी तथा धीमी श्वास अंदर लें। श्वास को अंदर लेकर जीभ को अंदर कर मुंह बंद करें, तब नाक से एक धीमी तथा गहरी श्वास बाहर निकालें। यह शीतली प्राणायाम की एक आवृत्ति है। प्रारम्भ में इसकी 6-7 आवृत्तियों का अभ्यास करें। धीरे-धीरे आवृत्तियों की संख्या बढ़ाकर 30-40 तक ले जाएं।

## सीमाएं

निम्न रक्तचाप, डिप्रेशन, मोटापा तथा हाइपोथायराइड रोगों में इसका अभ्यास करना नुकसानदेह हो सकता है।

# यूं भी दिल बहलाएं...

- बड़े-उबाऊ दिन और तपती दुपहरी। घर में बहुत सारा काम है, लेकिन करने को दिल नहीं मानता। अगर ऐसा महसूस कर रही हैं तो जीवन शैली में जरा बदलाव लाइए। तरोताजा महसूस करेंगी।
- सुबह-सुबह भी गर्मी महसूस हो रही है तो ताजी हवा में सैर को निकल पड़ें या घर के लॉन की हरी-हरी दूब पर नंगे पॉव टहल लें। लम्बी-लम्बी सांस खींचे और छोड़ें। ताजगी महसूस करेंगी।
- दुपहरी में लू दस्तक दे रही है तो खिड़की-दरवाजे बन्द कर कुलर की हवा में आराम से मनपसंद पत्रिका या पुस्तक ही पढ़ लीजिए। वीडियो पर फिल्म देख लीजिए।
- कड़ी धूप में दरवाजे और खिड़कियों पर मोटे पर्दे डाल दें। इससे कुछ अंधेरा तो होगा मगर ऑखों राहत मिलेगी।
- यदि थकान महसूस कर रही हैं तो फोन पर ही किसी अपने निकटस्थ से थोड़ी देर बातचीत कर लीजिए।
- सिलाई, कढाई, बुनाई करती हैं तो उनमें से कोई भी कार्य कर लीजिए। एक काम से मन ऊब जाए तो बदल कर दूसरा हाथ में लीजिए जैसे सिलाई के काम में मन नहीं लगा तो छोड़िए, सिलाई कल या परसों के लिए और कुछ कढ़ाई या पेटिंग का काम कर लीजिए।
- टेप पर धीमे सुरों में मधुर संगीत लगा लीजिए बोरियत दूर होगी। शाम को किसी पार्क में बच्चों और पति के साथ टहल आईए। कभी सखी के साथ शाम को शॉपिंग कर आइएं।
- शाम के स्नान में पानी में दो बूंद यू.डी. कोलीन की डाल लीजिए आप अच्छा महसूस करेंगी।
- शाम को परिवार के साथ थियेटर में कोई पिक्चर देख आईए। गर्मी के कारण आलस से खाना बनाने का मन नहीं है तो कोई बात नहीं पतिदेव व बच्चों के साथ किसी होटल में डीनर कर आइए अथवा ऑनलाइन मंगवा लीजिए। इससे एकरसता भी टूटेगी और जायका भी बदलेगा।
- अगर खाने का मूड न हो तो आज चाट, पानीपूरी से ही काम चलाइए। आलस्य ने घेर रखा है कोई बात नहीं, काम कल हो जायेगा। आज आप उन सभी रिश्तेदार और दोस्तों से फोन पर वीसी के माध्यम से बात ही कर लें जिन्हें आप कई दिनों से टाल रही हैं।
- बैडरूम का हुलिया ही बदल डालिए। पलंग, ड्रेसिंग टेबल की जगह बदल दीजिए। कमरा एकदम नया लगने लगेगा।
- पड़ोसिन से गप्प ही लगा लीजिए। मन बहल जायेगा।
- जब आलस्य घेरे तो मुंह पर ठंडे पानी के छींटे मारिए। ताजगी महसूस करेंगी। रूई के फाए गुलाब जल में डूबोकर आंखों पर रख कर लेट जाइए। आंखों को ठंडक के साथ राहत मिलेगी।

*-प्रेम कोमल बूंलिया*

शोध

# ग्रामीणों को 'डिमेंशिया' का जोखिम ज्यादा

## भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलुरू के सेंटर फॉर ब्रेन रिसर्च के शोधकर्ताओं का दावा

**30**
*वर्षों में तीन गुना हो जाएंगे डिमेंशिया के मरीज*

**2020**
*में 60 वर्ष से अधिक आयु के 53 लाख लोग शिकार हुए*

**5.5**
*करोड़ लोग दुनियाभर में डिमेंशिया से पीड़ित हैं*

**आमतौर** पर यह धारणा है कि शहरों की आबोहवा के कारण यहां रहने वाले लोगों में मानसिक समस्याएं होना साधारण बात है, लेकिन डिमेंशिया (मनोभ्रंश) को लेकर देश में किए गए अब तक के सबसे बड़े अध्ययन में पाया गया कि शहर के मुकाबले ग्रामीण भारत में डिमेंशिया का जोखिम अधिक है।भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलुरू के सेंटरफॉरब्रेन रिसर्च के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में दावा किया है कि मानसिक रोगियों की तेजी से बढ़ती संख्या से देश के स्वास्थ्य खर्च में इजाफा होगा और इससे सामाजिक-आर्थिक संतुलन बिगड़ेगा। आकलन के मुताबिक, साल 2020 में 60 वर्ष से अधिक आयु के 53 लाख लोग डिमेंशिया के शिकार थे। हालांकि सबसे चिंताजनक बात यह है कि अगले 30 वर्षों में यह संख्या तीन गुना होने की उम्मीद है। भारत की वृद्ध आबादी तेजी से बढ़ रही है और इसकी कुल आबादी का लगभग पांचवा हिस्सा 2050 तक 60 वर्ष से अधिक वृद्ध होगा। इसलिए स्वास्थ्य पर खर्च सामाजिक- आर्थिक बोझ बढ़ाएगा, जिसका सामना हमारे देश को करना पड़ सकता है। एक पूर्व शोध में पाया गया था कि डॉक्टरों के लिए चिंताजनक यह है कि इससे जुड़ी बीमारी अल्जाइमर के इलाज की 'क्रेनेजुमाब' जैसी दवा बेअसर साबित हुई है।

### क्या है डिमेंशिया

डिमेंशिया कोई बीमारी नहीं है बल्कि यह स्मृति, सोच और सामाजिक क्षमताओं को प्रभावित करने वाले लक्षणों को दर्शाता है, जो किसी व्यक्ति के दैनिक कामकाज में हस्तक्षेप और बाधा उत्पन्न कर सकता है। डिमेंशिया में आमतौर पर स्मृति हानि होती है, हालांकि यह अकेला डिमेंशिया का लक्षण नहीं है।

### जीवनशैली में बदलाव का प्रभाव

भारत में कुछ वर्षों से मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा, उच्च केलेस्ट्रॉल आदि स्वास्थ्य विसंगतियों में खतरनाक वृद्धि हुई है। ऐसा संभावित रूप से जीवनशैली में बदलाव के कारण हो रहा है। अध्ययन के मुताबिक, जीवनशैली में हस्तक्षेप भारतीय संस्कृति के अनुरूप होना चाहिए ताकि वे स्वीकार्य और कार्यान्वयन योग्य हों। डिमेंशिया के विरूद्ध प्रभावी रणनीतियां अपनाकर न केवल डिमेंशिया के बोझ को कम करने में मदद मिलेगी, बल्कि वरिष्ठ नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता भी बढ़ाई जा सकेगी।

### मधुमेह उच्च रक्तचाप और मोटापा का जोखिम कम

अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि डिमेंशिया से इतर बात करें तो गांव में रहने वाले लोगों में शहरी लोगों के मुकाबले मधुमेह, उच्च रक्तचाप और मोटापा का जोखिम अभी भी कम है। प्रमुख अध्ययनकर्ता सेंटरफॉर ब्रेन रिसर्च के प्रोफेसर जोनास सुंदरकुमार ने बताया कि अब हम यह देखने के लिए खोज कर रहे हैं कि क्या गांवों में घरेलू वायु प्रदूषण फेफेड़ों के कार्य को प्रभावित कर रहा है ?

# सावधान, आगे खतरनाक मोड़ है

**हर साल कुछ पुस्तकें आती हैं, कुछ पुरस्कार और सम्मान होते हैं तथा कुछ शॉल और दुशाले ओढ़ाये जाते हैं। कुल मिलाकर इस व्यवस्था ने साहित्य को केवल एक योजना मद में बदल दिया है। यही कारण है कि अब छोटे-बड़े प्रकाशक और छोटे-बड़े उद्योगपति अपने सभी पापों का प्रायश्चित साहित्य और संस्कृति के लिए पुरस्कार और सम्मान देकर करने लगे हैं। जन स्तर पर साहित्य को समादृत करने का अब कोई रास्ता ही नहीं बचा है क्योंकि साहित्य की हर गली के मोड़ पर शब्द के व्यापारियों की भीड़ लगी हुई है।**

*वेदव्यास*

**समाज** की तरह साहित्य में भी अब धीरे-धीरे मुड़कर देखने की आदत प्राय: छूटती जा रही है तथा बहुत आगे का दृश्य घटनाओं के धुंधलके में दिखाई नहीं पड़ रहा है। अत: सृजनशील मन बार-बार प्रकृति और अध्यात्म के जहाज पर लौटकर आ रहा है। बस यह अनंत सुख जैसे 'उड़ी जहाज को पंछी, पुनि जहाज पर आवैं', की भांति किसी एकाकीपन से घिरा रहता है।

साहित्य के सभी स्वरूप आगे-पीछे शब्द और चित्त पर केंद्रित हो गए हैं तथा हम एक तरफ निरक्षरों के ब्रह्मलोक तथा दूसरी तरफ विकसित भद्रलोक के बीच कहीं एक अंतरीप की तरह नितांत वैयक्तिक परिसंवाद में उलझे हुए हैं। इतिहास बनने की अवधारणा किस तरह मनुष्य के मनोविज्ञान को समय-समय की कसौटी पर खण्ड-खण्ड करती है। वस्तुत: इस कहानी को अब साहित्य में प्रस्थापित करने की प्रक्रिया बहुत जटिल हो गई है।

एक तरफ बेशुमार बढ़ती आबादी, दूसरी तरफ नष्ट होती प्रकृति, तीसरी तरफ ग्रहलोक को पार करता हुआ विज्ञान, चौथी तरफ प्रदूषण जनित शक्तिहीन खाद्य प्रणाली तथा पांचवीं तरफ एक ध्रुवीय आर्थिक राजनीति ने मनुष्य और समाज के सारे वर्तमान और भविष्य बदल दिये हैं। सारी आबादी आत्म सुरक्षा के लिए चिंतित और व्यग्र है तथा भूख और अज्ञान के बीच एक व्यापक गृहयुद्ध का वातावरण है। आपके और हमारे शब्द अब किस तरह मनुष्य के मन में शाश्वत शांति और सहभागिता उत्पन्न करते होंगे इस परिवर्तन पर अब हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए।

ऋषि-मुनियों की परम्परा से लौटते अब हम केवल भारतीय महाद्वीप की हिंदी जातीय परम्परा तक सीमित हो गए हैं तथा हमारे संवाद अब प्रदेश की भाषाई चेतना के दरवाजे तक भी नहीं जाते। साहित्य की यह परिधि इतनी सिकुड़ती जा रही है कि बीसवीं शताब्दी के जाते-जाते हमारे शब्द अब कुटीर उद्योग में बदल गए हैं। साहित्य में मनुष्य का हस्तक्षेप निषेध होता जा रहा है तथा यहां अब व्यवसाय, विज्ञापन, प्रलोभन, प्रतिस्पर्धा और तात्कालिकता का ही बोलबाला है। साहित्य का राजनीतिकरण और निजीकरण कर दिया गया है तथा चिंतनशील एवं विवेकशील रचनाकर्मी अब गांव के बाहर अपनी

**जिसके पास साधन है वह साहित्य को भी अपनी पहचान के लिए टोपी में 'फर' की तरह लगाता है तथा कवि सम्मेलन और मुशायरों में भी अध्यक्षताएं करता है तो साल में एक बार कोई साहित्य और सांस्कृतिक अनुष्ठान भी कर लेता है। आपने महसूस किया होगा कि साहित्य की सारी दुनिया अब प्रचार और प्रसार के माध्यमों (संस्थाओं) के इर्द-गिर्द केंद्रित हो गई है तथा रचनाकार अपने शब्दों की झोली उठाकर मान्यता, स्थापना और पहचान के इस चक्रव्यूह के व्याकुल प्रश्नों के बीच जूझ रहा है। शब्दों की जो भी सबसे अधिक कीमत दे वही साहित्य का सबसे बड़ा पारखी इस समाज में कहलाता है।**

कुटिया में अकेला ही तप रहा है। आगे विज्ञान, उद्योग और विकास से भरपूर 21 वीं शताब्दी की चुनौतियां है तो पीछे 15 वीं शताब्दी की लोक मंगलकारी शब्द परम्परा है। कंप्यूटर और रोबोट के सामने तथा बहुजीवाणु प्रजनन के सामने हम आज भी मनुष्य की चित्त की शांति का मार्ग वेद, उपनिषद् और मध्यकालीन सुधारवादी संत परम्परा में ही बार-बार ढूंढ़ते हैं। यह स्थिति और अन्तर्विरोध इसलिए भी विचारणीय है कि मनुष्य का जीवन दर्शन अब मात्र कोई परम्परा और प्रकृति ही निर्धारित नहीं करती अपितु उसे विज्ञान, संसार, शिक्षा और विकास की नई प्रतियोगिताओं से भी प्रतिपल चुनौतियां मिलती रहती हैं। इसी उथलपुथल में शब्द की सत्ता केवल मनुष्य की स्तुति ही नहीं करती अपितु समाज और प्रभावित करने वाली सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक प्रभु सत्ताओं के सामने भी हकबकाई हुई जैसी खड़ी है।

साहित्य का चेहरा अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से, प्रकाशकों के रंगीन बहानों से, राजनैतिक दलों के सांस्कृतिक प्रतिमानों से, भाषाई विभाजनों से, विभिन्न विधाओं की खींचतानों से तथा रचनाकार के निजी सपनों से अब सीधे-सीधे पहचान के बाहर हो गया है। समाज में जन संचार के माध्यमों ने रचनाधर्मी चित्त का इतना सरलीकरण कर दिया है कि सूचना और ज्ञान के बीच शब्द और अर्थ की श्रेष्ठता अब बहुत सीमित हो गई है। समय और मनुष्य की चेतना का रूपान्तरण करने की दिशा में अग्रसर हम सभी सृजनधर्मी अब इतने बौने हो गए हैं कि मन से और मंच से कहीं भी एक मिसाल और अनुसरण करके नहीं बोलते। पूरे वर्ष महज एक आपाधापी का अथवा आत्ममुग्धता का ही जलजला बना रहता है।

लेकिन यह सब कुछ यथावत जारी है। साहित्य और समाज के बीच हस्तक्षेप की एक तीसरी दुनिया भी है जो निरंतर लघु पत्रिकाओं अथवा श्रमजीवी प्रकाशनों के माध्यम से मनुष्य की व्यथा को वाणी देने में जुटी है यह अलग-अलग आवाज ही आज के दिन साहित्य की बेमिसाल धरोहर है जो युवा रचनाकार को शब्द की संघर्ष यात्रा से जोड़े रखती है। साठ-सत्तर साल तक तपने के बाद यदि किसी लेखक को यदि कोई प्रतिष्ठान सम्मानित कर अपना

यश बढ़ाता है तो उससे यह अर्थ कदापि नहीं निकलता कि वह सेठ और उद्योगपति अथवा व्यवस्थापक संस्थान उस लेखक के विचारों को प्रणाम कर रहा है। यह एक जाल है जो असहमतियों को माला पहनाते-पहनाते अपने विरुद्ध खड़ी की जा रही है संपूर्ण लड़ाई की दिशा को ही एक सहमति में बदल देता है। नोबेल पुरस्कार से लेकर भारतीय ज्ञानपीठ के पुरस्कारों तक यही रणनीति है कि जिसके विरुद्ध हैं उसे ही धीरे-धीरे चमकहीन बनाकर अकेले छोड़ दो। तीसरी दुनिया अथवा विकासशील पिछड़े देशों का साहित्य और साहित्यकार आज जिस प्रमुखता से मंचासीन हो रहा है उसी तेजी से इस पिछड़ी दुनिया का मनुष्य अपने घरों से हाका लगाकर खदेड़ा जा रहा है। वियतनाम से लेकर बोस्निया तक, अंगोला से लेकर दक्षिण अफ्रीका तक, इराक से लेकर फिलिस्तीन तक, जापान से लेकर जर्मनी तक और सोवियत संघ से लेकर यूरोपीय देशों की साझा मंडी का मनुष्य अपने विकास, न्याय और लोक कल्याण की सारी संभावनाएं हार रहा है क्योंकि शब्द अब धरती से नहीं निकलते अपितु आसमान से गिरते हैं। हम बार-बार अपनी जड़ों को तलाशते हैं और बार-बार डंकल प्रस्ताव और गेट समझौतों की शरण में जाते हैं। शब्दों के यायावर इस बदलती मुद्रा और मंडी की भयावहता को कैसे अपनी संवेदना का ऊर्जापान तथा संस्कार देगा और कैसे अपनी लंगोटी की रक्षा, विकास और विनाश के अर्न्तद्वन्द के बीच करेगा यह प्रश्न मुझे बार-बार सोने नहीं देता।

वर्ष दर वर्ष हम सब आहत मानवता पर कोई मरहम नहीं लगा पाए। तानाशाहों ने मानवाधिकार के घोषणा पत्र बंटवाए लेकिन उन्हें भी हमने नहीं समझा और अब वे अंग्रेजों के प्रबल उत्तराधिकारी बनकर हमारी खेती, हारी बीमारी, खान-पान, शिक्षा संचार, संस्कृति, कला तथा प्रबंध प्रशासन तक में घुसते ही चले आ रहे हैं। हम कैसे बचाएंगे उस न्यायप्रिय शांत चित्त मानव गरिमा को जो आज भी अंतिम छोर पर विपन्न, अराजक, दिशाहीन और बदहवास खड़ी है। आखिर शब्दों की सरफरोशी के लिए तस्लीमा नसरीन कब तक कठमुल्लों की कैद में रहेगी तथा कब तक दुनिया की 8 अरब की जनसंख्या किसी एक देश की मंदी मिटाने के लिए अपने को उपभोक्ता संस्कृति का आहार बनाती रहेगी? दरअसल हम मुंह से जब कुछ खाते हैं तब आंख को कहीं कुछ लज्जाना ही पड़ता है। उसी तरह जब शब्द किसी समय, समाज और साधनों से होकर गुजरते हैं तो उन्हें भी कहीं न कहीं अपनी संवदेना, शाश्वतता और समाधि को भंग करना ही पड़ता है। पूरे समय का साहित्य सृजन और अतिरिक्त समय का चिंतन, मनन आज इसलिए बेमानी है कि मनुष्य की चेतना को बदलने वाले ऋषि स्वयं ऐसे हवामहल में निवास करते हैं जिसमें मनुष्य नहीं बोलता अपितु केवल खिड़कियां ही बोलती है।

आज हम साक्षरता और सम्प्रेषणीयता, शब्द और कर्म, स्वाभिमान और सम्मान, साधना और राजनीति, इंतजार और उतावल, घर और समाज, प्रकृति और विज्ञान और मनुष्य और द्वैत और अद्वैत के अन्तर्विरोध को ही समझने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं तथा निरन्तर जड़ चेतन के बीच ही मध्यमवर्ग का मानसिक विलास जारी रखते हुए हैं। सौ साल अथवा पांच सौ साल पुरानी लालटेन लेकर 21वीं शताब्दी की घुप्प अंधेरी रात में उल्लुओं से भरे जंगल में गुजरते हुए शब्द और संवेदना जैसी प्राकृतिक निधि को सुरक्षित आर-पार ले जाना अब हमारी प्राथमिक चुनौती है। रामायण और महाभारत, कबीर और तुलसी, कालिदास और भावभूति, रवीन्द्रनाथ और प्रेमचंद, विवेकानंद और महात्मा गांधी हमारे आदर्श तो हो सकते हैं लेकिन हमारी रचना प्रक्रिया के यथार्थ बनें इस पर तानाबाना कसने की फुर्सत किसके पास है? आपने देखा नहीं कि अकेले अम्बेडकर के सामाजिक न्याय के दर्शन ने ही हजारों साल पुरानी 'मनुस्मृति' के पन्ने फड़फड़ाना शुरू कर दिया है तथा शब्द संगीत की तरह मनुष्य और समाज के बीच की सभी जुगलबंदियां बदल रही हैं। अत: दिनकर के शब्दों में सिंहासन खाली करो कि जनता आती है जैसे शब्द अब स्वयं अपनी नियति की तलाश में निकल पड़े हैं।

**( लेखक वरिष्ठ साहित्यकार व पत्रकार हैं )**


*Dharmendra*
*Director,*
*+91 94141 58708*

श्री JL Distributors

*Tarun*
*Director,*
*+91 810 444 1444*

श्री Jagat Leela Distributors

Tarun Electricals

Stockist

USHA Symphony Crompton Kunstocom Giving shape to ideas

Racold HAVELLS PHILIPS OSRAM

Off.: 30/31, Link Road, Opp. Town Hall, Udaipur 313 001 (Raj.)
Ph.: 0294-2423965 (O), E-mail: jagatleela@gmail.com, tarunelectric@yahoo.in

# ऊटी: जहां प्रकृति खूब खिलखिलाती है

**ऊटी दक्षिण के प्रमुख हिल स्टेशनों में से एक है, जहां देशभर से पर्यटक आकर अपनी गर्मी की छुट्टियों को यादगार बनाते हैं। प्राकृतिक सुषमा से आवेष्ठित इस मनमोहक पर्वतीय स्थल के बारे में जानकारी दे रही हैं।**

*निधि गोयल*

**नीलगिरी** यानी नीली पहाड़ियों की गोद में बसा हरा- भरा पर्यटन स्थल ऊटी समुद्र तल से करीब 7,350 फुट की ऊंचाई पर बसा है। इसे पहाड़ों की रानी कहा जाता है। इसका वास्तविक नाम उदगमंडलम है। इसके चारों ओर फैले प्रकृति के खूबसूरत नजारे, ऊंचे पहाड़ और आसमान को छूते देवदार व चीड़ के पेड़, साथ ही चाय बागानों की महक मन मोह लेती है। यहां तापमान हमेशा 5 से 25 डिग्री सेल्सियस यानी मौसम हमेशा खुशगवार रहता है।

## ... कहां घूमें, क्या देखें

### बॉटेनिकल गार्डन

बॉटेनिकल गार्डन पर्यटकों को काफी लुभाता है। यह गार्डन 22 एकड़ में फैला है और यहां लगभग 650 दुर्लभ किस्म के पेड़-पौधों के साथ-साथ रंगबिरंगे लिली के फूल, खूबसूरत झाड़ियां व हजारों साल पुराने पेड़ के अवशेष देखने को मिलते हैं। इस वनस्पति उद्यान की स्थापना सन् 1847 में की गई थी। इसकी देखरेख उद्यानिकी विभाग करता है। यहां एक पेड़ के जीवाश्म संभाल कर रखे गए हैं। प्रकृति प्रेमियों के बीच यह गार्डन बहुत लोकप्रिय है। मई के महीने में यहां ग्रीष्मोत्सव मनाया जाता है। इस महोत्सव में फूलों की प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें जाने-माने स्थानीय कलाकार भाग लेते हैं।

### म्यूजियम

मैसूर रोड पर 1989 में बनाया गया ऊटी का म्यूजियम भी देखने लायक है। यहां आदिवासी वस्तुओं और कपड़ों को प्रदर्शित किया गया है, वहीं दुनिया भर में मशहूर तमिलनाडु की मूर्तिकला, चित्रकला, सैंडलवुड से बनी अनेक वस्तुओं, मैसूर सिल्क और साउथ कॉटन के कपड़ों को भी दिखाया गया है।

### रोज गार्डन

ऊटी का रोज गार्डन बहुत खूबसूरत है। स्थापना 1995 में की गई थी। यह 10 एकड़ में फैला हुआ है। रोज गार्डन में लगभग 200 प्रकार के गुलाब के फूलों का संग्रह है। इसे दक्षिण एशिया का सबसे उत्कृष्ट गार्डन माना जाता है।

### डोडाबेट्टा चोटी

यह चोटी समुद्र तल से 2,623 मीटर ऊपर है। यह जिले की सबसे ऊंची चोटी मानी जाती है। यह चोटी ऊटी से केवल 10 किलोमीटर दूर है, इसलिए यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है। यहां से घाटी का नजारा अद्भुत दिखाई पड़ता है।

### कलहट्टी जलप्रपात

यह झरना 100 फुट ऊंचा है। यह जलप्रपात ऊटी से केवल 13 किलोमीटर की दूरी पर है, इसलिए ऊटी आने वाले पर्यटक यहां की सुंदरता को देखने जरूर आते हैं। झरने के अलावा कलहट्टी-मसिनागुडी की ढलानों पर जानवरों की अनेक प्रजातियां भी देखी जा सकती हैं, जिनमें चीते, सांभर और जंगली भैंसा शामिल हैं।

## ऊटी झील

ऊटी झील को देखना मनमोह लेने वाला सुखद अनुभव है। इस झील के चारों ओर फैली हरियाली झील को और भी अधिक आकर्षक बना देती है। इस झील का निर्माण यहां के पहले कलेक्टर जॉन सुलिवन ने 1824 में करवाया था। यह झील 25 किलोमीटर लंबी है। यहां आने वाले पर्यटक बोटिंग और मछली पकड़ने का आनंद लेते हैं। मछलियों के लिए चारा खरीदने से पहले मछली पकड़ने की अनुमति होनी चाहिए। यहां एक बगीचा भी है। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रतिवर्ष 12 लाख से अधिक दर्शक यहाँ आते हैं। बोटिंग का समय सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक है।

## कोटागिरी हिल

कोटागिरी हिल ऊटी से 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कोटागिरी हिल प्राकृतिक सुंदरता की दृष्टि से दर्शनीय स्थल है। यहां के चाय- बागानों को देखने के लिए पर्यटक दूर-दूर से आते हैं। नीलगिरी के तीन हिल स्टेशनों में से यह सबसे पुराना है। यह ऊटी और कुन्नूर की तरह प्रसिद्ध नहीं है, लेकिन माना जाता है कि इन दोनों की अपेक्षा कोटागिरी का मौसम ज्यादा सुहावना होता है।

## टॉय ट्रेन

समुद्र तल से 7,440 फुट ऊपर स्थित इस हिल स्टेशन तक पहुंचने के लिए कुन्नूर से ट्रेन भी ली जा सकती है। ऊटी तक जाने वाली ट्रेन नीलगिरी माउंटेन रेलवे के नाम से भी जानी जाती है। लम्बाई में छोटी किन्तु आकर्षक होने की वजह से इसे टॉय ट्रेन भी कहा जाता है। नीले रंग की वुडन बोगी और बड़ी-बड़ी खिड़कियां इसके सफर को और भी दिलकश बना देती हैं।

## कैसे जाएं

**ऊटी** जाने के लिए दो रास्ते हैं एक तमिलनाडु से, दूसरा मैसूर से। तमिलनाडु से कुन्नूर होते हुए ऊटी जाते हैं। यह रास्ता छोटा है। लगभग 150 किमी की दूरी है। मैसूर से दूरी दोगुनी है यानी लगभग 300 किमी। ऊटी से कुन्नूर की दूरी 15 किमी है। ऊटी पहुंचने के लिए कोयंबटूर निकटतम हवाई अड्डा है, जो ऊटी से मात्र 90 किलोमीटर दूर है। सड़क मार्ग से जाना चाहें तो तमिलनाडु और कोयंबटूर के सभी मार्ग से जुड़ा हुआ है ऊटी।

## पाठक पीठ

अप्रेल–23 का प्रत्यूष मिला। इसमें पुष्पेन्द्र मुनि का आलेख 'महावीर बनने की करें तैयारी' अच्छा लगा। इसमें उन्होंने वह कसौटी भी बता दी है, जिस पर खरा उतरने के बाद महावीर बना जा सकता है। प्रत्यूष के आलेख न केवल पठनीय बल्कि संग्रहणीय भी हैं।

**शांतिलाल जैन,**
उद्योगपति

पहलीबार भारत में निर्मित दो फिल्मों को ऑस्कर अवार्ड मिलना निश्चय ही गौरव का विषय है। यह प्रयोगात्मक फिल्में हैं। नाटु–नाटु गीत में एमएम किरवानी ने संगीत का चमत्कारिक प्रयोग किया, वहीं द एलिफेंट व्हिसपर्स डॉक्यूमेंट्री में वन्य प्राणियों के प्रति मानवीय संवदेना की चरम स्थिति दर्शाई गई है। बॉलीवुड को ऐसी फिल्मों के निर्माण पर ध्यान देना चाहिए, जो समाज को कोई खास संदेश दे सकें। इस संबंध में 'प्रत्यूष' में छपा आलेख अच्छा लगा।

**प्रशांत अग्रवाल,** अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान

प्रत्यूष हर रूचि और आयु वर्ग की पत्रिका है। जिसमें बच्चों, युवाओं, महिलाओं और बुजुर्गों सभी के लिए सामग्री रहती है। राजस्थान में ऐसी एक मात्र यही पत्रिका है। इसमें रंगीन पृष्ठ बढ़ाने पर ध्यान दीजिए।

**अजय अग्रवाल,**
प्रशासनिक अधिकारी,
मेडनेक्स्ट फार्मा

वल्लभाचार्य जी के जीवन दर्शन पर डॉ. हरिसिंह पाल का आलेख अप्रेल–23 अंक में एक वैशिष्ट्य लिए हुए है। जिसमें पुष्टिमार्ग की विवेचना तो है ही साथ ही वल्लाभाचार्य जी द्वारा मानव जीवन को सफल व सार्थक बनाने के लिए जो 6 सिद्धांत प्रतिपादित किए गए, उनका भी विस्तार पूर्वक वर्णन है।

**डॉ. हरीश शर्मा,**
वित्त प्रबंधक
राजस्थान विद्यापीठ

# भीम ने भी धारण किया था निर्जला एकादशी व्रत

*रेणु शर्मा*

**वर्षभर** में चौबीस एकादशियां आती हैं। इन सबमें ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी सर्वोत्तम फल देने वाली है। केवल इस एकादशी का व्रत रखने से ही वर्षभर की एकादशियों के व्रत का फल प्राप्त होता है। ज्येष्ठ शुक्ल पक्षीय एकादशी को निर्जला एकादशी या भीमसेनी एकादशी भी कहते हैं, क्योंकि महर्षि वेदव्यास के अनुसार भीमसेन ने इसे धारण किया था। इस एकादशी में सूर्योदय से द्वादशी के सूर्यास्त तक जल भी न पीने का विधान होने के कारण इसे 'निर्जला एकादशी' कहते है। शास्त्रों के अनुसार इस एकादशी के व्रत से दीर्घायु तथा मोक्ष मिलता है। यह व्रत अत्यंत संयम–साध्य है। इस दिन निर्जल व्रत करते हुए शेषशायी रूप में भगवान विष्णु की आराधना का विशेष महत्व माना गया है।

व्रत विधान–ज्येष्ठ मास के दिन बहुत बड़े होते हैं और प्यास भी अधिक लगती है। चूंकि इस दिन पानी नहीं पिया जाता, इसलिए यह व्रत अत्यधिक श्रम–साध्य होने के साथ–साथ कष्ट एवं संयम साध्य भी है। ऐसी दशा में इतना कठिन व्रत रखना सचमुच बड़ी साधना का काम है। फिर भी यह व्रत हर किसी को करना चाहिए। जल पान के निषिद्ध होने पर भी इस व्रत में फलाहार के पश्चात दूध पीने का विधान है। इस दिन व्रत करने वाले को चाहिए कि वह जल से कलश को भरे। उसे श्वेत वस्त्र ढक कर रखे तथा उस पर चीनी तथा दक्षिणा रखकर ब्राह्मणों को दान दें। स्त्रियां नहा–धोकर श्रृंगार करें और विधिपूर्वक शीतल जल से भरा कलश दान कर सास अथवा अपने से बड़ों का चरण स्पर्श करें। इस एकादशी व्रत के पश्चात द्वादशी को ब्राह्म–वेला में उठकर स्नान कर ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान देना चाहिए। इस एकादशी व्रत के दौरान अपनी शक्ति और सामर्थ्यानुसार ब्राह्मणों को अन्न, वस्त्र, छतरी, जूता, फल, जल से भरे कलश, पंखों और दक्षिणा देने का विधान है। प्रायः मिट्टी के घड़े अथवा सुराहियों, पंखा और अनाज का तो दान करते ही हैं, इस दिन

मीठे शर्बत की प्याऊ भी लगवाते हैं। इस दिन विधिपूर्वक जल कलश का दान करने वालों को वर्षभर की एकादशियों का फल प्राप्त हो जाता है।

**कथा**–एक दिन महर्षि व्यास ने पाण्डवों को इस एकादशी के व्रत का विधान तथा फल बताया। इस दिन भोजन करने के दोषों की जब वे चर्चा करने लगे तो भीमसेन ने कहा– 'हे पितामह! युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी और माता कुन्ती सभी एकादशी के दिन भोजन नहीं करते और मुझसे भी कहते हैं कि भीमसेन! इस एकादशी के दिन तुम भी व्रत करो। परंतु मैं तो बिना खाए रह नहीं सकता। मैं विधिपूर्वक दान दे दूंगा और भगवान वासुदेव की पूजा करके उन्हें प्रसन्न भी कर लूंगा। किंतु चौबीस एकादशियों पर निराहार रहने की कष्ट साधना से बचाकर मुझे कोई एक ऐसा व्रत बताइए जिसे करने में मुझे विशेष असुविधा भी न हो और वह फल भी मिल जाए, जो चौबीस एकादशी व्रत करने पर मिलता है। 'व्यासजी बोले'–हे वृकोदर! यदि तुम्हे स्वर्ग प्रिय है और तुम नरक में नहीं जाना चाहते हो तो दोनों पक्षों की एकादशियों में तुम्हें भोजन नहीं करना चाहिए। भीमसेन ने कहा– 'हे देव! एक समय के भोजन से तो मेरा निर्वाह न होगा। मेरे उदर में वृक नाम की अग्नि सदैव जलती रहती है। इसलिए अधिक मात्रा में भोजन करने पर भी मेरी भूख शांत नहीं होती है। हे ऋषिवर! आप कृपा करके मुझे कोई ऐसा व्रत बतलाइए जिसके करने से मेरा कल्याण हो। उसे मैं अवश्य ही विधिपूर्वक करूंगा। व्यासजी ने कहा– 'प्रिय भीम! ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को ही एकमात्र निर्जला व्रत किया करो। इस व्रत में स्नान–आचमन में जल ग्रहण करने का कोई दोष नहीं है। जितने पानी में एक माशा स्वर्ण की मुद्रा डूब जाए–ऐसा आचमन शरीर को शुद्ध करने वाला कहा गया है, इसे ग्रहण किया करो। अन्न बिल्कुल न ग्रहण करना। अन्न खाने से व्रत खण्डित हो जाता है। तुम सदैव इसी एकादशी का व्रत रखा करो। इस एकादशी का व्रत करने से अन्य तेबीस एकादशियों पर अन्न खाने का दोष (पाप) दूर हो जाएगा और साथ ही पूरे वर्ष की एकादशियों के व्रत का पुण्य लाभ भी प्राप्त होगा। भीम ने मात्र इस एक एकादशी का व्रत करने की महर्षि व्यास के सामने प्रतिज्ञा कर इस व्रत को किया और परिणाम स्वरूप प्रातः होते–होते वह संज्ञाहीन हो गया। तब पाण्डवों ने गंगाजल, तुलसी चरणामृत प्रसाद देकर उनकी मूर्च्छा दूर की। इस व्रत के करने से भीमसेन पापमुक्त हो गए।

**With Best Compliments**

# Paragon

*The Mobile Shop*



and all other mobile trusted brands are available under one roof..

**For More Detail Pls Contact**

Paragon
The Mobile Shop

**23, inside Udaipole Udaipur Contact No. 0294-2383373, 9829556439**

# शहनाई वालों का गांव मंझावान...

# हर घर से सुनाई देती है शहनाई

**बदलती जीवन शैली ने किसी भी क्षेत्र को अछूता नहीं छोड़ा। उत्तरप्रदेश के गांव मंझावान के शहनाईवादकों पर भी इसका असर देखा जा सकता है। अब तक शहनाईवादकों के रूप में जाना जाने वाला यह गांव आने वाले समय में शायद अपनी यह पहचान ही खो दें। बता रहे हैं - फैसल एफ...**

## एक ही समय पर बज उठते हैं राग

**कानपुर** जिले के मंझावान गांव की गलियों में घूमे तो आपके कानों में शहनाई के सुरीले स्वर पड़ेंगे। खास बात यह कि हर घर में से एक ही तरह के सुर सुनाई देंगे। इसका कारण ये है कि एक तो यहां के लगभग हर घर में शहनाई वादक हैं और दूसरा यहां हर राग बजाने के लिए समय निर्धारित है। निर्धारित समय पर संबंधित राग ही बजाया जाता है, उस समय कोई दूसरा राग बजाना अच्छा नहीं माना जाता। इन्हीं की भाषा में कहें तो सोते हुए राग को जगाना गलत माना जाता है। शास्त्रों में भी रागों का समय निश्चित है।

## दस पीढ़ियों से यही काम

**गांव** में पिछली 10 पीढ़ियों से शहनाई वादक रह रहे हैं। हर घर में शहनाई वादक हैं। अगर किसी के यहां नहीं है तो समझिए उसने तंगहाली में शहनाई उठाकर रख दी है। गांव के निवासी शकील बशीर, कल्लन, गुग्गल, शरीफ, रईस, सून, नबी और सभी के नाम के आगे मास्टर लगा हैं क्योंकि शहनाई वादक हैं। देश में शहनाई वादन का इतिहास कितना पुराना है। मंझावान निवासियों को इतना पता नहीं है क्योंकि शायद ही कोई पढ़ा लिखा है। हम पिछली 8-10 पीढ़ियों से यही रह रहे हैं। यानी 200-250 साल से। हम लोगों ने ये कला अपने नाना गुलाम हुसैन से सीखी।

## अब गुजारा भी मुश्किल

**शकील** मास्टर बताते हैं कि अब शहनाई से परिवार चलाना मुश्किल हो चला है। बदलते परिवेश में अब लोग शहनाई की मोहक ध्वनि पर ध्यान नहीं देते हैं। संगीत अब तेज हो गया है। ऐसे में शहनाई पिछड़ गई है। मंझावान के कुछ शहनाई वादक भी अनपढ़ रह गए और नए बोल नहीं सीख पाए। वैसे इनके पास काफी पुरानी किताबें हैं जिनमें सुर लिखे हुए है। नए किसी भी बोल का इस सुर की किताब से मिलान जरूरी होता है। मंझावान के ही शहनाई वादक निकल कर दिल्ली, वाराणसी, लखनऊ, महोबा, रीवा और ग्वालियर तक फैल गए है। पैसे न कमा पाने की एक वजह ये भी है कि इस शहनाई के गांव वाले अपने आप को ब्रांड के रूप में स्थापित नहीं कर पाए।

## दस साल लगते हैं सीखने में

**शहनाई** सीखने में 7-10 साल लग जाते हैं। मास्टर जलील के अनुसार उन्होंने 15 साल रियाज किया तब पारंगत हुए। जैसे-जैसे मांग कम हो रही है वैसे ही शहनाई भी छोटी होती जा रही है। पहले 22 इंच लंबी शहनाई होती थी। अब 16 इंच की रह गई है। सुरों के लिए शहनाई में छहों पर अंगुलियां चलाई जाती है। अब नए लड़के छोटी शहनाई बजा रहे हैं क्योंकि अगर सुर दूर हुए तो मेहनत ज्यादा लगेगी।

## बनारस से अभी भी है खास रिश्ता

**उस्ताद** बिस्मिल्लाह खान भले अब नहीं रहे, लेकिन बनारस से शहनाई का रिश्ता अभी भी बना हुआ है। शहनाई बनाने में लगने वाली लकड़ी का हिस्सा और सुर बजाने वाला हिस्सा दोनों बनारस से आते हैं। एक शहनाई लगभग 1600-1800 की तैयार हो जाती है। पहले शहनाई वादन को रजवाड़ों ने प्रश्रय दिया। हर शुभ कार्य पर शहनाई बजाई जाती थी। जब मुगल सल्तनत ढह रही थी। तब शहनाई वादक दूसरी जगह चले गए उनमें से कुछ उत्तरप्रदेश के कानपुर जिले में मंझावान में बस गए। लेकिन अब समाज में शहनाई वादन के कद्रदान नहीं बचे हैं और यहां के शहनाई वादक भी आजीविका के लिए दूसरी जगहों पर जाकर बस रहे हैं। जो यहां हैं, वे बुकिंग के लिए तरस रहे हैं। हालात ऐसे ही रहे तो शहनाई का यह गांव अपनी पहचान ही खो देगा।

# दिलकश अदाकारा माधुरी दीक्षित

*गायत्री पटेल*

**बॉलीवुड** में माधुरी दीक्षित का नाम एक ऐसी अभिनेत्री के रूप में लिया जाता है जिन्होंने अपनी दिलकश अदाओं से लगभग तीन दशक से दर्शकों के दिलो में अपनी खास पहचान बनाई है। माधुरी का जन्म 15 मई 1967 को मुंबई में एक मध्यमवर्गीय मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मुंबई से हासिल की। इसके बाद उन्होंने मुंबई यूनिवर्सिटी में 'माइक्राबॉयलोजिस्ट' बनने के लिए दाखिला ले लिया। इस बीच उन्होंने लगभग आठ वर्ष तक कथक नृत्य की शिक्षा भी हासिल की। माधुरी दीक्षित ने अपने फिल्मी करियर की शुरूआत 1984 में राजश्री प्रोडक्शन के बैनर तले बनी फिल्म 'अबोध' से की, लेकिन कमजोर पटकथा और निर्देशन के कारण फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह नकार दी गई। वर्ष 1984 से 1988 तक वह फिल्म इंडस्ट्री मे अपनी जगह बनाने के लिए संघर्ष करती रहीं। अबोध के बाद उन्हें जो भी भूमिका मिली वह उसे स्वीकार करती चली गयी। इस बीच उन्होंने स्वाति, आवारा, बाप, जमीन, मोहरे, हिफाजत और 'उत्तर- दक्षिण' जैसी कई दोयम दर्जे की फिल्मों में अभिनय किया लेकिन इनमें से कोई भी फिल्म बॉक्स आफिस पर सफल नहीं हुई। माधुरी दीक्षित की किस्मत का सितारा वर्ष 1983 में प्रदर्शित फिल्म 'तेजाब' से चमका। फिल्म में उनपर फिल्माया गीत 'एक दो तीन' उन दिनों श्रोताओं के बीच छा गया था। फिल्म की सफलता के बाद माधुरी दीक्षित फिल्म इंडस्ट्री में अपनी सही पहचान पाने में कुछ हद तक कामयाब हो गई। वर्ष 1990 में एक और महत्वपूर्ण फिल्म 'दिल' प्रदर्शित हुई। फिल्म में माधुरी दीक्षित और आमिर खान की जोड़ी को सिने दर्शकों ने काफी पसंद किया। वर्ष 1991 में उनकी 100 डेज, 'साजन', 'प्रहार' जैसी फिल्में प्रदर्शित हुईं। इनकी सफलता के

टिम कुक के साथ माधुरी दीक्षित

बाद माधुरी दीक्षित शोहरत की बुलंदियों पर जा पहुंची। वर्ष 1992 में माधुरी दीक्षित की एक और अहम फिल्म 'बेटा' प्रदर्शित हुई। वर्ष 1994 में राजश्री प्रोडक्शन के बैनर तले बनी फिल्म 'हम आपके है कौन' माधुरी दीक्षित की सर्वाधिक सुपरहिट फिल्मों में शुमार की जाती है। पारिवारिक पृष्ठभूमि पर बनी इस फिल्म में उनकी जोड़ी सलमान खान के साथ काफी पसंद की गई। इस फिल्म में उन पर फिल्माया गीत 'दीदी तेरा देवर दीवाना' उन दिनों श्रोताओं के बीच काफी लोकप्रिय हो गया था। फिल्म ने सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए। वर्ष 2002 में माधुरी दीक्षित को शरत चंद्र के मशहूर उपन्यास 'देवदास' पर बनी फिल्म में काम करने का अवसर मिला। संजय लीला भंसाली की इस फिल्म में 'चन्द्रमुखी' के अपने किरदार से उन्होंने दर्शकों का दिल जीत लिया और अपने दमदार अभिनय के लिए वह सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित की गई । माधुरी दीक्षित को पांच बार फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अलावा भारतीय सिनेमा में उनके योगदान को देखते हुए 2008 में उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। वे इन दिनों गीत-नृत्य के रियलटी शो में जज की भूमिका में देखी जा सकती हैं। एपल के सीईओ टिम कुक हाल ही भारत प्रवास पर आए। उन्होंने इस दौरान माधुरी से भेंट की।

# कच्चे आम का चटखारा

**हर साल की तरह बाजार में कच्चे-पके आम के ढेर लगे हैं। हर घर की रसोई से भी इनकी महक आने लगी है। गर्मी के मौसम में फलों का राजा हर रसोई की शान होता है। कुछ लोग कच्चा आम खाने के शौकीन हैं तो कुछ को पके आम का स्वाद बड़ा भाता है। इस बार हम बात करेंगे कच्चे आम यानी कैरी की, जो स्वाद के साथ-साथ शरीर को भी सेहतमंद बनाने में भी काफी मदद करती है।**

*अर्तिका*

**गर्मी** उफ ये गर्मी, मांग रहे हैं लोग पनाह। इस गर्मी में राहत के लिए ज्यादातर लोगों का पसंदीदा है-आम। आम चाहे कच्चो हो या पका हुआ, दोनों रूपों में लुभाता है। इससे जुड़ी न जाने कितनी यादें होंगी हम सबके मन में। नाना-दादी के घर में बड़ी-बड़ी बरनियों में भरकर रखे गए तरह-तरह के अचार, बाल्टियों में पानी भर कर उसमें डाले गए पके आम। आम आने पर सबसे बड़ा आम छांट कर रखना और भी न जाने क्या-क्या। गर्मियों में आम की सबसे पसंदीदा रेसिपी है इसका पना। इसके साथ आम-पुदीने की चटनी, आम प्याज की चटनी, आम पड़ी हुई दाल, सब्जियों में इस्तेमाल और भी बहुत कुछ। आम के बीसियों तरह के तो अचार ही बनाए जा सकते हैं। बाकी, जब जनाब पक जाते हैं तो सबकी पसंद तो बन ही जाते हैं। उससे भी आप शेक, स्मूदी से लेकर आइसक्रीम और बहुत सारे प्रयोग कर सकते हैं। आम की गुठली भी बेकार नहीं जाती। मुझे आज भी याद है कि कैसे दादी-नानी अचार बनाने के लिए बची हुई गुठली को भी दाल-सब्जियों में डालकर इस्तेमाल कर लेती थीं। स्वाद भी बेमिसाल हो जाता था। यानी आम के आम, गुठली के दाम। इस सबमें सबसे बढ़ कर है कच्चे आम की कढ़ी। इसे बेसन वाली कढ़ी का ही एक और रूप समझ लीजिए। आजमा कर देखिएगा जरूर।

आम उन चंद महारथी फलों में शामिल है, जिसकी पहुंच देश के कोने-कोने तक हैं। हर जगह अलग-अलग व्यंजनों में अलग-अलग तरीके से आम का इस्तेमाल किया जाता है। अगर बंगाल की बात करें तो यहां की आम दाल का नाम सुनते ही मुंह में पानी आ जाता है। आम दाल यानी मसूर की दाल में कच्चा आम। ऐसे ही दक्षिण भारत के व्यंजनों में चटनी से लेकर सब्जियों और सलाद तक में आम का इस्तेमाल होता है। मैंगों राइस तो हम सबका पसंदीदा है। ऐसे ही महाराष्ट्र में कैरिची डाल बहुत लोकप्रिय है। पारसी स्टाइल का मसाला ऑमलेट भी, जो कच्चा आम डालकर बनता है। मारवाड़ी स्टाइल की आम की लौंजी (खट्टा-मीठा अचार)।

*जी हां, कच्चे आम (कैरी) में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो शरीर में पौष्टिक तत्व की कमियों को पूरा कर स्वस्थ बनाए रखते हैं।*

***खून साफ करें:*** *कच्ची कैरी में ऐसे तत्व होते हैं जो खून को साफ करने में काफी मदद करते हैं। रक्त संबंधी कैसी भी समस्या हो, इसके सेवन से दूर हो जाती है।*

***पेट में गैस:*** *जिन लोगों को पेट में गैस की समस्या रहती है, उन लोगों के लिए यह रामबाण इलाज है। इसलिए पेट में गैस होने पर इसका सेवन करें।*

***डायबिटिज:*** *डायबिटिज में कच्ची कैरी एक दवा की तरह काम करती है।*

***उल्टी आने पर-*** *यदि किसी को बार-बार उल्टी आ रही हो या फिर जी- मचलाने की समस्या हो तो ऐसे में कच्ची कैरी का सेवन काले नमक के साथ करें।*

## मैंगो कढ़ी

**सामग्री:** 10 बड़े चम्मच कच्चे आम (कटा हुआ), 6 बड़े चम्मच नारियल (कद्दूकस किया हुआ), 1 बड़ा चम्मच हरा धनिया (कटा हुआ), 1 छोटा चम्मच अदरक (कटा हुआ), एक छोटा चम्मच हल्दी, एक छोटा चम्मच धनिया पाउडर, एक छोटा चम्मच गुड़ पाउडर, थोड़ी सी हींग, 10-12 करी पत्ते, 2 साबुत सूखी लाल मिर्च, 2 छोटे चम्मच घी, हरी मिर्च व नमक स्वादानुसार।

**विधि:** कच्चे आम को आधा कप पानी में पका लें। मिक्सी में थोड़ा पानी डालकर नारियल, हरि मिर्च, धनिया और अदरक पीस लें। इसमें आम वाला मिश्रण डालकर फिर से पीसें। एक कड़ाही में घी गरम करें। उसमें सरसों के बीज, मेथी के बीच, जीरा, करी पत्ता, साबुत लाल मिर्च, हींग और हल्दी, धनिया पाउडर डालकर मध्यम, आंच पर लगभग एक मिनट तक पकाएं। इसमें नारियल और आम वाला मिश्रम डाल दें। 2 बड़े कप पानी, नमक और गुड डालकर अच्छी तरह मिलाएं। मध्यम आंच पर कुछ देर तक पकाएं। बीच-बीच में मिश्रण को चलाना न भूलें। जब आपकी कढ़ी तैयार हो जाए तो ऊपर से एक बार और तड़का लगा सकते हैं और डाल सकते हैं कटा हुआ हरा धनिया भी।

# मज़दूरी की मज़बूरी
# बचपन को बचाएं

*देवेन्द्रराज सुथार*

**भारत में तमाम आर्थिक विकास के बावजूद निर्धनता एक बड़ी समस्या है। भारत की एक तिहाई से अधिक आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करती है। निर्धन परिवारों के पास अपने बच्चों को पढ़ाने के बजाए काम पर रखने के अलावा कोई विकल्प नहीं हैं। अक्सर आर्थिक दबाव को कम करने और अतिरिक्त धन प्राप्त करने के लिए इन बच्चों को उनके माता-पिता द्वारा बाल तस्करों को बेच दिया जाता है।**

**बच्चे** देश का वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य भी होते हैं। किसी देश के बच्चे वर्तमान में जितने महफूज व सुविधा सम्पन्न होंगे, जाहिर है कि उस देश का भविष्य भी उतना ही उज्वल होगा। लेकिन जो सपने हमारे महापुरुषों ने बच्चों के खुशहाल जीवन को लेकर देखे थे, वे अब सवाल की शक्ल ले चुके हैं। यह दुर्भाग्य ही है कि निरंतर विकास की राह में गतिमान, भारत में आज भी करोड़ों बच्चे दो जून की रोटी के लिए मोहताज हैं। जिस उम्र में बच्चों के हाथों में स्कूल जाने के लिए किताबों से भरा बस्ता होना चाहिए, उस उम्र में उनके सिर पर मजदूरी का बोझा है। बाल श्रम अधिनियम के मुताबिक देश में 14 वर्ष से कम बच्चों से मजदूरी व जोखिम वाला काम करवाना अपराध है, इसके बावजूद बच्चों से जोखिम वाले काम करवाने का सिलसिला बदस्तूर जारी है। गौरतलब है कि देश में 8.3 मिलियन से अधिक बाल मजदूर हैं, जिनकी उम्र 5 से 14 साल के बीच है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन बाल श्रम को ऐसे काम के रूप में परिभाषित करता है जो बच्चों को उनके बचपन, उनकी क्षमता और उनकी गरिमा से वंचित करता है तथा जो शारीरिक और मानसिक विकास के लिए हानिकारक है। बाल श्रम कई अलग-अलग गतिविधियों जैसे कृषि, निर्माण, खनन और घरेलू सेवा में फैला हुआ है। अलग- अलग कारणों से बच्चों को बाल श्रम के लिए मजबूर किया जाता है। प्रवास, आपात स्थिति, अच्छे काम की उपलब्धता की कमी और निर्धनता जिसे सबसे अधिक प्रभावित करने वाले कारक के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा बच्चों पर अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए भारी तनाव होता है, क्योंकि ज्यादातर मामलों में इनके पास आय का कोई अन्य साधन नहीं होता है। बाल श्रम के कारण छोटी उम्र में बच्चों को शारीरिक व मानसिक आघात झेलना पड़ता है। हिंसा का सामना करने वाले ये बच्चे बड़े होकर मानसिक, बीमारियों जैसे अवसाद, अपराधबोध, चिंता, आत्मविश्वास की कमी और निराशा के शिकार हो जाते हैं। बाल श्रम: भारत के साथ अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और यहां तक कि यूरोप में कई जगहों पर मौजूद हैं। भारत के मुख्य राज्य जहां बाल श्रम मौजूद है, वे बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र हैं। ये वे राज्य हैं जहां देश की कुल आधे से अधिक बाल श्रमिक आबादी काम करती है। उत्तर प्रदेश में बाल श्रमिकों की संख्या सबसे अधिक है, जिसमें भारत के 20 प्रतिशत से अधिक बाल श्रमिक अकेले इस राज्य के निवासी है। इनमें से अधिकतर बाल मजदूर रेशम उद्योग में कार्यरत हैं जो इस क्षेत्र में प्रचलित है। पांच साल से कम उम्र के बच्चे सप्ताह में सात दिन, दिन में बारह घंटे से अधिक कारखानों में काम करते हैं।

भारत में तमाम आर्थिक विकास के बावजूद निर्धनता एक बड़ी समस्या है। भारत की एक तिहाई से अधिक आबादी. गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करती है। रहने की खराब स्थिति, आय के निम्न स्तर और रोजगार की कमी के कारण निर्धन परिवारों के पास अपने बच्चों को पढ़ाने के बजाए काम पर रखने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। अक्सर, आर्थिक दबाव को कम करने और अतिरिक्त धन प्राप्त करने के लिए इन बच्चों को उनके माता-पिता द्वारा बाल तस्करों के हाथों बेच दिया जाता है। भारत में बाल श्रम से निपटने के लिए पिछले कुछ दशकों में कई कानून लागू हुए हैं। इन कानूनों में 1976 का बंधुआ श्रम (उन्मूलन) प्रणाली अधिनियम और 2016 का बाल श्रम (निषेध और विनियमन) संशोधन विधेयक शामिल है। भारत सरकार ने बच्चों के शोषण की जांच के लिए गुरुपदस्वामी जैसी समितियों और संस्थानों का भी गठन किया है। श्रम और रोजगार मंत्रालय ने भी 1980 के दशक के उत्तरार्ध से बाल श्रमिकों के पुनर्वास, के लिए कई परियोजनाओं को लागू किया है। बाल श्रम को समाप्त करने की लड़ाई में सरकार की मदद करने के लिए केयर इंडिया, चाइल्ड राइट्स एंड यू ए हैंड इन हैंड इंडिया जैसे गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) की स्थापना की गई है। कड़वी हकीकत है हमारे समाज ने किसी न किसी तरह बाल श्रम को एक सामाजिक आदर्श के रूप में स्वीकार किया है। जब हम एक समाज के रूप में इस शोषणकारी और अपमानजनक प्रथा के प्रति जीरो टॉलरेंस का रवैया अपनाएंगे, तभी हम इसे समाप्त कर पाएंगे। इन बच्चों को बचाना ही एकमात्र समाधान नहीं है। इनके लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारत में बाल श्रम व इसके शोषण को रोकने के लिए बाल श्रम के खिलाफ कानूनों को और अधिक सख्ती से लागू किया जाना चाहिए। इसके अलावा भारत में बाल श्रम को समाप्त करने के लिए गरीबी और असमानता को दूर करना महत्वपूर्ण है। गरीबी और बाल श्रम के दुष्चक्र को तोड़ने के लिए शिक्षा तक पहुंच जरूरी है। समझना होगा की कोई देश तभी विकास के नित नए सोपान तय कर सकता है, जब उस देश के बच्चे. शारीरिक, मानसिक व शैक्षणिक रूप से समृद्धशाली हो। बालश्रम, बंधुआ मजदूरी, बाल विवाह, बाल वेश्यावृत्ति, आदि कुछ ऐसी सामाजिक बुराइया हैं, जिनकी बुनियाद समाज में व्याप्त अशिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी से बनती है।

**( ये लेखक के अपने विचार हैं )**

प्रत्यूष

# इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

## मेष

माह का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठफल कारक है। बिगड़े कार्यों में सुधार, धनागमन होगा। दैनन्दिन जीवन में अनुकूल परिस्थितियां बनेंगी, किंतु व्यवसाय में दौड़–धूप तथा परेशानियां रहेंगी। अपने कॅरियर के प्रति चिंता बनी रहेगी। संतान पक्ष से कष्ट संभव, अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, संक्रमण से बचें।

## वृषभ

शारीरिक कष्ट के साथ अनियोजित खर्च में वृद्धि, श्रेष्ठ व्यक्तियों से सम्पर्क लाभकारी सिद्ध होगा। भाई–बंधुओं के साथ मन–मुटाव, सिरदर्द एवं आंखों में परेशानियां हो सकती हैं, गले से संबंधित रोग उभर सकता है। स्थायित्व के कार्यों पर ज्यादा ध्यान दें। भाग्य का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

## मिथुन

माह के पूर्वार्द्ध में अनपेक्षित लाभ की संभावना, परंतु व्यर्थ की भागदौड़ से परेशानी होगी और खर्च भी बढ़ेगा। मानसिक तनाव रहेगा, आगामी कार्य योजना बनाने में अधिक समय व्यतीत होगा। संतान के कॅरियर को लेकर चिंता बनी रहेगी, अकस्मात रोगोत्पति से परिवार में चिंता होगी।

## कर्क

व्यवसाय को लेकर परेशानी हो सकती है। अनेक विघ्न–बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आय में कमी, शत्रु परेशान कर सकते हैं। पारिवारिक परेशानियों से क्रोध में वृद्धि, बना–बनाया कार्य बिगड़ सकता है। संक्रमण से बचाव करें। व्यर्थ की चिंता से बचें, बनते कार्यों में विलम्ब संभव।

## सिंह

उत्साह एवं पुरूषार्थ में वृद्धि, परंतु क्रोध एवं उत्तेजना के कारण हानि की संभावना, पिता का सहयोग मिलेगा। परिवार में मतभेद उभर सकते हैं। धैर्य एवं विवेक से शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देंवे। आय पक्ष मजबूत रहेगा। अपने से बड़ों से सामंजस्य बनाकर चलें।

## कन्या

माह के पूर्वार्द्ध में कुछ सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी, मांगलिक कार्यों में समय एवं धन का व्यय होगा। माह के उत्तरार्द्ध में सुख–साधनों में वृद्धि होगी, विदेश यात्रा के दौरान सफलता मिलेगी, मानसिक तनाव बढ़ सकता है, आकस्मिक स्वास्थ्य में गिरावट

## तुला

मानसिक एवं शारीरिक कष्ट, लाभ कम, खर्च अधिक होगा। व्यवसाय एवं कार्य क्षेत्र में हानि की संभावना रहेगी। माह के उत्तरार्द्ध में भी व्यर्थ की भागदौड़, स्थायी संपत्ति में निवेश कर सकते हैं। मन के अंदर भय बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन एवं साझेदारी में कटुता का अनुभव होगा।

## इस माह के पर्व/त्योहार

| | | |
|---|---|---|
| 1 मई | वैशाख शुक्ल एकादशी | मजूदर दिवस/ मोहिनी एकादशी |
| 5 मई | वैशाख शुक्ल पूर्णिमा | बुद्ध जंयती/ गुरु गोरखनाथ जयंती |
| 6 मई | ज्येष्ठ कृष्णा प्रथमा | नारद जयंती |
| 7 मई | ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया | टैगोर जयंती |
| 14 मई | ज्येष्ठ शुक्ल दशमी | विश्व मातृ दिवस |
| 18 मई | ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी | श्री शांतिनाथ दीक्षा कल्याणक |
| 22 मई | ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया | महाराणा प्रताप जयंती |
| 23 मई | ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी | गुरु अर्जुनदेव शहीद दिवस |
| 27 मई | ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी | पं.जवाहर लाल नेहरू पुण्यतिथि |
| 31 मई | ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी | निर्जला एकादशी |

## वृश्चिक

पराक्रम में वृद्धि, विघ्न–बाधाओं के बावजूद व्यावसायिक कार्यों में सफलता, परिवार में मतभेद संभव, पिता को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। जमीन जायदाद के क्रय–विक्रय की योजना बनेगी। स्वभाव में उग्रता रहेगी। किसी भी कार्य में उत्तेजना एवं जल्दबाजी से बचना होगा, स्वास्थ्य एवं धन की चिंता रहेगी।

## धनु

व्यवहार कुशलता के कारण कार्यों में सफलता मिलेगी। तीर्थ यात्रा के योग हैं, शारीरिक कष्ट या चोट आदि का भय बना रहेगा। स्वयं के कर्म एवं पुरुषार्थ के बल से भाग्योदय, पेट संबंधित कष्ट, संतान पक्ष से सुखी। सिरदर्द व मानसिक तनाव रहेगा। भाई–बहिनों के सहयोग से लाभ मिल सकता है।

## मकर

पैतृक मामले आपके पक्ष में होंगे। राजनीति एवं प्रशासनिक कार्यों से जुड़े व्यक्तियों को आशातीत लाभ मिलेगा। निरंतर पुरुषार्थ के बावजूद आय में कमी रहेगी, रास्ते चलते व्यर्थ का बोझ अपने ऊपर आ सकता है, स्थान परिवर्तन के भी योग बनेंगे। भाई–बंधुओं से मनमुटाव संभव।

## कुम्भ

शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक तनाव भी संभव। अपने निकटस्थ बंधुओं तथा सगे–संबंधियों से टकराव की स्थिति संभव, आपका अधिकांश समय व्यर्थ के कार्यों में खर्च होगा, आय पक्ष में भी कमी बनी रहेगी, निकटवर्ती भी पराये जैसा बर्ताव करेंगे। माह का उत्तरार्द्ध सुकून भरा है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

## मीन

आय के साधन बढ़ेंगे। कार्यस्थल एवं सामाजिक परिवेश में उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। भाग्य एवं धन के बल पर आपके अंदर कार्य के प्रति उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, भौतिक सुखों में वृद्धि, भूमि वाहन आदि के क्रय–विक्रय की योजना बनेगी, गर्भवती स्त्रियां विशेष सावधानी बरतें।

## अनंता के छात्र निरंतर रहे अव्वल

**राजसमंद।** अनंता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च सेंटर के वर्ष 2021-22 बैच के विद्यार्थियों ने आरयूएचएस से संबद्ध करीब 22 मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस में प्रदेश की वरीयता सूची में प्रथम व पांचवें स्थान में नाम दर्ज करवाया। डॉ. दीपिका शर्मा बैच 2016 -17 जो लगातार एमबीबीएस के संपूर्ण पाठ्यक्रम के दौरान पूरे राजस्थान की वरीयता सूची में प्रथम स्थान पर रही हैं, उन्हें जयपुर में आयोजित दीक्षांत समारोह में स्वर्ण पदक दिया जाएगा। अनंता के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर डॉ. नितिन शर्मा ने बताया कि एमबीबीएस के परिणाम के विदित गांधी ने प्रदेश में प्रथम, सविज्ञा सोनी ने

5वां, रितिक कुमार जाटिया ने 18वां स्थान प्राप्त किया। वहीं मुस्कान सोमानी व इशिका सक्सेना ने कॉलेज वरीयता सूची में चौथा व पांचवा स्थान बनाया। इसके अलावा सत्र 2019-20 में अवंतिका शर्मा पूरे राजस्थान में दूसरे स्थान पर रही, कॉलेज में अमीषा जैन, दीप्ति राठौर, अमन सोनी व सिमरजोत के धमीजा क्रमशः दूसरे, तीसरे, चौथे व पांचवे स्थान पर रहे। वही कॉलेज वरीयता में सत्र 2020-21 में हिया विष्णोई प्रथम, उम्मे कुलसुम दूसरे, आदित्य कुमार तीसरे, दिव्यांशी चौथे और निकिता अग्रवाल पांचवें स्थान पर रहे। सत्र 2018-19 में राघव अग्रवाल प्रथम, भावना कंवर देवड़ा दूसरे, कनिका शर्मा तीसरे, हर्षवर्धन शर्मा चौथे, श्वेता शर्मा पांचवें स्थान पर रहे। प्रिंसिपल एवं कंट्रोलर डॉ. संध्या प्रांजल मांजरेकर ने डॉ. दीपिका शर्मा को बधाई दी।

## सिंधी समाज सम्मान समारोह

**उदयपुर।** झूलेलाल सेवा समिति की ओर से टाउनहॉल रंगमंच पर सम्मान समारोह हुआ। समिति अध्यक्ष प्रतापराय चुघ ने बताया कि कलेक्टर ताराचंद मीणा और पूर्व यूडीएच मंत्री श्रीचंद कृपलानी ने समाजजनों का सम्मान किया। इसमें सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी को सिन्धु रत्न, युवा व्यवसायी उमेश मनवानी, साहित्यकार हरीश तलरेजा व तैराक युग चेलानी का सम्मान किया गया। इस दौरान सुनील खत्री, किशोर झम्बानी, मुरली राजानी, विजय आहुजा, किशन वाधवानी, हरीश सिधवानी, राहुल निचलानी आदि मौजूद रहे।

## डॉ. महात्मा अध्यक्ष बने

**उदयपुर।** चित्तौड़गढ़ के सावा स्थित श्री नागोरिया भैरव देवालय जैन ट्रस्ट में समाजसेवी डॉ. ओ.पी. महात्मा के सर्व सम्मिति से अध्यक्ष निर्वाचित होने पर हिंद सेवा मानव कल्याण ट्रस्ट के दिव्यकुमार व बी.एल. चंदेल, जय हनुमान रामचरित मानस समिति के पं. सत्यनारायण चौबीसा, लोक सेवा संस्थान के कुंवर विजय सिंह कच्छारा व प्रयास संस्थान के राजा भंडारी ने उनका अभिनंदन किया।

## रॉयल हीरो मोटर्स पर नई बाइक सुपर स्पलेंडर एक्स-टेक लॉन्च

**उदयपुर।** रॉयल हीरो मोटर्स पर हीरो की नई बाइक सुपर स्पलेंडर एक्स-टेक लॉन्च की। जिसे हीरो मोटो कॉर्प लिमिटेड के जोनल हेड संजय सिंह और राजस्थान के रीजनल मैनेजर गौरव ने शोरूम पर पहले ग्राहक कमलेश को गाड़ी की चाबी देकर लॉन्च किया। इस दौरान निदेशक शेख शब्बीर के मुस्तफा ने बताया कि नई सुपर स्पलेन्डर में डिजिटल मीटर, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, हीरो की एक्स टेंक नई टेक्नोलॉजी के साथ है। मैनेजर विक्रम सोनी ने ग्राहकों का आभार जताया।

## श्याम देवपुरा को 'हिंदी-मित्र सम्मान'

**नारनौल।** हिंदी देश से विदेश तक पहुंच गई। संयुक्त राष्ट्रसंघ में उसे आधिकारिक भाषा की मान्यता के प्रयास भी हो रहे हैं, लेकिन देश में इसकी स्थिति आजादी के 75 साल भी सन्तोषजनक नहीं है। यह बात साहित्य मंडल, नाथद्वारा के प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा ने यह मनुमुक्त 'मानव' मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा 'हिंदी की वर्तमान स्थिति और भविष्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में कही। यहां उनका व साहित्य मंडल की कार्यक्रम संयोजिका ललिता देवपुरा का अभिनन्दन भी किया गया। उन्हें 'हिन्दी मित्र सम्मान' प्रदान किया गया।

## बच्चों का रैंप वॉक

**उदयपुर।** न्यू भूपालपुरा स्थित सेंट्रल पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल में नन्हें बच्चों के लिए पर्यावरण थीम पर फैशन शो कदम सीजन-3 का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि एडीएम प्रशासन ओपी बुनकर, विशिष्ट अतिथि डॉ. पारूल गौतम, निदेशक दीपक शर्मा, रॉकवुड्स इंटरनेशनल प्राचार्य वसुधा नीलमणि, एम स्क्वायर प्रोडक्शन हाउस संस्थापक मुकेश माधवानी और क्रिएशन ग्रुप संस्थापक राजेश शर्मा थे। बच्चों ने रैंप वॉक कर पर्यावरण बचाने का संदेश दिया। इस दौरान संयुक्त निदेशक विक्रम जीत सिंह शेखावत, प्राचार्य पूनम राठौड़, राजेश शर्मा, चेयरपर्सन अलका शर्मा, प्रशासकीय निदेशक अनिल शर्मा, प्रधानाध्यापिका कृष्णा शक्तावत आदि मौजूद थे।

## नाहर चेयरमैन, पोरवाल सचिव

**उदयपुर।** जैन सोशल ग्रुप मेवाड़ रिजन की वर्ष 2023-25 की नई कार्यकारिणी में चेयरमैन अनिल नाहर, निवर्तमान अध्यक्ष और अन्तरराष्ट्रीय निदेशक मोहन बोहरा, अध्यक्ष निर्वाचित अरूण मांडोत, उपाध्यक्ष रोशनलाल जोधावत, सुभाष मेहता, पारस धेलावत, सचिव महेश पोरवाल, संयुक्त सचिव आशुतोष सिसोदिया, संयुक्त सचिव हिमांशु मेहता, कोषाध्यक्ष गजेंद्र जोधावत, पीआरओ अर्जुन खोखावत, प्रीतेश जैन को चुना गया।

## डॉ. अरविन्दर को फादर ऑफ कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी अवार्ड

**उदयपुर।** अर्थ ग्रुप के सीइओ तथा वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर डॉ. अरविन्दर सिंह को दिल्ली में सम्पन्न इंटरनेशनल फेम अवार्ड समारोह में अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी ने फादर ऑफ कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी अवार्ड प्रदान किया। उन्हें यह वार्ड अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी, क्वालिटी मानकों, उत्कृष्ट पेशेंट सर्विसेज जैसे मापदंडों के आधार पर प्रदान किया गया। इस अवार्ड का एक और प्रमुख आधार डॉ. सिंह द्वारा इंटरनेशनल बोर्ड ऑफ कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी, लंदन की स्थापना रहा। इसमें कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी के डिप्लोमा, सर्टिफिकेट्स आदि अंतरराष्ट्रीय मानकों के आधार पर मेडिकल छात्रों को ट्रेनिंग के बाद प्रदान किए जाएंगे।

## पियाजिओ के नए ई-वाहन लॉन्च

**उदयपुर।** इटली की पियाजियो व्हीकल्स के दो नए इलेक्ट्रिक वाहन तिपहिया लोडिंग व पैसेंजर इलेक्ट्रिक थ्री व्हीलर डीलर सचिन मोटर्स ने कलेक्ट्रेट परिसर में जिला कलेक्टर तारा चंद मीणा व डीटीओ कल्पना शर्मा से फीता कटवाकर लॉन्च करवाए। सचिन मोटर्स के निदेशक सुभाष सिंघवी ने बताया कि वाहन का खर्चा प्रति किमी मात्र 40 पैसे आता है। साढ़े तीन घंटे चार्ज होने के बाद ये 120 किमी तक चलेंगे।

## बड़ोला ह्यूंडई पर न्यू वर्ना का लोकार्पण

**उदयपुर।** बड़ोला ह्यूंडई शोरूम पर यूसीसीआई के अध्यक्ष संजय सिंघल ने न्यू वर्ना का लोकार्पण किया। यूसीसीआई के वाइस प्रेसीडेंट अंशुल कोठारी ने महिला ग्राहकों को दिए जा रहे विशेष ऑफर्स की सराहना की। इस दौरान निदेशक दिलीप तलेसरा, रोहित बड़ोला, डायरेक्टर नक्षत्र तलेसरा आदि मौजूद थे। निदेशक विवेक बड़ोला ने बताया कि नई वर्ना में पैरामेट्रिक एलईडी लैंप, बॉस म्यूजिक सिस्टम, जिगजैग डेशबोर्ड, 6 एयरबैग, टायर प्रेशर नियंत्रण के साथ वीएसएम व हिल कंट्रौल जैसे फीचर मिलेंगे।

## सालभर राशन फ्री योजना का ड्रॉ निकाला

**उदयपुर।** उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार की सालभर राशन फ्री योजना का तीसरा ड्रा गत दिनों सुपर मार्केट शास्त्री सर्कल में खोला गया। महाप्रबन्धक आशुतोष भट्ट ने बताया कि सुपर मार्केट शास्त्री सर्कल से अनिल कुमार भट्ट और सुपर मार्केट सेक्टर-4 से रमेश कुमार विजेता रहे। दोनों को सालभर तक एक-एक हजार रूपए का राशन प्रतिमाह फ्री मिलेगा। मुख्य अतिथि गिर्वा एसडीएम सलोनी खैमका थी। महाप्रबंधक ने बताया कि योजना के तहत भण्डार के 17 सुपर मार्केट से जो उपभोक्ता 1000 रूपए से अधिक की सामग्री खरीदता है, उसका नाम ड्रॉ में शामिल किया जाता है और वह सालभर का राशन मुफ्त योजना में भाग ले सकता है।

## भटनागर सदस्य नियुक्त

**उदयपुर।** रणथंभोर टाइगर रिजर्व के पूर्व फील्ड डायरेक्टर रिटायर्ड आईएफएस और ग्रीन पीपल सोसायटी के अध्यक्ष वरिष्ठ पर्यावरणविद् राहुल भटनागर को भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण का विशेषज्ञ सदस्य नियुक्त किया गया है। भटनागर के साथ डब्ल्यूडब्ल्यूएफ इंडिया के महासचिव रवि सिंह व देशभर के 6 अन्य विशेषज्ञों को भी एक्सपर्ट मेंबर नियुक्त किया गया है।

## महात्मा ज्योति बा फुले जयंती समारोह

**उदयपुर।** सावित्री बाई फुले पर्यावरण एवं शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित रामकिशन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गुरूकुल महाविद्यालय के गुरूकुल संकुल परिसर, गांव बुढ़ल, पंचायत लालपुरा, उदयपुर में गत दिनों महात्मा ज्योति बा फुले की 196वीं जयंती एवं प्रथम दीक्षांत समारोह मनाया गया। विशिष्ट अतिथि जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति शिवसिंह सारंगदेवोत, मोतीलाल सांखला, अध्यक्ष ज्योति बा फुले जागृति मंच एवं सदस्य गो मंत्रालय, मुख्य वक्ता वल्लभनगर विधायक प्रीति शक्तावत, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष कैलाश मेघवाल, दिनेश माली, संस्थापक सावित्री बाई फुले पर्यावरण एवं शिक्षण संस्थान दिवाकर माली, निदेशक, सावित्री बाई फुले पर्यावरण एवं शिक्षण संस्थान, डॉ. मनीष सक्सेना, सहनिदेशक, सावित्री बाई फुले पर्यावरण एवं शिक्षण संस्थान मौजूद रहे। इस अवसर पर पौधरोपण किया गया। अतिथियों ने ज्योति बा फुले की जीवनी से संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। राजकीय एवं निजी विद्यालयों के कक्षा 10 एवं 12 के 40 मेधावी छात्रों को प्रशंसा पत्र एवं मेडल देकर सम्मानित किया गया।

## 'ब्राह्मण वर्ड' में त्रिपाठी का भी नाम

**उदयपुर।** समाजसेवी मावली निवासी बसंत त्रिपाठी का नाम अंतरराष्ट्रीय ब्राह्मण संसद इंग्लैंड द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'ब्राह्मण वर्ड' में शामिल किया गया है। उनके अलावा अन्य ब्राह्मण प्रतिभाओं के नाम भी इसमें शामिल हैं।

## चित्तौड़ा को उदयपुर रत्न अवार्ड

**उदयपुर।** राजस्थानी संस्कृति एवं साहित्य संस्थान द्वारा आयोजित तीसरे उदयपुर रत्न अवार्ड समर्पण समारोह में सूक्ष्म कृति शिल्पकार चंद्र प्रकाश चित्तौड़ा को सम्मानित किया गया। उन्हें किन्नर अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर डॉ. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने सम्मानित किया। समारोह में कुल 21 प्रतिभाओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में सौरभ पालीवाल विशिष्ट अतिथि थे। अध्यक्षता आकाशवाणी उदयपुर केन्द्र के कार्यक्रम अधिशासी महेन्द्र सिंह लालस ने की। संयोजन भावना व्यास व शालिनी भटनागर ने किया। स्वागत प्रिंकेश जैन व रोहित बंसल ने किया। सम्मानित होने वालों में स्नेक केचर चमन सिंह व शहीद ले. मुस्तफा की माता भी थीं।

## पूर्व विधानसभा अध्यक्ष का अभिनंदन

**उदयपुर।** पूर्व विधान सभा अध्यक्ष शांति लाल चपलोत का जैन भवन नई दिल्ली में ऑल इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस में अभिनंदन किया गया। इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष आनंद मल छलानीं, कार्याध्यक्ष अशोक मेहता, राजस्थान प्रांतीय अध्यक्ष निर्मल पोखरना, राष्ट्रीय मंत्री कांतिलाल जैन, अम्बालाल लोढ़ा, दिनेश चोर्डिया, प्रमोद खाब्या, लक्ष्मीलाल वीरवाल व सम्पत लोढ़ा भी उपस्थित थे।

## सेमा मित्र मंडल ने मनाया फूलडोल उत्सव

**उदयपुर।** सेमा मित्र मंडल ट्रस्ट का 12वां फूलडोल महोत्सव उदयपुर में हर वर्ष की भांति महालक्ष्मी मंदिर प्रांगण में हुआ। जिसमें गांव सेमा से सर्व समाज के प्रतिनिधि ठाकुर जी चारभुजा जी के साथ पधारे। कार्यक्रम में 5 बार गाई खेली गई। चौथी गाई में स्वयं चारभुजानाथ भक्तों के साथ खेले और आशीर्वाद दिया। शोभायात्रा रंगनीवास से भटियानीचौहट्टा स्थित महालक्ष्मी मंदिर पहुंची। जहां आरती व फूलडोल के बाद गूगल माल तलवारबाजी, अखाड़ा प्रदर्शन हुआ। मातृशक्ति ने गरबा नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सेमा निवासी जगदीशराज श्रीमाली को राजस्थान सरकार द्वारा श्रम सलाहकार बोर्ड का उपाध्यक्ष पद देकर (राज्यमंत्री दर्जा) देने पर अभिनन्दन किया गया। सेमा मित्र मंडल के हरीश त्रिवेदी ,रोशन कोठारी, कृष्ण गोपाल ओझा व ललित श्रीमाली ने उन्हें उपरना, शॉल, पगड़ी पहनाकर अभिनंदन किया। इस अवसर पर हल्दीघाटी स्थित महाराणा प्रताप संग्राहलय के संस्थापक मोहन श्रीमाली का भी अभिनन्दन किया गया।

## बाल कल्याण समिति में सदस्यों ने कार्यभार संभाला

**उदयपुर।** बालकों की देखरेख, संरक्षण एवं विधि से संघर्षरत किशोरों से सम्बंधित प्रकरणों के निस्तारण हेतु राज्य सरकार द्वारा नवगठित बाल कल्याण समिति, एवं किशोर न्याय बोर्ड, उदयपुर में नामित सदस्यों अंकुर टांक, यशोदा पणिया, डॉ. संगीता राव ने बाल कल्याण समिति उदयपुर में एवं डॉ. सैयद रिजवाना रिजवी व रेखा कुमारी चौहान ने किशोर न्याय बोर्ड में नए सदस्य के रूप में कार्यभार संभाला। इस अवसर पर राजकीय संप्रेक्षण एवं किशोर गृह उदयपुर के अधीक्षक एवं सहायक निदेशक, सामाजिक न्याय, अधिकारिता विभाग के.के. चंद्रवंशी, बाल कल्याण समिति के पूर्व अध्यक्ष ध्रुव कुमार कविया एवं सदस्य शिल्पा मेहता भी उपस्थित थे।

## निवेश प्रोत्साहन पर व्याख्यान

**उदयपुर।** भारतीय उद्योग परिसंघ (सी आइआइ) राजस्थान की ओर से श्रम संहिता और राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना पर सत्र का आयोजन गत दिनों हुआ। केपीएमजी इंडिया के पार्टनर विनीत अग्रवाल ने कहा कि कर्मचारियों और नियोक्ता के लिए नए लाभकारी प्रावधान और अधिक कठोर दंड प्रावधान पेश किए गए हैं। अप्रत्यक्ष कर केपीएमजी इंडिया निदेशक हिमांशु सिक्का ने कहा कि रिप्स 2022 देश में मौजूदा औद्योगिक नीतियों पर एक अहम सुधार है। सीआइआइ अध्यक्ष कुणाल बांगला ने स्वागत किया। उन्होंने कहा कि रिप्स प्रगतिशील नीति है, जिसका उद्देश्य बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करना है। वरिष्ठ निदेशक नितिन गुप्ता ने भी विचार रखे। सत्र में उदयपुर के उद्योग जगत के 80 से ज्यादा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

## डॉ. भाणावत ग्रेट इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज

**उदयपुर।** करेंसी नोटों के संग्रहकर्ता डॉ. विनय भाणावत का नाम ग्रेट इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है। डॉ. भागावत ने 10 रूपए के नोटों में 786 संख्या वाले 99450 अवितरित नोटों का संग्रह कर कीर्तिमान स्थापित किया है। उन्हें सोलापुर (महाराष्ट्र) स्थित कार्यालय से सम्मान स्वरूप प्रमाण-पत्र व पदक जारी किया गया। उक्त सम्मान यहां आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. विपिन माथुर ने उन्हें प्रदान किया।

## फिल्ड क्लब चुनाव: मनवानी सचिव, चोर्डिया उपाध्यक्ष व मेहता कोषाध्यक्ष

**उदयपुर।** शहर के प्रतिष्ठित फील्ड क्लब के गत दिनों सम्पन्न चुनाव में उमेश मनवानी सेक्रेट्री व राकेश चोर्डिया वाइस प्रेसिडेंट चुने गए। सेक्रेट्री पद पर चुने गए मनवानी 997 वोट लेकर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी डॉ अनुज शर्मा ने 459 वोट से विजयी रहे। वहीं वाइस प्रेसिडेंट पद पर चुने गए चोरड़िया ने 986 वोट लेकर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भूपेन्द्र श्रीमाली से 228 वोट से जीत हासिल की। कोषाध्यक्ष पद पर कमल मेहता 1463 वोट लेकर सुरेन्द्र सिंह खंडूजा से 937 वोट से विजयी रहे। एक्जीक्यूटिव सदस्यों में सर्वाधिक अभिषेक कालरा को 1396 वोट मिले। कालरा के साथ ही कार्यकारिणी में गौरव सिंघवी, अमित कोठारी, कविता कुमावत, ध्रुवि नलवाया, जितेश वनवारिया व भानुप्रताप सिंह धाभाई चुने गए। कुल 3600 में से 1995 सदस्यों ने अपने मताधिकार प्रयोग किया।

## राठौड़ और भट्ट श्रम न्यायालय में नियुक्त

**उदयपुर।** श्रम न्यायालय एवं औद्योगिक न्यायाधिकरण में राज्य सरकार की ओर से पैरवी करने के लिए उदयपुर के दो अधिवक्ताओं को पैनल में लिया गया है। इनमें पोनम सिंह राठौड़ और इंद्रकुमार भट्ट उदयपुर के लिए नियुक्त किए गए हैं। ये अधिवक्ता एक वर्ष तक सरकार की ओर से विभिन्न मामलों की पैरवी करेंगे।

## सीडीई प्रोग्राम में जुटे 150 से अधिक प्रतिनिधि

**उदयपुर।** गीतांजलि डेंटल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट में डिपार्टमेंट ऑफ कंजरवेटिव डेंटिस्ट्री एंड एंडोडोंटिक्स द्वारा सीडीई प्रोग्राम डीन डॉ. निखिल वर्मा के निर्देश में किया गया। इस अवसर पर मुंबई के प्रसिद्ध एंडोडोंटिस्ट डॉ. अजीत शालिग्राम ने मैग्नीफिकेशन इन एंडोडोंटिक्स पर लेक्चर एवं डेमोंस्ट्रेशन दिया। उद्घाटन अंकित अग्रवाल, डॉ. एफएस मेहता, डॉ. दीपाली अग्रवाल आदि ने किया। कार्यक्रम में राजस्थान के विभिन्न कॉलेजों से 150 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

## सिंथेटिक ट्रैक का शिलान्यास

**उदयपुर।** उदयपुर संभाग का पहला सिंथेटिक एथलेटिक्स ट्रैक अगले 6 माह में बनकर तैयार हो जाएगा। खास बात यह है कि इस ट्रैक के निर्माण के लिए रबड़ के ग्रेनोज-बाइंडर और पेंट यूरोप से मंगवाए जाएंगे। ट्रैक पर सिंथेटिक शीट की पैकिंग के लिए भी बाहर से टीम बुलाई जाएगी। ट्रैक पर एक साथ 8 खिलाड़ी दौड़ सकेंगे। इस पर स्टेट, नेशनल स्तर के मुकाबले होंगे। ट्रैक का निर्माण होने से उदयपुर संभाग के 500 से 800 एथलीटों को सीधा फायदा होगा। यह बात आरसीए अध्यक्ष वैभव गहलोत ने महाराणा प्रताप खेलगांव में ट्रैक का शिलान्यास करते हुए कही। इस अवसर पर राज्यमंत्री जगदीशराज श्रीमाली, पंकज शर्मा, लालसिंह झाला, संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट, कलेक्टर ताराचंद मीणा, जिला खेल अधिकारी शकील हुसेन, ललित सिंह झाला, यूडीसीए सचिव महेंद्र शर्मा, आदि मौजूद थे।

## चेतना को राष्ट्र शक्ति सम्मान

**उदयपुर।** उदयपुर अपराध एवं अनुसंधान प्रकोष्ठ की डीएसपी चेतना भाटी को दिल्ली में संपर्क क्रांति परिवार ने राष्ट्रीय शक्ति शिखर सम्मेलन में राष्ट्र शक्ति शिरोमणि सम्मान दिया। संपर्क क्रांति के राष्ट्रीय अध्यक्ष विनायक शर्मा ने बताया कि महिला सशक्तिकरण में उल्लेखनीय कार्य के लिए यह सम्मान दिया गया।

## 38 वां स्थापना दिवस मनाया

**उदयपुर।** एम.के.जैन क्लासेज प्रा.लि. हिरणमगरी ने अपना स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर संस्था के प्रबंध निदेशक डॉ. एम.के.जैन ने 38 वर्षों के सफर का ब्यौरा दिया। समारोह की अध्यक्षता भंवरलाल मेनारिया ने की। अप्रेल के पूरे माह स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अलग-अलग कार्यक्रम सम्पन्न हुए। मेधावी विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप भी प्रदान की गई।

## अग्रवाल अध्यक्ष, बंसल सचिव

**उदयपुर।** अग्रवाल वैष्णव समाज के चुनाव सीए पंकज नेवटिया की देखरेख में सम्पन्न हुए। उन्होंने बताया कि चुनाव में अध्यक्ष संजय अग्रवाल, सचिव दिनेश बंसल, कोषाध्यक्ष दीपक बंसल एवं कार्यकारिणी सदस्य देवेन्द्र मेड़तिया, ललित बंसल, राकेश बंसल, कृष्णकान्त अग्रवाल व राजकुमार अग्रवाल चुने गए।

## सीडलिंग स्कूल का सत्रारंभ

**उदयपुर।** सीडलिंग ग्रुप ऑफ स्कूल्स सापेटिया के नए सत्र 2023-24 का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर छात्रों का रोली-मोली के साथ स्वागत किया गया। चेयरमैन हरदीप बक्षी ने विद्यार्थियों के आगमन पर स्वागत व हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने आश्वस्त किया कि उच्च शिक्षा मुहैया कराने हेतु विद्यालय सदैव प्रयत्नशील रहेगा।

## कांग्रेस में मीडिया समन्वय

**उदयपुर।** कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे के निर्देश पर संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने प्रदेश कांग्रेस सोशल मीडिया विभाग का पुनर्गठन किया। सुमित भगासरा को प्रदेश चेयरमैन बनाया। उदयपुर के डॉ. संजीव राजपुरोहित, रंजना साहू, प्रतीक सिंह, विक्रम स्वामी और अनुपम शर्मा को प्रदेश समन्वयक नियुक्त किया गया है।

## सांखला अध्यक्ष, श्रीमाली सचिव

**उदयपुर।** श्री कॉम्प्लेक्स कॉलोनी विद्याभवन रोड की कार्यकारिणी की घोषणा की गई। चुन्नीलाल सांखला अध्यक्ष, विजयसिंह सांखला वरिष्ठ उपाध्यक्ष, नारायण व्यास, सम्पत सिंह राव उपाध्यक्ष, ओमप्रकाश श्रीमाली सचिव, दीनदयाल मंत्री संयुक्त सचिव, शैलेष लोढ़ा सांस्कृतिक सचिव, हीरालाल मादरेचा कोषाध्यक्ष, कविता सांखला महिला सचिव, वेलिका जैन संयुक्त सचिव को मनोनीत किया।

## डॉ. महला छात्र कल्याण अधिकारी

**उदयपुर।** महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय एवं अध्यक्ष कीट विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ मनोज कुमार महला को कल्याण अधिकारी का पदभार सौंपा गया है। उन्होंने डॉ लोकेश गुप्ता से पदभार ग्रहण किया।

## साहू राष्ट्रीय संयुक्त सचिव बने

**उदयपुर।** अखिल भारतीय तैलिक साहू महासभा नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष व महाराष्ट्र के पूर्व कैबिनेट मंत्री जयदत्त क्षीरसागर ने उदयपुर के सुखलाल साहू को दूसरी बार राष्ट्रीय कार्यकारिणी में संयुक्त सचिव बनाया। उन्हें राजस्थान, गुजरात, दमन, दीव का प्रभारी बनाया गया है।

## माधवानी को गौरव सम्मान

**उदयपुर।** अखिल भारतीय नववर्ष समारोह समिति और भारत विकास परिषद मेवाड़ के समारोह में समाजसेवी मुकेश माधवानी को विक्रमादित्य गौरव सम्मान से नवाजा गया। सम्मान राष्ट्रीय सचिव डॉ. प्रदीप कुमावत ने दिया।

## गिरधारी शर्मा अध्यक्ष नियुक्त

**उदयपुर।** राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा की अनुशंसा पर विधि, मानवाधिकार व आरटीआई विभाग के प्रदेशाध्यक्ष कुलदीपसिंह पूनिया ने उदयपुर शहर के अधिवक्ता गिरधारी लाल शर्मा को विधि, मानवाधिकार व आरटीआई विभाग उदयपुर का अध्यक्ष नियुक्त किया है।

# संवेदना/श्रद्धांजलि

**उदयपुर।** श्रीमती मधुबाला जी मेहता का 17 मार्च को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पति श्री नरेन्द्रसिंह जी मेहता, पुत्र अंकित मेहता, पुत्री श्रीमती फैनी हरकावत, भाई-भतीजों, पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

**उदयपुर।** एडवोकेट डॉ. आर.एल. जैन सा. राजनगर वाला का 25 मार्च को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी, पुत्र सुनील एवं जयप्रकाश, पुत्री श्रीमती आशा करणपुरिया, पौत्र, पौत्रियों, दोहित्र सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर।** श्री संतोषकुमार जी शर्मा का 29 मार्च को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे दरीबा माइंस से सेवानिवृत्त थे। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती सुदेश रानी, पुत्र गौरव व सौरभ, पौत्र-पौत्रियों व भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर।** श्री करणसिंह जी पारख (जैन) का 17 मार्च को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती इंदु, पुत्र आशीष व मोनिल, पौत्र-पौत्रियों व भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गए है।

**उदयपुर।** प्रमुख उद्यमी श्री सोहनलाल जी चौहान का 25 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपनी पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती शांतादेवी जी, पुत्र अशोक, विशाल व प्रफुल्ल मेहता, पुत्री श्रीमती सुनीता छाजेड़, भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर।** प्रमुख होटल व्यवसायी श्री परशुराम जी सूयल की धर्मपत्नी श्रीमती जसोदा देवी का 23 मार्च को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल पति, पुत्र हेमेन्द्र, गजेन्द्र व राजेन्द्र, पुत्री श्रीमती किरण बाकलिया व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

**उदयपुर।** प्रो. विष्णुदत्त जी भट्टमेवाड़ा का 15 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रिका पुत्र चिन्मय, निमेष, मृण्मय, यश व चारिल, पुत्रियां मीनू व धृति, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोत्रियों व भाई-भतीजों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर।** आलोक संस्थान के संस्थापक-आचार्य स्व. श्यामजी कुमावत की धर्मपत्नी श्रीमती रूक्मणी देवी जी का 12 अप्रेल को देहावसान हो गया। समाजसेवी धर्मपरायण रूक्मणी जी 84 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र डॉ. प्रदीप कुमावत, मनोज, पुत्रियां श्रीमती उषा अजमेरा, श्रीमती पुष्पा टांक व श्रीमती दुर्गा कुमावत सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

**उदयपुर।** ठाकुर मानसिंह जी राठौड़ ठिकाना पाटिया का 11 अप्रेल को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र छत्रपाल सिंह (मानगढ़, रिसोर्ट, उदयपुर) सहित दो पुत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों सहित वृहद व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर।** श्रीमती पुष्पा जी माथुर धर्मपत्नी श्रीमती किशोरीलाल जी का 29 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पति, पुत्र डॉ. विपिन माथुर (प्राचार्य आरएनटी मेडिकल कॉलेज) व डॉ. संजय माथुर सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों का संपन्न परिवार छोड़ गई हैं। आरएनटी मेडिकल कॉलेज में चिकित्सकों ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. माथुर परिवार के गहरी संवेदना व्यक्त की।

# Advaiya

## BUSINESS APPLICATIONS AND ANALYTICS SOLUTIONS

Executing purposeful digital initiatives is the key to digital transformation. Powered by a tailored set of relevant technologies and tools, our solutions allow business to enhance their decision-making skills, deliver superior customer experience, increase business productivity, and initiate technology-led innovation

## Advaiya Solutions, Inc.

14575 NE Bel Red Rd,
Ste 201, Bellevue WA 98007, USA
Phone : +1-425-256-3123

## Advaiya Solutions Pvt. Ltd.

G14-17, IT Park,
MIA Extension Udaipur, India 313002
Udaipur : 313001 India
Phone : +91 294 305 1100

GOLCHA ASSOCIATED

EGCIPL

## एन्वायरोग्रीन कंसलटेंट (इण्डिया) प्रा.लि.

(Accredited with QCI-NABET & QCI-NABL)

**हमारी सेवाएं**

- जियोलॉजी एवं हाइड्रो जियोलॉजिकल (भू जल विज्ञान)
- हॉर्टिकल्चर ( वानिकी ) • खनन एवं सर्वे,
- खनिजों का रासायनिक विश्लेषण,
- खदानों में जोखिम आकलन (Risk Assessment) संबंधित सेवाएं

1-बी, माछला मगरा, पटेल सर्किल के पास, गोलछा पॉलिक्लिनिक, उदयपुर-313002 मो. 9352239829, 8003590552

www.egcipl.com email : info@egcipl.com

## एसोसिएटेड डेल्टावेज लोजिस्टिक्स प्रा.लि.

**हमारी सेवाएं**

- रोड फ्रेट • पाउडर हेतु बलकर • वेयरहाउसिंग
- बल्क मटेरियल हैण्डलिंग कॉन्ट्रेक्ट

24-आकाशवाणी मार्ग, मादड़ी, उदयपुर

मो. 9352239832, 9353339830

# Rajasthan State Mines and Minerals Limited, Udaipur, India

(A Premier PSU of Government of Rajasthan)

CIN U14109RJ1949SGC000505 GSTIN 08AAACR7857H1Z0

- India's only producer of SMS grade Limestone and also the largest producer of natural Gypsum and Rock Phosphate.
- Mining Operations: Rock Phosphate (Udaipur), Lignite (Nagaur & Barmer), Limestone (Jaisalmer) and Gypsum in western Rajasthan.
- Green Energy: 106.3 MW Wind Power Project at Jaisalmer & 5 MW Solar Power Plant near Gajner in Bikaner district.
- First PSU in India to earn foreign exchange by trading Carbon Credit in international market.
- RSPCL, a subsidiary of RSMML has been formed for development of Oil & Petroleum sector in Rajasthan.
- RSGL, a JV company with GAIL (India) Ltd. has been formed for developing City Gas Distribution network in Rajasthan.

CORPORATE OFFICE

4, Meera Marg, Udaipur - 313 004, Tel. : +91-294-2428763-67, Fax : +91-294-2428770, 2428739, e-mail: info.rsmml@rajasthan.gov.in

REGISTERED OFFICE

C-89/90, Janpath, Lal Kothi Scheme, Jaipur - 302 015, Tel. : 0141-2743734, Fax : 0141-2743735

Visit us at www. rsmm. com

UCWL UDAIPUR CEMENT WORKS LIMITED

PLATINUM SUPREMO CEMENT | PLATINUM HEAVY DUTY CEMENT

# घर बनाएं प्लैटिनम स्ट्रॉन्ग

मज़बूत निर्माण को चाहिए चैम्पियन की ताकत। निर्माण कार्यों की स्ट्रेंथ बढ़ाने के लिए, उदयपुर सीमेंट वर्क्स लिमिटेड पेश करते हैं प्लैटिनम हैवी ड्यूटी सीमेंट और प्लैटिनम सुप्रीमो सीमेंट। जो बने हैं आधुनिक तकनीक से और एक चैम्पियन की तरह हैवी ड्यूटी निर्माण करके, हर घर को बनाते हैं ज़बरदस्त स्ट्रॉन्ग।

हेल्पलाइन न.: 1800 102 2407 www.udaipurcement.com facebook.com/platinumhdcement instagram.com/platinumhdcement

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 21 अंक 1, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर ( राज. ) 313 001